घटती घटना

सत्य के साथ...जनहित में बात...

www.ghatatighatana.com अम्बिकापुर,वर्ष 22, अंक - 304- रविवार 06- सितम्बर 2026,पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये RNI Reg.No.- CHHHIN/2004/15050,डाक पंजीयन. क्रं. 13/Surguja DN/ 2026-2028

एसआरसीसी के 100 साल पूरे...पीएम मोदी की 13 साल बाद श्रीराम कॉलेज में स्पीच

मैंने लाल किले से होम्योपैथी की गोली दी,सारे दिमागी नक्सल बौखलाने लगे : पीएम मोदी

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। प्रधानमंत्री शनिवार शाम मेट्रो से सफर कर श्रीराम कॉलेज ऑफ कॉमर्स पहुंचे। उन्होंने कॉलेज के 100वें स्थापना दिवस पर जेन-जी छात्रों के बीच 48 मिनट स्पीच दी। पीएम मोदी ने कहा कि आपकी लैंग्वेज में कहूं तो इस कॉलेज के पूर्व छात्र ओरिजनल गैंग्स्टर हैं। वे धुरंधर भले न हों, पर दुनियाभर में धूम तो मचाई है। मोदी ने यहां अपनी लाल किले पर दी गई 15 अगस्त की स्पीच का जिक्र भी किया। वे बोले- मैंने उस दिन 'दिमागी नक्सल' कहकर होम्योपैथी की ऐसी गोली दी, जिससे सारे विरोधी बौखलाने लगे। पीएम ने 2013 की श्रीराम कॉलेज की उस यात्रा को याद किया, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे। वे बोले कि तब मैंने कहा था कि आलोचकों को गिलास आधा खाली ही दिखता है।

संबोधन के आखिर में बोले...हवाओं से टकराए वो जज्बा हमारा हो...

संबोधन के आखिर में पीएम बोले...नाव हमारी हो नाविक भी हमारा हो। लहरों पर विजय लिखे वो हौसला हमारा हो। उड़ान हमारी हो, हवाओं से टकराए वो जज्बा हमारा हो। सपना हमारा हो,संकल्प हमारा हो। आत्मनिर्भर भारत का संकल्प हमारा हो। विकसित भारत की राह में उठता हर कदम हमारा हो। संबोधन के दौरान मोदी ने कहा- आज हमारा नौजवान साथी कहता है कि स्टार्टअप बनाऊंगा। यूनिकॉर्न खड़ा करूंगा। स्पेस से जुड़ा स्टार्टअप करूंगा। 2013 से पहले आपके सीनियर ऐसे सपने नहीं देखते थे। लेकिन आज समय बदल गया है। आप संकल्प लीजिए कि दुनिया के ग्लोबल फर्म्स हमारे क्यों नहीं हो सकते हैं। हम गर्व से कहते हैं कि भारतीय दुनिया की टॉप कंपनियों को लीड कर रहे हैं तो वो कंपनियां भारतीय क्यों नहीं हैं। पीएम ने कहा- 'मुझे देश पर भरोसा है। देश के युवाओं पर भरोसा है। मुझे विश्वास है हम 140 करोड़ भारतीय मिलकर विकसित भारत को संभव बनाएंगे। आने वाले समय में रिसर्च और इनोवेशन का हब भारत होगा। भारत का अपना स्पेस स्टेशन होगा और वो दिन भी आप देखेंगे। आप देखिएगा भारत एक दिन ऐसे ओलंपिक का आयोजन करेगा कि दुनिया देखेगी।' मोदी ने कहा- 'साथियों अभी आपकी जिंदगी स्क्रष्टष्ट मोड पर चल रही है। इसमें कोल्ड कॉफी पर होने वाली चर्चा, एग्जाम के लास्ट टाइम होने वाली मेहनत और बिजनेस कॉन्क्लेव पर की मेहनत शामिल है। लेकिन इस कैंपस के बाहर आपको एक अलग दुनिया मिलेगी।'

मोदी बोले- मैंने होम्योपैथी की गोली दी, दिमागी नक्सल बाहर आने लगे

बीते दशक में करीब 40 देशों के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट हुए हैं। जब नए बाजार खुलते हैं तो भारत के युवाओं के लिए नए अवसर पैदा होते हैं। आज 2013 के मुकाबले देश आर्थिक और सामाजिक रूप से कहीं ज्यादा सुरक्षित है। पर कुछ लोगों में बौखलाहट शुरू हो गई है। मैंने ऐसे लोगों के लिए लाल किले से 15 अगस्त को होम्योपैथी की गोली दी थी। तब मैंने एक शब्द कहा था- दिमागी नक्सल। होम्योपैथी का इलाज बीमारी को कुछ समय के लिए और उभार देता है। जैसे ही मैंने ये गोली दी, सारे दिमागी नक्सल बाहर आने लगे। पर जनता उनका असली रंग देख रही है।

मोदी बोले- देश में कुछ लोग नाराज फूफा जैसे

प्रधानमंत्री ने विपक्ष और विरोधियों पर निशाना साधते हुए कहा- 'देश में अलग-अलग प्रजाति के लोग हैं। एक वो जो पॉजिटिव तरीके से समाज की शक्ति को राष्ट्र की शक्ति में बदलते हैं। और दूसरे जो हर चीज में नाराज फूफा बन जाते हैं। उनका एक ही डायलॉग है- इसकी क्या जरूरत है। जब हम दुनिया का सबसे बड़ा स्टैच्यू बना रहे थे, उन्होंने कहा इसकी जरूरत ही क्या है। इन्होंने बुलेट ट्रेन, यूपीआई, चिप और नई संसद पर भी ऐसा ही कहा। हमने देश के लिए मरने वाले सेना नायकों का मेमोरियल बनाया तो फूफा फिर मैदान में आ गए। लेकिन भारत ने ऐसे फूफाओं को जवाब दिया।'

पीएम बोले...मैं छोटे-आसान लक्ष्य रखने वाला आदमी नहीं...

प्रधानमंत्री बोले...मैंने कहा था कि मेड इन इंडिया पर काम करने की जरूरत है,तो उस वक्त के लोगों ने इसका विरोध किया। लोगों, आज आप मेड इन इंडिया की ताकत देख रहे हैं। दुनिया के बड़े स्मार्टफोन भारत में बनते हैं। आज भारत 2.5 लाख करोड़ से ज्यादा के मोबाइल एक्सपोर्ट करता है।

2014 से बदली तस्वीर,आज लोग फिनटेक के दौर में जी रहे...

मोदी ने कहा- 2014 में सरकार बनने के बाद हमने ये करके दिखाया। मैं आपको एक उदाहरण देता हूं। हाल ही में जनधन योजना को 12 साल पूरे हुए। आज आप फिनटेक के अलग ही दौर में जी रहे हैं। लेकिन 2014 से पहले गांव और छोटे शहरों के बच्चों को सेविंग अकाउंट खुलवाने के लिए स्ट्रगल करना पड़ता था। इसलिए हम जनधन स्कीम लेकर आए। और पिछले 12 साल में इससे 60 करोड़ नए अकाउंट खुले।

देश के 48 टीचर्स को नेशनल अवॉर्ड

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बल पर ही संभव होगा विकसित भारत का निर्माण : राष्ट्रपति मुर्मू

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शनिवार को कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के बल पर ही विकसित भारत के निर्माण का लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि संविधान में निहित अवसरों की समानता के आदर्शों को कार्यरूप देने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि देश में एक भी विद्यार्थी अच्छी शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे। शिक्षक दिवस के मौके पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने शनिवार को दिल्ली के विज्ञान भवन में देशभर के 48 स्कूल शिक्षकों को नेशनल टीचर अवॉर्ड से सम्मानित किया। इनमें केंद्रीय विद्यालय,नवोदय विद्यालय,सैनिक स्कूल,आदर्श जनजातीय स्कूल और पीएम श्री स्कूलों के शिक्षक शामिल हैं। इन शिक्षकों ने पढ़ाई को आसान और दिलचस्प बनाने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए। महाराष्ट्र के वैभव वसंतराव कुलकर्णी ने गणित के मुश्किल टॉपिक समझाने के लिए 700 से ज्यादा वीडियो बनाए। वहीं राजस्थान के दिव्येंदु सेन ने 500 पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाकर बच्चों को पेड़ों की जानकारी देने का नया तरीका अपनाया। इसके अलावा पंजाब के दिनेश कुमार ने वर्चुअल फिजिक्स लैब और 100 से ज्यादा कम खर्च वाले मॉडल तैयार किए। 48 स्कूल शिक्षकों के अलावा उच्च शिक्षा संस्थानों और पॉलिटेक्निक के 21 शिक्षक व फैकल्टी सदस्य और कौशल विकास मंत्रालय के 13 कौशल प्रशिक्षकों को भी नेशनल टीचर अवॉर्ड मिला है।

शिक्षकों की अलग-अलग पहल ने दिलाया सम्मान

- **मंजरी महाजन,हिमाचल प्रदेश :** स्कूल में बच्चों की पढ़ाई के साथ पर्यावरण बचाने पर काम किया। कचरा अलग करना,प्लास्टिक जमा करना और कैंपस को प्लास्टिक से मुक्त रखने की व्यवस्था की।
- **दिव्येंदु सेन,राजस्थान :** बच्चों को अंतरिक्ष से जुड़ी पढ़ाई कराई और उनके साथ 12 नए क्षुद्र ग्रह खोजे। स्कूल के 500 पेड़ों पर क्यूआर कोड लगाकर उनके बारे में जानकारी दी।
- **डॉ. वर्तिका गुलाटी,राजस्थान :** बच्चों को ऑनलाइन पढ़ाने के लिए गूगल मीट और गूगल फॉर्म का इस्तेमाल किया। कोविड के दौरान ऑनलाइन कक्षाएं लेकर बच्चों की पढ़ाई जारी रखी।
- **दिनेश कुमार,पंजाब :** वर्चुअल फिजिक्स लैब बनाई और 100 से ज्यादा कम खर्च वाले मॉडल तैयार किए। इससे बच्चों को फिजिक्स आसानी से समझने में मदद मिली और उनका डर कम हुआ।
- **रवि जयसवाल,चंडीगढ़ :** स्कूल में 3डी गुंबद थिएटर और मौसम केंद्र बनाया। बच्चों को अंतरिक्ष और मौसम के बारे में सीधे प्रयोग और अनुभव के जरिए समझाया।
- **वैभव वसंतराव कुलकर्णी,महाराष्ट्र :** गणित को आसान तरीके से पढ़ाने के लिए नए तरीके और कम खर्च वाले मॉडल बनाए। छात्रों की मदद के लिए 700 से ज्यादा वीडियो भी तैयार किए।
- **शालिनी कुशवाहा,यूपी :** बच्चों को पढ़ाने के लिए खेल और अलग-अलग गतिविधियों का इस्तेमाल करती हैं। उनकी पहल के कारण स्कूल में बच्चों का एडमिशन बढ़ा है।

पुंछ अटैक में शामिल पाकिस्तानी आतंकी ढेर

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। जम्मू-कश्मीर के बडगाम में मार गिराए गए आतंकी की शनिवार को पहचान हो गई। जम्मू-कश्मीर पुलिस के मुताबिक, यह पाकिस्तानी आतंकी यासिर उर्फ अबु तल्हा है और आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा से जुड़ा था। यासिर 2024 में पुंछ में एयरफोर्स के काफिले पर फायरिंग में शामिल था। इस हमले में एक जवान शहीद हो गया था। इस आतंकी की तस्वीर पहली बार पहलगाम हमले के दौरान सामने आई थी। उस समय मिली एक फोटो में चार आतंकी थे। इनमें से दो को पहलगाम हमले के बाद सुरक्षा बलों ने मार गिराया था। तीसरे यासिर का अब एनकाउंटर हुआ। चौथा हाशिम मूसा फरार है। सूत्रों के मुताबिक,यासिर का नाम पहलगाम आतंकी हमले की जांच से भी जुड़ा था। सुरक्षा बलों ने गुरुवार को यासिर को बडगाम के अशदार जंगलों में मार गिराया। इस इलाके में सेना का ऑपरेशन अभी भी जारी है। सुरक्षा एजेंसियों को यासिर की कई सालों से तलाश थी। जम्मू-कश्मीर पुलिस ने कहा आतंकी की फोटो पोस्ट कर लिखा- तुम भाग सकते हो,छिप नहीं सकते। एजेंसियों के मुताबिक, यासिर उर्फ अबु तल्हा जम्मू-कश्मीर में कई बड़े आतंकी हमलों से जुड़े नेटवर्क का हिस्सा रहा है।

मीडिया सेक्टर में विश्वसनीयता का संकट,ये सबसे बड़ी समस्या : गडकरी

नागपुर,05 सितम्बर 2026। मीडिया के सामने विश्वसनीयता का संकट सबसे बड़ी समस्या है। आज सबसे बड़ी जरूरत है कि मीडिया अपनी विश्वसनीयता फिर से कायम करे। गडकरी शनिवार को आईआईएम नागपुर मीडिया कॉन्क्लेव 2026 में 'मीडिया, नेतृत्व और नई विश्व व्यवस्था' विषय पर बोल रहे थे। उन्होंने लोकतंत्र की प्रगति के लिए स्वतंत्र-निष्पक्ष न्यायपालिका के साथ स्वतंत्र-निष्पक्ष मीडिया को जरूरी बताया। केंद्रीय मंत्री ने पत्रकारों को लोगों, समाज और देश के हित में लिखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पत्रकारों को गुणात्मक बदलाव के साथ आम लोगों तक पहुंचना चाहिए। गडकरी ने कहा कि अच्छे काम की तरह अच्छी पत्रकारिता को भी पहचान मिलती है। आने वाले समय में वही लोग टिकेंगे,जो अपनी विश्वसनीयता और पेशे के मूल मूल्यों की रक्षा करेंगे। उन्होंने मीडिया से लोकतंत्र को मजबूत करने, सामाजिक और राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने और ज्ञान में बदलाव लाने की दिशा में काम करने की अपील की। इससे भारत को 'विश्व गुरु' यानी दुनिया का नेता बनाने में भी मदद मिलेगी।

बच्चों के व्यवहार और रोजमर्रा की गतिविधियों पर भी नजर रखें शिक्षक : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शिक्षकों से विद्यार्थियों की पढ़ाई और शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ-साथ उनके व्यवहार, दिनचर्या और मानसिक स्थिति पर भी ध्यान देने का आह्वान किया है। उन्होंने बच्चों में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति और अत्यधिक स्क्रीन इस्तेमाल को लेकर शिक्षकों से सतर्क रहने की अपील की। प्रधानमंत्री लोक कल्याण मार्ग स्थित अपने आवास पर राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित शिक्षकों और शिक्षाविदों के साथ संवाद कर रहे थे। शिक्षक दिवस से एक दिन पहले आयोजित इस कार्यक्रम में इस वर्ष के 82 पुरस्कार विजेताओं ने हिस्सा लिया। इनमें 48 स्कूली शिक्षक, 21 उच्च शिक्षण संस्थानों और पॉलिटेक्निक के शिक्षक तथा 13 कौशल प्रशिक्षक शामिल रहे। प्रधानमंत्री ने कहा कि शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पाठ्यक्रम पूरा कराने तक सीमित नहीं है।

कांग्रेस ने किया बड़ा फेरबदल....पंजाब से बघेल की जगह सचिन पायलट को प्रभारी बनाया गया,कई नेताओं की जिम्मेदारी बदली

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। कांग्रेस ने शनिवार को संगठन में बड़ा फेरबदल करते हुए सचिन पायलट को चुनावी राज्य पंजाब का महासचिव प्रभारी नियुक्त किया। उन्होंने भूपेश बघेल की जगह ली है। बघेल को इसी पद पर असम का प्रभारी बनाया गया है। पार्टी ने रणदीप सिंह सुरजेवाला को गुजरात का महासचिव प्रभारी नियुक्त किया है। हालांकि,वह कर्नाटक के प्रभारी भी बने रहेंगे। कर्नाटक में हाल ही में सत्ता का सुचारू हस्तांतरण हुआ है। पंजाब में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं, जबकि गुजरात में विधानसभा चुनाव अगले साल बाद में होंगे। कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने एक बयान में कहा कि कांग्रेस अध्यक्ष ने तत्काल प्रभाव से अलग-अलग राज्यों के लिए पार्टी पदाधिकारियों को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) महासचिव और प्रभारी के तौर पर फिर से जिम्मेदारियां सौंपी हैं और नियुक्तियां की हैं।

नए प्रभारियों और महासचिवों की सूची

- **भूपेश बघेल :** महासचिव/प्रभारी, असम
- **रणदीप सिंह सुरजेवाला :** महासचिव/प्रभारी,गुजरात (इसके साथ ही कर्नाटक की अतिरिक्त जिम्मेदारी)
- **सचिन पायलटः** महासचिव/प्रभारी,पंजाब
- **सुखदेव भगतः** प्रभारी,छत्तीसगढ़
- **डॉ. श्रीवेल्ला प्रसादः** प्रभारी,महाराष्ट्र
- **पीवी मोहनः** प्रभारी,आंध्र प्रदेश

पदमुक्त हुए नेता

कांग्रेस पार्टी ने संगठन से विदा हो रहे निवर्तमान महासचिवों/प्रभारियों के योगदान की सराहना की है। संगठन में फेरबदल के चलते जितेंद्र सिंह, रमेश चेन्निथला और मणिकम टैगोर को पद से हटाया गया। वहीं, मुकुल वासनिक कांग्रेस के महासचिव के रूप में अपनी सेवाएं जारी रखेंगे।

दिल्ली मीटिंग में चन्नी गुट ने बघेल को हटाने की मांग रखी थी...

3 सितंबर को दिल्ली में कांग्रेस के प्रभारी भूपेश बघेल, राजा वड़िंग, प्रताप सिंह बाजवा समेत अन्य नेताओं की बैठक राहुल गांधी की टीम से मीटिंग हुई थी। सूत्रों के अनुसार, इस मीटिंग में पंजाब में चल रही गुटबाजी पर चर्चा हुई। जिसके बाद टीम ने राहुल गांधी को गुटबाजी की रिपोर्ट दी। भूपेश बघेल को लेकर चन्नी खेमा लगातार विरोध कर रहा था और पंजाब में रैलियों के दौरान भूपेश बघेल गो बैक के नारे लगाए गए। चन्नी खेमे ने भूपेश बघेल को बदलने की मांग रखी थी।

पायलट को नया प्रभारी क्यों बनाया...

अंदरूनी कलह और गुटबाजी को खत्म करना : पंजाब कांग्रेस लंबे समय से भीतरी गुटबाजी और नेताओं के बीच आपसी मतभेदों से जूझ रही है। कांग्रेस आलाकमान का मानना है कि सचिन पायलट एक ऐसे संकटमोचक नेता हैं,जो संगठन को एकजुट कर सकते हैं। राजस्थान में खुद राजनीतिक संकट और गुटबाजी का लंबा अनुभव होने के कारण वे पंजाब के नेताओं के बीच तालमेल बिठाने के लिए सबसे मुफीद चेहरा माने गए हैं।

4 चुनावी राज्यों में 1 दिसंबर से जनगणना : यूपी, उत्तराखंड,गोवा और पंजाब में 30 नवंबर तक खुद अपनी जानकारी दर्ज करा सकेंगे लोग

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। जनगणना 2027 के तहत गोवा,उत्तर प्रदेश,पंजाब और उत्तराखंड के बर्फीले इलाकों को छोड़कर बाकी हिस्सों में आबादी की गिनती 1 दिसंबर 2026 से 4 जनवरी 2027 तक होगी। रजिस्ट्रार जनरल ऑफ इंडिया ने शनिवार को इसकी जानकारी दी। इन राज्यों में नागरिक 16 नवंबर से 30 नवंबर 2026 तक खुद अपनी जानकारी दर्ज करा सकेंगे। इसे सेल्फ-एन्यूमरेशन कहा गया है। जनगणना की प्रक्रिया के बाद 5 से 9 जनवरी 2027 तक सुधार का दौर चलेगा। इन राज्यों में अगले साल की शुरुआत में विधानसभा चुनाव होने हैं। जनगणना पहले 2021 में होने वाली थी। इसे कोरोना महामारी के कारण टाल दिया गया था।

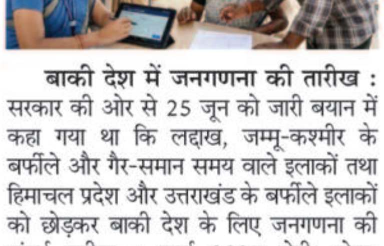

बाकी देश में जनगणना की तारीख : सरकार की ओर से 25 जून को जारी बयान में कहा गया था कि लद्दाख, जम्मू-कश्मीर के बर्फीले और गैर-समान समय वाले इलाकों तथा हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड के बर्फीले इलाकों को छोड़कर बाकी देश के लिए जनगणना की संदर्भ तारीख 1 मार्च 2027 होगी। गोवा, मणिपुर,पंजाब,उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड की विधानसभाओं का कार्यकाल मई 2027 तक खत्म हो जाएगा।

देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी : जनगणना 2027 देश की पहली डिजिटल जनगणना होगी। डेटा डिजिटल माध्यम से दर्ज किया जाएगा और लोगों को खुद अपनी जानकारी देने यानी सेल्फ-एन्यूमरेशन का विकल्प भी मिलेगा। केंद्र के मुताबिक, लोगों की दी गई व्यक्तिगत जानकारी पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी। सेंसस एक्ट की धारा 15 के तहत इसे सार्वजनिक नहीं किया जा सकता, आरटीआई के तहत नहीं दिया जा सकता और किसी कोर्ट में सबूत के तौर पर भी इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।

मजदूरों को खुदाई में मिले सोने के 14 प्राचीन सिक्के,मटका सिक्कों से भरा था

बेलगावी,05 सितम्बर 2026। कर्नाटक के बेलगावी जिले के सौंदत्ती तालुक के इंचल गांव में मजदूरों को खुदाई के दौरान सोने के सिक्कों से भरा मटका मिला है। मजदूरों ने ईमानदारी की मिसाल पेश करते हुए सभी सिक्के प्रशासन को सौंप दिए, जिसके बाद तालुक प्रशासन ने उनकी खूब सराहना की। यह घटना इंचल गांव में बीसीएम हॉस्टल के पास काम के दौरान हुई। वीबी जीरामजी योजना के तहत काम कर रहे दिहाड़ी

मजदूरों को काम करते समय जमीन में एक मिट्टी का बर्तन मिला। जब बर्तन को खोला गया तो उसमें 14 सोने के सिक्के निकले। सिक्कों का वजन 54.8 ग्राम है और इनकी कीमत करीब 8.27 लाख रुपए आंकी गई है। मजदूरों ने सिक्के अपने पास रखने के बजाय ईमानदारी दिखाते हुए अधिकारियों को सौंप दिया। सभी सिक्के पंचायत विकास अधिकारी (पीडीओ) और तालुक पंचायत स्टाफ की मौजूदगी में सौंदत्ती तहसीलदार को सौंपे गए। सौंदत्ती के तहसीलदार मल्लिकार्जुन हेग्गनवर ने सभी सिक्कों को सरकारी खजाने में जमा करा दिया। मजदूरों को मिले 14 सिक्कों पर हाथी की तस्वीर बनी हुई है।

सहारनपुर कलेक्ट्रेट मस्जिद पर चला बुलडोजर...भारी पुलिस फोर्स के बीच हुआ ध्वस्तीकरण

सहारनपुर,05 सितम्बर 2026। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर कलेक्ट्रेट परिसर में शनिवार सुबह मस्जिद के एक हिस्से को प्रशासन ने बुलडोजर से ध्वस्त कर दिया। प्रशासन के अनुसार,यह हिस्सा सरकारी जमीन पर बना हुआ था। इससे पहले शुक्रवार देर रात मस्जिद को सील कर दिया गया था। सुबह ध्वस्तीकरण की कार्रवाई शुरू होते ही कलेक्ट्रेट परिसर और आसपास के इलाके में सुरक्षा व्यवस्था बेहद कड़ी कर दी गई। सभी प्रवेश मार्ग बंद कर दिए गए और बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई। मस्जिद पर हुई कार्रवाई सिटी मजिस्ट्रेट के आदेश और उसके खिलाफ मुस्लिम पक्ष की ओर से दाखिल याचिका से जुड़े मामले में जिला अदालत के फैसले के बाद हुई। गुरुवार को जिला जज सतेंद्र कुमार की अदालत ने मुस्लिम पक्ष की याचिका खारिज कर दी। अदालत ने सिटी मजिस्ट्रेट कोर्ट के 16 जुलाई 2026 के आदेश को बरकरार रखते हुए विवादित जमीन को सरकारी भूमि माना था। प्रशासनिक अधिकारियों ने शुक्रवार देर रात कलेक्ट्रेट परिसर स्थित मस्जिद को सील कर दिया था। इसके अगले दिन सुबह बुलडोजर मौके पर पहुंचा और उस हिस्से को गिराने की प्रक्रिया शुरू हुई, जिसे प्रशासन सरकारी जमीन पर निर्मित मान रहा है। कार्रवाई के दौरान कलेक्ट्रेट के सभी एंट्री पॉइंट बंद कर दिए गए।

संपादकीय

स्कूली कक्षाओं को चाहिए योग्य शिक्षक

इ कुछ महीने पहले मुझे ऐसे युवाओं के साथ समय बिताने का अवसर मिला, जो दो वर्षों से देश के अलग-अलग भागों में कम संसाधनों वाले स्कूलों में शिक्षक की भूमिका निभा रहे हैं। ये युवा इंजीनियरिंग,अर्थशास्त्र,वकालत,पत्रकारिता और साहित्य के ग्रेजुएट्स हैं और इनमें से किसी का भी लक्ष्य शिक्षक बनना नहीं था। उनका बस एक उद्देश्य था-स्कूल में पढ़ाकर उस भारत से परिचित होना,जो उनके अनुभवों से अलग है। इन ग्रेजुएट्स को साफ दिखाई दे रहा था कि समाज और देश को किन बातों पर ध्यान देने की आवश्यकता है और कहां बदलाव लाना जरूरी है। आखिर इन युवाओं में ऐसा क्या अलग था? मेरा निष्कर्ष है कि पढ़ाना ही नेतृत्व करना है। स्कूल में पढ़ाने का मतलब है अपना सर्वश्रेष्ठ देना।

शिक्षक की जिम्मेदारी सिर्फ छात्रों की पढ़ाई तक ही सीमित नहीं रहती। वे उन्हें समय की पाबंदी,सहानुभूति और ईमानदारी जैसे मूल्य सिखाते हैं। वे सुनिश्चित करते हैं कि विद्यार्थी नियम से स्कूल आएं, क्लास की गतिविधियों में हिस्सा लें और विश्वास रखें कि उनके भीतर भी क्षमता है। विद्यार्थी जितना शिक्षकों के शब्दों से सीखते हैं,उतना ही उनके आचरण से। जब शिक्षक विद्यार्थियों को एकाग्रता के साथ बेहतर करने और अच्छा भविष्य रचने की सीख देते हैं, तो उसका प्रभाव आगे चलकर समाज और देश पर पड़ता है। जब शिक्षक किसी ऐसे स्कूल में पढ़ाते हैं,जहां संसाधनों की कमी हो तब ये बातें और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती हैं,क्योंकि यही वह जगह है,जहां भारत की चुनौतियां अपने सबसे स्पष्ट रूप में दिखाई देती हैं।

किसी कम आय वाले इलाके की आठवीं कक्षा की कल्पना कीजिए। शिक्षक को पहले ही हफ्ते पता चल जाता है कि कई बच्चों का पढ़ने का स्तर दूसरी कक्षा का है। स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित,कुपोषण,आर्थिक तंगी से परेशान ये बच्चे क्या ध्यान लगाकर पढ़ पाएंगे? जात-पात, लिंग भेद, पंथ-संप्रदाय,सभी का असर इस पर पड़ता है कि कौन कक्षा में बोलेगा, कौन घर से काम करके ला पाएगा और कौन भविष्य के सपने देखने का साहस करेगा। सेकेंडरी स्कूल तक पहुंचते-पहुंचते बच्चों के सामने मोबाइल स्क्रीन और डिजिटल मीडिया की दुनिया खुल जाती है,जहां अक्सर बड़ों से उन्हें पर्याप्त मार्गदर्शन नहीं मिल पाता। बच्चों के विकास के इन महत्वपूर्ण दिनों में एक शिक्षक की जिम्मेदारी केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं रह जाती,बल्कि और अधिक जटिल और बहुआयामी बन जाती है।

कल्पना कीजिए कि एक युवा शिक्षक पूरी तैयारी के साथ कक्षा में पहुंचता है। उसे चंद ही मिनटों में पता चल जाता है कि कई विद्यार्थी पाठ्यक्रम की किताब तक ठीक से पढ़ नहीं पा रहे हैं। तब वह किताब को परे रखकर,परिस्थिति के अनुसार अपना तरीका बदलता है। वह पढ़ाने के सरल तरीके ढूंढ़ता है,कहानियां सुनाता है और उन कहानियों को रोजमर्रा के जीवन से जोड़ता है। पढ़ाने के तरीके में इस तरह के बदलाव करना एक आम बात है। ऐसे अनुभव इस विश्वास को जन्म देते हैं कि गहरी चुनौतियों के बावजूद भारत में अभूतपूर्व सामाजिक सुधार और विकास की संभावना है। जब शिक्षक देखते हैं कि जिस बच्चे से जून में कोई उम्मीद नहीं थी, वह अक्टूबर आते-आते पूरा पाठ सस्वर पढ़ रहा है, तब वे यह बात दिमाग से निकाल देते हैं कि देश कभी बदल नहीं सकता।

शिक्षक देख लेते हैं कि जो संभव है,वह साकार भी हो सकता है। नगर निगम स्कूल में दूसरी कक्षा के बच्चों को पढ़ा रहे एक स्नातक ने दो ही वर्षों में विद्यार्थियों में तीन सालों की शैक्षणिक प्रगति दिखाई,स्कूल व्यवस्था को बदला और अपने प्रयास को सफल बनाने के लिए कारपोरेट साझेदारी से समर्थन जुटाया। आज वह एक विश्वस्तरीय कंसल्टिंग फर्म में लीडर हैं। टीच फार इंडिया,भूमि, गांधी फेलोशिप और एजुकेट गर्ल्स जैसी पहलों ने ऐसे युवा स्नातकों का समूह तैयार किया,जो देश की जमीनी सच्चाइयों से परिचित हैं। ये स्नातक अब टेक्नोलाजी,कंसल्टिंग और सामाजिक उद्यम के क्षेत्रों में संस्था निर्माता, विचारक एवं उद्यमियों के रूप में काम कर रहे हैं। देश में स्नातकों की संख्या में वृद्धि हो रही है। इनमें से कई ऐसे हैं, जो देश के लिए कुछ करने के लिए तत्पर हैं। सवाल यह है कि क्या उन्हें देश की जमीनी सच्चाई की समझ है? जिस तरह कई देशों में युवाओं की फौज में भर्ती अनिवार्य है, उसी तरह शायद भारत में हर युवा को शिक्षण में अनिवार्य भर्ती शुरू करनी चाहिए। जिसकी इच्छा पढ़ाने की न हो,वह किसी और रूप में स्कूल में योगदान दे। नौकरीपेशा लोग भी किसी विद्यालय को हर हफ्ते अपने कुछ घंटे दें। इससे आत्मविश्वास के साथ देश की समस्याओं को सुलझाने वाला युवा वर्ग तैयार होगा। भारत ही एक ऐसा देश है, जहां इतनी विविधता,इतने सारे काबिल लोग और इतने जरूरतमंद स्कूली बच्चों का संयोजन है। समस्याओं के उपाय खोजने के लिए हमें किसी और देश की ओर देखने की आवश्यकता नहीं है। स्थिति,सामर्थ्य और आशा,सब हमारे पास हैं। हमें अपनी स्कूली कक्षाओं में और काबिल लोग चाहिए। केवल विद्यार्थी के रूप में नहीं,बल्कि शिक्षक के रूप में भी,ताकि वे भारत को जान सकें और समय आने पर उसका नेतृत्व कर सकें।

अदालत

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

कस्बे की पुरानी सत्र अदालत की तीसरी सीढ़ी पर जकड़ी वह लोहे की हथकड़ी न्याय व्यवस्था के उस जंग लगे चरित्र का प्रतीक थी जो केवल गरीब की कलाई और पत्थर के खंभों का साथ निभाना जानती है। सालों से लगा वह ताला दरअसल कानून की वह चुप्पी थी जिसकी चाबी फाइलों के किसी ऐसे ढेर में दफन हो गई थी जहाँ दीमक भी रिश्वत खाकर ही कागज कुतरती थी। सुबह के दस बजते ही कचहरी में मुकदमों की तारीखों का ऐसा मेला सजता जैसे कोई आध्यात्मिक कुंभ हो जहाँ पुण्य नहीं बल्कि पाप का सौदा होता है और मुंशी अपने बस्तों पर फाइलों का ढेर ऐसे सजाते मानो वे न्याय की अर्थी के सजावटी सामान हों। काली कोट वाले वकीलों की जिरह का शोर गूँजता तो लगता कि तर्क और कुतर्क के बीच सत्य कहीं कोने में दुबक कर अपनी जान बचा रहा है। उसी भीड़ के बीच सफेद खद्दर का झोला टांगे और पुरानी चमड़े की चप्पल पहने विश्वनाथ काका ठीक दस बजे आकर उसी तीसरी सीढ़ी पर ऐसे जम जाते जैसे वे खुद किसी निष्प्राण धारा की जीवंत व्याख्या हों। काका का पूरा दिन उस हथकड़ी को सहलाने में बीतता जो शायद जेलर के दिल से ज्यादा कोमल हो चुकी थी और वे हर पुलिस वाले की वर्दी को ऐसे ताकते जैसे वर्दी के भीतर का इंसान खोजने की नाकाम कोशिश कर रहे हों। जब भी कोई नया सिपाही किसी कैदी को पेशी पर लाता तो काका बड़ी उम्मीद से अपनी लाठी सीधी करते और पूछते कि क्या आज उस बड़े थाने से कोई नया फरमान आया है या आज भी इस हथकड़ी का कोई खरीदार नहीं मिला। सिपाही अपनी टोपी ठीक करता और एक ऐसी कड़वी मुस्कान देता जो केवल उन लोगों के पास होती है जिन्होंने सिस्टम की गटर में अपनी संवेदनाएं विसर्जित कर दी हों। वह काका को पागल समझकर आगे बढ़ जाता क्योंकि इस देश में जो सच के लिए ठहरा हुआ है उसे विक्षिप्त घोषित करना ही सबसे सुरक्षित कानूनी प्रक्रिया है। अदालत में हाल ही में आए युवा मजिस्ट्रेट आलोक वर्मा इतने सख्त और न्यायप्रिय थे कि उन्हें देखकर लगता था कि शायद वे अभी न्याय के उस कारखाने से नए-नए निकले हैं जहाँ आदर्शों की पॉलिश अभी उतरी नहीं है। आलोक साहब जब अपनी कार से उतरते तो उनकी नजर काका पर टिक जाती जिन्हें देखकर उन्हें लगता कि यह बुजुर्ग शायद किसी पुरानी फाइल का वह फुटनोट है जिसे पढ़ना हर कोई भूल गया है। उन्हें यह बात बहुत अजीब लगती कि एक इंसान लोहे के इस बेकार टुकड़े को किसी शिवलिंग की तरह क्यों पूज रहा है क्योंकि वे भूल गए थे कि इस देश में जब इंसान पत्थर हो जाता है तो वह पत्थर को ही भगवान मान लेता है। एक दिन जब अदालत की भीड़ छंट गई और केवल वे लोग बचे जिनका सब कुछ लुट चुका था तब आलोक साहब खुद काका के पास पहुँचे। उन्होंने बहुत ही गंभीर आवाज में पूछा कि बाबा आप रोज यहाँ रास्ता क्यों रोकते हैं क्योंकि कानून की नजर में रास्ता रोकना अपराध है चाहे वह रास्ता कहीं न पहुँचता हो। उन्होंने सलाह दी कि अगर कोई जमीन का बैनामा या मुकदमा है तो विधिवत अर्जी दीजिए क्योंकि न्याय प्रक्रिया में कागज का वजन आत्मा की आवाज से ज्यादा होता है।

कानून कठोर लेकिन बेटियां अब भी असुरक्षित क्यों?

कागजों में नहीं,सड़कों पर दिखनी चाहिए बेटियों की सुरक्षा

योगेश कुमार गोयल
नजफगढ़,नई दिल्ली

दिल्ली-एनसीआर में एक स्लीपर बस के भीतर 16 वर्षीय छात्रा के साथ कथित सामूहिक दुष्कर्म की घटना हमारी सुरक्षा-व्यवस्था,सार्वजनिक परिवहन की निगरानी,पुलिसिंग और सामाजिक चेतना, चारों की एक साथ विफलता का आईना है। 4 अगस्त की रात ग्रेटर नोएडा के परी चौक से एक नाबालिग छात्रा को कथित तौर पर गलत जानकारी देकर स्लीपर बस में बैठाया गया और कश्मीरी गेट तक चालक तथा परिचालक पर उसके साथ यौन हिंसा करने का आरोप है। लगभग 47 किलोमीटर के इस सफर के बाद उसे कश्मीरी गेट के निकट रिंग रोड पर छोड़ दिया गया। इस घटना की सबसे भयावह बात केवल अपराध की क्रूरता नहीं बल्कि वह पूरा सुरक्षा-शून्य है,जिसमें यह अपराध संभव हुआ। एक नाबालिग लड़की रात में एक अनजान बस में बैठती है,बस लंबी दूरी तय करती है, उसके भीतर अपराध होता है और रास्ते में किसी स्तर पर ऐसी प्रभावी निगरानी नहीं हो पाती,जो इस अपराध को रोक सके। रिपोर्टों के अनुसार बस में पर्दे लगे थे और सीसीटीवी की उपलब्धता को लेकर भी गंभीर सवाल सामने आए हैं। यदि सार्वजनिक परिवहन के किसी वाहन का अंदरूनी हिस्सा इस तरह बाहरी निगरानी से लगभग कट जाए कि उसमें बैठे यात्रियों की सुरक्षा ही संदिग्ध हो जाए तो ऐसे वाहनों को से कों पर चलने की अनुमति देने वाली व्यवस्था से जवाब मांगना स्वाभाविक है।

यहां एक और असहज सवाल है कि घटना 4 अगस्त की बताई जा रही है लेकिन पुलिस ने इसकी जानकारी 31 अगस्त को सार्वजनिक की। इतने लंबे अंतराल में क्या हुआ? क्या जांच की गोपनीयता इसका कारण थी? क्या पीिं ता की निजता और सुरक्षा के कारण

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

जानकारी सीमित रखी गई? या फिर किसी प्रशासनिक स्तर पर सूचना प्रबंधन में चूक हुई? इन प्रश्नों का स्पष्ट और विश्वसनीय उत्तर सार्वजनिक होना चाहिए क्योंकि अपराध की गंभीरता के साथ-साथ पुलिस की जवाबदेही भी लोकतांत्रिक व्यवस्था का अनिवार्य हिस्सा है। यह जरूर उल्लेखनीय है कि शिकायत मिलने के बाद कश्मीरी गेट पुलिस ने कार्रवाई की,सीसीटीवी के जरिए बस की पहचान की और आरोपित चालक-परिचालक को गिरफ्तार किया, बस भी बरामद कर ली गई यानी अपराध के बाद पुलिस की जांच क्षमता पर सवाल उठाने से पहले यह भी स्वीकार करना होगा कि अपराधियों तक पहुंचने में तकनीकी निगरानी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लेकिन असली कसौटी गिरफ्तारी के बाद शुरू होती है। पुलिस का काम केवल अपराध होने के बाद अपराधी पके ना नहीं है, आधुनिक पुलिसिंग का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य अपराध होने से पहले उसे रोकना है। यदि सीसीटीवी अपराध के बाद बस का पता लगा सकता है तो सवाल यह है कि वही तकनीक संदिग्ध गतिविधि को पहले क्यों नहीं पकड़ सकी?

निर्भया कांड के बाद देश ने यही माना था कि अब व्यवस्था बदलेगी। दिसंबर 2012 में 23 वर्षीय युवती के साथ चलती बस में हुई बर्बरता ने पूरे देश को आंदोलित किया। कानून कठोर हुए,यौन अपराधों की कानूनी परिभाषाएं विस्तृत हुई,नाबालिगों के खिलाफ यौन अपराधों के लिए अलग कानूनी ढांचा मजबूत हुआ और सार्वजनिक परिवहन में सुरक्षा के सवाल को राष्ट्रीय बहस का हिस्सा बनाया गया। निर्भया मामले के चार दोषियों को 2020 में फांसी दी गई लेकिन 13 वर्ष बाद यदि एक नाबालिग ले की फिर चलती बस में ऐसी ही दरिंदगी का शिकार होती है तो यह सवाल पूछना जरूरी है कि हमने कानून तो बदल दिए लेकिन व्यवस्था कितनी बदली? कानून की कठोरता जरूरी है लेकिन कानून का डर केवल सजा की कठोरता से पैदा नहीं होता। अपराधी के मन में सबसे बड़ा भय पकड़े जाने की निश्चितता का होता है। यदि उसे लगता है कि वह रात के अंधेरे में,सुनसान रास्ते पर, निगरानी से बाहर किसी वाहन में अपराध कर सकता है और उसे रोकने वाला कोई नहीं होगा तो कानून की किताब में लिखी कठोरतम सजा भी तत्काल निवारक शक्ति नहीं बन पाती। इसलिए चुनौती केवल कठोर कानून की नहीं,निश्चित निगरानी, त्वरित गिरफ्तारी और समयबद्ध न्याय की है।

दिल्ली और नोएडा पुलिस के बीच घटना को लेकर सामने आए कथित विरोधाभास भी चिंता बे ाते हैं। दिल्ली-एनसीआर आज एक ऐसा महानगरीय क्षेत्र है,जहां शहरों की सीमाएं आम नागरिक के लिए लगभग अदृश्य हैं लेकिन अपराध होने पर वही सीमाएं पुलिस के अधिकार क्षेत्र का प्रश्न बन जाती हैं। यदि कोई ले की नोएडा में बस में चे ती है, दिल्ली की ओर आती है और दिल्ली में उतारी जाती है तो पुलिस की विभिन्न इकाइयों के बीच वास्तविक समय में समन्वय क्यों नहीं हो सकता? इस घटना का एक और पहलू सार्वजनिक परिवहन की जवाबदेही से जुड़ा है। स्लीपर बसों में पर्दों का इस्तेमाल, वाहन के भीतर निगरानी,यात्रियों की पहचान, ड्राइवर-परिचालक का सत्यापन, निर्धारित मार्ग से विचलन,रात में अकेले या नाबालिग यात्रियों की सुरक्षा,इन सभी बिंदुओं पर नियम होने भर से काम नहीं चलेगा। नियमों का वास्तविक अनुपालन सुनिश्चित करना होगा। परिवहन विभाग, पुलिस और बस संचालकों की संयुक्त जवाबदेही तय करनी होगी। ऐसी बसों का नियमित सुरक्षा ऑडिट हो,सीसीटीवी और आपातकालीन अलर्ट प्रणाली अनिवार्य रूप से काम करे,चालक-परिचालक का सत्यापन हो और उल्लंघन पर केवल जुर्माना नहीं,परमिट और संचालन अधिकार पर भी कठोर कार्रवाई हो।

हालांकि हम इस घटना को केवल पुलिस की विफलता कहकर अपनी सामाजिक जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो सकते। एक ओर 16 वर्ष की बच्ची रात में अकेले यात्रा करते हुए अपराधियों के निशाने पर आ जाती है और दूसरी ओर उम्रदराज महिलाएं अपने ही परिवारों द्वारा छोड़ दी जाती हैं। प्रश्न केवल कानून का नहीं है, प्रश्न उस सामाजिक मानस का है,जिसमें कमजोर व्यक्ति सबसे आसान लक्ष्य बन जाता है। जब परिवार में संवेदना कमजोर होती है,जब शक्ति को सम्मान और अपराधी प्रवृत्ति को प्रभाव समझा जाने लगता है,जब धन और बाहुबल सामाजिक प्रतिष्ठा का आधार बनने लगते हैं,तब कानून अकेला समाज को नहीं बचा सकता। हमारी सबसे बड़ी विडंबना यह है कि अपराध के बाद राजनीतिक बयानबाजी शुरू हो जाती है। विपक्ष सरकार को घेरता है, सत्ता पक्ष गिरफ्तारी को अपनी उपलब्धि बताता है और बहस कुछ दिनों बाद किसी दूसरे मुद्दे में दब जाती है लेकिन पीिं ता का भय,उसका भविष्य और उसके मन पर पे । आघात किसी राजनीतिक बयान से समाप्त नहीं होता। महिला सुरक्षा चुनावी नारा नहीं,शासन की बुनियादी कसौटी होनी चाहिए।

'महिलाएं रात में कितनी सुरक्षित हैं' जैसे सवालों का उत्तर विज्ञापनों या राजनीतिक दावों से नहीं दिया जा सकता। उत्तर सड़कों पर दिखना चाहिए, बसों में दिखना चाहिए,पुलिस की प्रतिक्रिया में दिखना चाहिए और उन व्यवस्थाओं में दिखना चाहिए,जो किसी अकेली लड़की को संकट में पड़ने से पहले सुरक्षा उपलब्ध कराएं। वर्तमान घटना से दिल्ली-एनसीआर के लिए कुछ स्पष्ट सबक निकलते हैं। रात में चलने वाली बसों की अनिवार्य निगरानी हो, सभी स्लीपर बसों में कार्यशील सीसीटीवी और आपातकालीन संचार प्रणाली हो। चालक-परिचालक के पुलिस सत्यापन और प्रशिक्षण को नियमित किया जाए,बस के निर्धारित मार्ग और ठहराव की डिजिटल निगरानी हो, नाबालिग या अकेली महिला यात्री के साथ संदिग्ध स्थिति में चालक दल को विशेष प्रोटोकॉल का पालन करना पड़े, नोएडा,गाजियाबाद और दिल्ली पुलिस के बीच साझा रियल-टाइम निगरानी तंत्र विकसित हो। सबसे महत्वपूर्ण, किसी भी महिला या बच्ची की शिकायत को 'क्षेत्राधिकार' के नाम पर एक थाने से दूसरे थाने तक न दौड़ाया जाए।

निर्भया के बाद हमने बहुत कुछ बदला लेकिन शायद उतना नहीं, जितना बदलना चाहिए था। कठोर कानून बनाना आसान है लेकिन कानून को जमीन पर उतारना कठिन। सीसीटीवी लगाना आसान है;उसे चौबीस घंटे सक्रिय रखना कठिन। पुलिस वाहन खड़े करना आसान है,वास्तविक गश्त सुनिश्चित करना कठिन। महिला सुरक्षा के दावे करना आसान है लेकिन ऐसी व्यवस्था बनाना कठिन, जिसमें कोई लड़की रात के अंधेरे में अकेली होने के बावजूद असुरक्षित महसूस न करे। इसलिए इस घटना को केवल एक और अपराध मानकर भूल जाना सबसे बड़ी भूल होगी। यह चेतावनी है कि अपराधी तभी बेखौफ होते हैं, जब व्यवस्था में कहीं न कहीं भय का अभाव पैदा हो जाता है। उन्हें कानून से नहीं,कानून के निश्चित और निष्पक्ष क्रियान्वयन से डरना होगा। समाज को भी यह तय करना होगा कि वह अपराध के बाद मोमबत्ती जलाने वाला समाज बनेगा या अपराध से पहले अपनी बेटियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने वाला समाज।

वर्तमान दौर की सबसे बड़ी महामारी : संस्कारहीन रिश्ते

रिश्तों को बड़े शब्द नहीं, छोटे संस्कार बचाते हैं

एक साथ रहते हुए भी कितने अकेले हो गए हम

कृति आर.के.जैन
बड़वानी,मध्यपदेश

वर्तमान समय की सबसे भयावह महामारी अस्पतालों में नहीं,घरों के भीतर पल रही है। इसका न कोई परीक्षण है, न तापमान,न कोई चिकित्सकीय रिपोर्ट। यह चुपचाप रिश्तों में उतरती है और उनकी धड़कनें धीमी कर देती है। इसका नाम है...संस्कारहीन रिश्ते। समाचारों की सुर्खियाँ हत्या, तलाक, पारिवारिक कलह और टूटते घर दिखाती हैं;पर उन घटनाओं के पीछे पसरा वह सन्नाटा नहीं दिखातीं, जहाँ कभी अपनापन साँस लेता था। असली त्रासदी तब होती है;जब अपने ही लोग एक-दूसरे के लिए अजनबी बन जाते हैं। संस्कार रिश्तों की रखवाली छोड़ दें तो मकान तो खड़े रहते हैं, कमरे भी भरे रहते हैं–बस घर भीतर से वीरान हो जाता है।

कभी रिश्ते मिट्टी जैसे थे–नरम, लचीले,एक-दूसरे में घुले हुए। संस्कार वह पानी थे,जो बिखरे कणों को जोड़कर परिवार गढ़ते थे। आज वही मिट्टी सूख रही है। अहंकार की एक चुभन, स्वार्थ की एक परत और सुविधा की एक आँधी रिश्तों में दरार डाल देती है। हमने संबंधों को भावनाओं से नहीं, फायदे से तौलना शुरू कर दिया है...सुविधा रही तो रिश्ता रहा, सुविधा गई तो अपनापन भी गया। अदालतों के पारिवारिक विवाद और रोज की सुर्खियाँ इसी बिखराव के कण हैं। सवाल यह नहीं कि रिश्ते क्यों टूट रहे हैं; सवाल यह है कि उन्हें बाँधने वाला संस्कारों का पानी हमारी हथेलियों से कब रिस गया।

आज परिवार एक छत के नीचे रहता है, पर एक-दूसरे के भीतर नहीं उतरता। खाने की मेज पर थालियाँ साथ होती हैं, मोबाइल भी–बस संवाद नहीं होता। बच्चे सवाल लेकर बड़ों तक पहुँचने के बजाय स्क्रीन पर उत्तर खोजते हैं और बुजुर्ग घर में रहकर भी बातचीत से बाहर हो जाते हैं। संस्कार अब व्यवहार में कम, किताबों,भाषणों और त्योहारों की तस्वीरों में अधिक दिखाई देते हैं। फिर किसी दिन खबर आती है–किसी वृद्ध की मृत्यु का पता कई दिनों बाद चला। सुर्खी कुछ पल ठहरती है, मगर उसके पीछे वर्षों का अकेलापन, दरवाजे पर टिकी आँखें और अपनों के स्पर्श को तरसते हाथ छूट जाते हैं। संस्कार जीवित होते तो बुजुर्ग खबर नहीं बनते–घर की सबसे सुरक्षित छाँव बने रहते।

प्रेम अब अपनापन कम,अपेक्षाओं का हिसाब अधिक बनता जा रहा है। इच्छा पूरी हुई तो मुस्कान,टूटी तो शिकायत; अपेक्षा टूटी तो रिश्ता भी डगमगा गया। कभी एक माफी वर्षों का साथ बचा लेती थी,आज एक संदेश,ब्लॉक या अनफॉलो वर्षों की निकटता मिटा देता है। मतभेद समस्या नहीं,संवाद का इम्तिहान हैं;दुख यह है कि हमने मतभेद के बाद बात करना छोड़ दिया। गलती मानना कमजोरी नहीं, रिश्ते की ताकत है;माफी माँगना हार नहीं, प्रेम का साहस। इसीलिए पहला तूफान आते ही रिश्ते की छत उड़ जाती है–उसे थामने वाली संस्कारों की कड़ियाँ पहले ही टूट चुकी होती हैं।

शहरों की चमक हमें उस आँगन से दूर ले गई,जहाँ कभी परिवार साथ बैठता था। दादा-दादी की कहानियाँ किस्से नहीं, धैर्य,क्षमा,त्याग और सम्मान की पाठशाला थीं। आज आँगन की जगह बालकनी, कहानियों की जगह रील्स और साथ की जगह अलग-अलग स्क्रीन हैं। बच्चे तेज भागना सीख रहे हैं,ठहरकर सुनना नहीं। माता-पिता सुविधाएँ जुटाने की दौड़ में बच्चों की आँखों की थकान और मन की चुप्पी पढ़ना भूल रहे हैं। फिर वही बच्चे बड़े होकर माता-पिता को वृद्धाश्रम छोड़ देते हैं और यह एक खबर बन जाती है। पर वृद्धाश्रम की राह उस दिन नहीं बनती–उसकी पहली ईंट बहुत पहले घर के भीतर रखी जा चुकी होती है।

इस महामारी का सबसे खतरनाक लक्षण है–उसका दिखाई न देना। न बुखार,न खाँसी,न कोई रिपोर्ट;फिर भी परिवार भीतर से बीमार हो जाता है। आवाजों से अपनापन घटता है, बातचीत औपचारिक होती है और एक ही छत के नीचे लोग अपने-अपने एकांत में सिमट जाते हैं। साथ रहते हुए भी अकेलापन बढ़ता जाता है। समाचार चैनल घटना दिखा सकते हैं,आँकड़े गिना सकते हैं, बहस कर सकते हैं;मगर उस संस्कार हीनता को नहीं पकड़ सकते,जो टूटते रिश्तों की जड़ में पलती है। शायद इसलिए हम सुर्खियों से आगे देखना नहीं चाहते–क्योंकि वहाँ किसी और की कहानी नहीं,हमारा अपना आईना खड़ा है। फिर भी इस बीमारी का इलाज संभव है, क्योंकि संस्कार कोई पुरानी चीज नहीं, बल्कि रोजमर्रा के छोटे-छोटे व्यवहार हैं। इलाज बाहर से नहीं,भीतर से शुरू होगा। बिना कारण मुस्कुरा देना, किसी की बात बीच में न काटकर सुन लेना,गलती पर माफी माँग लेना,बुजुर्ग के हाथ छूकर आशीर्वाद लेना,बच्चे के सवाल को महत्व देना और क्रोध के क्षण में कठोर शब्द रोक लेना...यही रिश्तों की असली वैक्सीन हैं। रिश्तों की सूखी मिट्टी को फिर से गीला करना होगा। संस्कारों को उपदेशों की दीवार से उतारकर व्यवहार की जमीन पर लाना होगा। घर में थोड़ा समय,थोड़ा धैर्य और थोड़ा अपनापन लौट आए,तो बहुत-से रिश्ते टूटने से पहले ही बच सकते हैं।

हिंदी कवितायें

प्रकृति का अनुपम आंचल

राजेन्द्र लाहिरी
पामगढ़
छत्तीसगढ़

प्रकृति का यह मोहक रूप,
लगता है सबसे अनूप,
पल-पल रंग बदलती काया,
कभी छांव है,कभी है धूप,
कल-कल करती नदियों की धार,
बहती जाती है हर पार,
बिना भेद के,बिना रुके ही,
देती सबको खुल के प्यार,
हरे-भरे ये सुंदर खेत,
नदियों के पावन ये रेत,
पर्वत शीश उठाए खड़े हैं,
जैसे देते पहरा नेक,
शीतल मंद हवा का चलना,
कलियों का धीरे से खिलना,
सुबह-सवेरे सूरज की लाली,
शाम को चंदा का मिलना,
पंछी गाते मीठे गान,
बढ़ाते इस उपवन की शान,
झरनों से झरता मधुर संगीत,
कर देता हर मन को हैरान,
इसकी गोद में जो भी आता,
अपने सारे दुःख भूल जाता,
यह निस्वार्थ भाव से सबको,
जीवन का सच्चा पाठ सिखाता,
आओ इनसे जुड़ो यार,
धरा का यह अनुपम श्रृंगार।

सरकारी अधिकारियों के लिए सोशल मीडिया आचार संहिता

डॉ. प्रियंका सौरभ
हिसार,हरियाणा

सोशल मीडिया के बढ़ते प्रभाव ने लोगों के संवाद करने,सूचना प्राप्त करने और खुद को दुनिया के सामने पेश करने के तरीके को बदल दिया है। जी हां,सरकारी अधिकारी भी इससे अछूते नहीं हैं। सोशल मीडिया,चाहे वह रील्स हों,छोटे वीडियो हों, व्यक्तिगत पोस्ट हों,कहानियां हों या विचार हों,सरकारी कर्मचारियों की दिनचर्या का अभिन्न अंग बन गया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म सरकार और नागरिकों के बीच बेहतर संचार की अपार संभावनाएं प्रदान करते हैं,लेकिन सरकारी अधिकारियों द्वारा इनका अत्यधिक उपयोग या दुरुपयोग प्रशासनिक अनुशासन, निष्पक्षता,जन विश्वास और सार्वजनिक गरिमा से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न खड़े करता है।

सरकारी अधिकारियों के लिए प्रस्तावित सोशल मीडिया आचार संहिता का मसौदा सही समय पर आया है। सवाल यह नहीं है कि क्या अधिकारियों को सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने की अनुमति दी जानी चाहिए? उन्हें अनुमति दी जानी चाहिए। सवाल यह है कि सार्वजनिक पदों पर आसीन लोगों को सोशल मीडिया का इस्तेमाल किस तरह करना चाहिए। सरकारी कर्मचारियों के बीच प्रचलित आचरण के नियम उस युग में लिखे गए थे जब सोशल मीडिया का अस्तित्व नहीं था। जाहिर है, इन नियमों को बनाने वालों ने इनकी कल्पना नहीं की होगी, क्योंकि वे ऐसे प्लेटफॉर्म के विकास की कल्पना नहीं कर सकते थे जो किसी एक व्यक्ति को पल भर में एक वीडियो प्रकाशित करने की अनुमति देता है, जिसे लाखों लोग देख सकते हैं और लाखों लोगों की राय का समर्थन प्राप्त कर सकते हैं।

ड्यूटी के दौरान सोशल मीडिया का उपयोग सबसे बड़ी चिंताओं में से एक है। लोक सेवकों का कार्य सार्वजनिक कार्यों पर काम करना,सार्वजनिक व्यवसायियों की सेवा करना,सार्वजनिक नीतियों को लागू करना और प्रशासनिक दक्षता का प्रबंधन करना है। यदि किसी कर्मचारी का कार्य समय मनोरंजन से संबंधित सामग्री देखने,बनाने या साझा करने में व्यतीत होता है,तो इससे उत्पादकता और अंततः सार्वजनिक सेवा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। सरकार को सोशल मीडिया को अपने कर्तव्यों के निर्वाह में बाधा नहीं बनने देना चाहिए।

यह मान लेना भी गलत होगा कि अधिकारियों की सोशल मीडिया पर की जाने वाली सभी गतिविधियाँ अवांछनीय हैं। सोशल मीडिया अब शासन का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। जिला प्रशासक,पुलिस अधिकारी,शिक्षक, स्वास्थ्य अधिकारी और अन्य सरकारी कर्मचारी जैसे सार्वजनिक अधिकारी सरकारी कार्यक्रमों, आपातकालीन सूचनाओं,जन जागरूकता पहलों और नागरिक सेवाओं के बारे में उपयोगकर्ताओं से जुड़ने के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग करते हैं। आपदाओं,महामारियों और अन्य आपात स्थितियों के समय प्रशासन और नागरिकों के बीच त्वरित और प्रत्यक्ष संचार में सोशल मीडिया सहायक हो सकता है। प्रस्तावित संहिता को जिम्मेदार आधिकारिक पत्राचार और वैध उपयोग और दुरुपयोग (जहां यह सार्वजनिक क्षेत्र की गरिमा या निष्पक्षता को कम नहीं करता है) के बीच संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।

व्यक्तिगत प्रचार भी एक चिंता का विषय है। सरकारी अधिकारी कभी-कभी ऐसी जानकारी प्रकाशित करते हैं जो सरकारी गतिविधियों,जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों,प्रशासनिक गतिविधियों या सरकारी कार्यक्रमों में उनकी भागीदारी को दर्शाती है। नागरिकों को सरकारी कार्यों के बारे में शिक्षित करने और सरकार के प्रतिनिधि के रूप में स्वयं का प्रचार करने के बीच का अंतर स्पष्ट है। लोक प्रशासन व्यक्तिगत ब्रांड बनाने की गतिविधि नहीं है। जब कोई अधिकारी अपनी छवि बनाने की ओर अग्रसर होता है,तो सार्वजनिक सेवा और आत्म-प्रचार के बीच का अंतर धुंधला होने लगता है। सरकारी अधिकारियों को सरकार और नागरिकों द्वारा प्रदत्त शक्ति प्राप्त होती है।

सूचना
समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।
सम्पादक

जन्माष्टमी पर रघुनाथ पैलेस में गूंजी कृष्ण भक्ति,श्री राम सेना ने जीती मटकी फोड़ प्रतियोगिता

सरगुजा राजपरिवार की पहल पर तीसरे वर्ष हुआ आयोजन..विश्रामनगर की टीम बनी विजेता,पुरस्कार राशि बढ़ाकर की गई 41 हजार रुपये

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव जन्माष्टमी के अवसर पर सरगुजा राजपरिवार की ओर से आयोजित होने वाली पारंपरिक मटकी फोड़ प्रतियोगिता इस वर्ष भी पूरे उत्साह,उमंग और भक्ति के वातावरण में संपन्न हुई। रघुनाथ पैलेस परिसर में आयोजित तीसरे वार्षिक आयोजन में बलरामपुर जिले के विश्रामनगर की श्री राम सेना ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मटकी फोड़ प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम किया। प्रतियोगिता को देखने के लिए बड़ी संख्या में लोग रघुनाथ पैलेस परिसर पहुंचे। मुख्य प्रतियोगिता के साथ महिलाओं,युवाओं और बच्चों के लिए आयोजित विभिन्न खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों ने आयोजन को और आकर्षक बना दिया। सरगुजा राजपरिवार के युवराज श्री आदित्येश्वर शरण सिंहदेव की पहल पर शुरू हुई यह प्रतियोगिता लगातार तीसरे वर्ष आयोजित की गई। तीन वर्षों में यह आयोजन शहर के प्रमुख जन्माष्टमी आयोजनों में अपनी अलग पहचान बनाने लगा है। आयोजन की पूरी जिम्मेदारी राधावल्लभ पैलेस परिसर मटकी फोड़ समिति द्वारा संभाली गई। समिति के सदस्यों ने इस वर्ष भी आयोजन को व्यापक स्वरूप देते हुए मुख्य मटकी फोड़ प्रतियोगिता के साथ अलग-अलग आयु वर्ग और वर्गों के लिए कई प्रतियोगिताएं आयोजित कीं।

पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव और युवराज रहे मौजूद...

जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सरगुजा राजपरिवार के मुखिया एवं पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव तथा राजपरिवार के युवराज आदित्येश्वर शरण सिंहदेव विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम में शामिल होने से पहले टीएस सिंहदेव ने पैलेस परिसर स्थित श्री राधावल्लभ मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद उन्होंने आयोजन में हिस्सा लिया और विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर उनका उत्साहवर्धन किया। इस दौरान पूरे पैलेस परिसर में भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति और जन्माष्टमी उत्सव का वातावरण नजर आया। आयोजन में शामिल लोगों ने प्रतियोगिता का आनंद लेने के साथ भगवान श्रीकृष्ण के प्रति अपनी आस्था भी व्यक्त की।

बदलते समय के साथ परंपरा को नया स्वरूप देने का प्रयास

कार्यक्रम के दौरान पूर्व उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने कहा कि जन्माष्टमी के अवसर पर आयोजित होने वाली यह प्रतियोगिता केवल मनोरंजन या खेल तक सीमित नहीं है,बल्कि इसके पीछे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा को नई पीढ़ी से जोड़ने का उद्देश्य भी है। उन्होंने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण के प्रति राजपरिवार की आस्था और भक्ति की परंपरा पुरानी है। बदलते समय के साथ इसी परंपरा को नए प्रतिमानों से जोड़ने और युवाओं तथा बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में इस आयोजन को और व्यापक स्वरूप देने का प्रयास किया जाएगा,ताकि अधिक से अधिक लोग इससे जुड़ सकें।

पांच टीमों के बीच हुआ मुकाबला : मटकी फोड़ प्रतियोगिता में इस वर्ष कुल पांच टीमों ने हिस्सा लिया। इनमें बलरामपुर जिले के विश्रामनगर की श्री राम सेना,ग्राम डिगमा की गणपति मटकी फोड़ समिति,अंबिकापुर की रितिक शर्मा की टीम,कनकपुर समिति तथा बलरामपुर मटकी फोड़ समिति शामिल थीं। प्रतियोगिता में सभी टीमों ने मटकी तक पहुंचने के लिए पूरी ताकत और रणनीति का प्रदर्शन किया। एक के बाद एक टीमों ने मानव पिरामिड बनाकर मटकी फोड़ने का प्रयास किया। मुकाबला आगे बढ़ने के साथ दर्शकों का उत्साह भी बढ़ता गया। अंततः विश्रामनगर,बलरामपुर की श्री राम सेना ने शानदार प्रदर्शन करते हुए मटकी फोड़कर प्रतियोगिता अपने नाम कर ली।

पिछले साल के मुकाबले पुरस्कार राशि हुई लगभग दोगुनी : आयोजन समिति ने इस वर्ष प्रतियोगिता को और आकर्षक बनाने के लिए विजेता टीम की पुरस्कार राशि में भी बढ़ोतरी की। इस बार विजेता टीम के लिए 41 हजार रुपये की इनामी राशि रखी गई थी। पिछले वर्ष विजेता को 21 हजार रुपये की राशि प्रदान की गई थी। पुरस्कार राशि बढ़ाए जाने से प्रतियोगिता में शामिल टीमों और युवाओं में भी खासा उत्साह देखने को मिला।

राजपरिवार की परंपरा से जुड़ रहा नया उत्सव : तीन वर्षों से लगातार आयोजित हो रही इस प्रतियोगिता ने जन्माष्टमी के पारंपरिक उत्सव को एक नए सार्वजनिक स्वरूप से जोड़ने का काम किया है। धार्मिक आस्था, खेल भावना और सामाजिक सहभागिता को एक साथ जोड़ने वाली इस पहल में हर आयु वर्ग के लोगों को शामिल करने का प्रयास किया जा रहा है। आयोजन समिति का प्रयास रहा कि जन्माष्टमी का उत्सव केवल मंदिरों तक सीमित न रहे,बल्कि बच्चों और युवाओं को भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं से जोड़ते हुए उन्हें खेल और सामूहिक सहभागिता का अवसर भी मिले।

बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक हुए शामिल : कार्यक्रम में कांग्रेस जिलाध्यक्ष बालकृष्ण पाठक,अजय अग्रवाल,जेपी श्रीवास्तव,शफी अहमद,द्वितेंद्र मिश्रा,विनय शर्मा,संजय विश्वकर्मा,हेमंत तिवारी सहित अनेक वरिष्ठ नागरिक और शहर के गणमान्य लोग मौजूद रहे। लोगों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं का आनंद लिया और विजेताओं का उत्साहवर्धन किया।

महिलाओं और बच्चों के लिए भी हुई प्रतियोगिताएं...

आयोजन को केवल मटकी फोड़ प्रतियोगिता तक सीमित नहीं रखा गया। महिलाओं, युवाओं और बच्चों को भी उत्सव से जोड़ने के लिए अलग-अलग प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। महिलाओं के लिए कुर्सी दौड़ और मटकी रेस आयोजित की गई। युवाओं के बीच रस्साकशी प्रतियोगिता आकर्षण का केंद्र रही। वहीं बच्चों के लिए फैंसी ड्रेस,कुर्सी दौड़ और बोरी दौड़ जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। बच्चों की फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में विभिन्न रूपों में सजे बच्चों ने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। कुर्सी और बोरी दौड़ में बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ हिस्सा लिया। महिलाओं और युवाओं की प्रतियोगिताओं में भी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की।

मुख्य प्रतियोगिता के साथ बढ़ती गई भीड़

मटकी फोड़ प्रतियोगिता और अन्य गतिविधियों के चलते रघुनाथ पैलेस परिसर में बड़ी संख्या में लोग जुटे। मुख्य प्रतियोगिता शुरू होने के साथ दर्शकों की संख्या लगातार बढ़ती गई। बच्चों और युवाओं के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं ने विशेष रूप से लोगों का ध्यान खींचा। आयोजन स्थल पर मौजूद लोगों ने मटकी फोड़ प्रतियोगिता के दौरान प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाया। विजेता टीम के मटकी फोड़ते ही परिसर तालियों और उत्साह के नारों से गूंज उठा।

आयोजन की सफलता में समिति और युवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका

कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति के सदस्यों और युवाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शुभम जायसवाल के साथ चंद्र प्रकाश सिंह,दिनेश शर्मा,आतिश शुक्ला, अमित तिवारी राजा,शिवांशु गुप्ता,तरण बाबरा, राहुल सोनी,अनिकेत गुप्ता,आशू मिश्रा,पियूष सोनी,मनीष साहू,अनुग्रह बघेल,शिफतैन रजा, साहिल,ऋषिकेश मिश्रा,अमित सिंह,आर्यमन, अभय,अभिजीत,अविनाश कुमार,आकाश गुप्ता सहित अन्य सदस्यों ने आयोजन की व्यवस्थाओं में सक्रिय योगदान दिया। इस तरह जन्माष्टमी के अवसर पर रघुनाथ पैलेस परिसर में आयोजित मटकी फोड़ प्रतियोगिता ने धार्मिक आस्था के साथ खेल,मनोरंजन और सामाजिक सहभागिता का ऐसा संगम प्रस्तुत किया,जिसमें बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक सभी की भागीदारी नजर आई। विश्रामनगर की श्री राम सेना की जीत के साथ तीसरे वर्ष का यह आयोजन भी यादगार बन गया।

एयर गन से फायर कर युवक को किया घायल,आरोपी गिरफ्तार

पुरानी रंजिश में वारदात का आरोप...गड़ासानुमा हथियार लेकर दौड़ाने का भी आरोप,एयर गन जब्त

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

नमनाकला स्थित खिस्त मिलन आश्रम के मैदान में पुरानी रंजिश को लेकर एक व्यक्ति द्वारा एयर गन से फायर कर युवक को घायल करने और बाद में गड़ासानुमा हथियार लेकर उसे दौड़ाने के मामले में कोतवाली पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से घटना में प्रयुक्त एयर गन भी जब्त की है। पुलिस के अनुसार, खटिकपारा नमनाकला निवासी आयुष सोनकर ने थाना कोतवाली में रिपोर्ट दर्ज कराई कि 4 सितंबर की दोपहर वह अपने साथी आजाद सोनकर और आदी सोनकर के साथ खिस्त मिलन आश्रम के मैदान में बैठकर बातचीत कर रहा था। इसी दौरान विनोद तिर्की एयर गन लेकर वहां पहुंचा और कथित तौर पर पुरानी रंजिश एवं गुस्से के चलते उसकी ओर फायर कर दिया। एयर गन से निकला छर्रा उसके गले के दाहिने हिस्से में लगा। आहत और उसके साथी वहां से भागने लगे तो आरोपी कथित तौर पर गड़ासानुमा हथियार लेकर उनके पीछे दौड़ा और गाली-गलौज करने लगा। घटना से घबराकर सभी मौके से भाग गए।

एयर गन का दस्तावेज नहीं कर सका पेश : प्रार्थी की रिपोर्ट पर कोतवाली पुलिस ने अपराध क्रमांक 612/26 दर्ज करते हुए धारा 109(1) बीएनएस एवं 25, 27 आर्म्स एक्ट के तहत मामला पंजीबद्ध कर जांच शुरू की। विवेचना के दौरान पुलिस टीम ने घटनास्थल का निरीक्षण किया तथा आहत, प्रार्थी और गवाहों के बयान दर्ज किए। जांच में आरोपी विनोद कुमार तिर्की (52), निवासी खिस्तमिलन आश्रम,रिंग रोड, अंबिकापुर के खिलाफ अपराध से संबंधित साक्ष्य मिलने पर उसे हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। पुलिस के मुताबिक पूछताछ में आरोपी ने घटना करना स्वीकार किया। घटना में प्रयुक्त एयर गन के वैध दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए उसे नोटिस दिया गया, लेकिन आरोपी ने अपने पास एयर गन से संबंधित दस्तावेज नहीं होना बताया। इसके बाद पुलिस ने एयर गन जब्त कर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। मामले में आगे की विवेचना जारी है।

अंबिकापुर में आई बैंक नहीं,इसलिए नेत्रदान के बाद कॉर्निया भेजने में होती है देरी

जागरूकता के बावजूद दानदाताओं की संख्या सीमित,सुरक्षित रखने से लेकर प्रत्यारोपण तक बिलासपुर पर निर्भरता

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

सरगुजा में नेत्रदान को लेकर जागरूकता बढ़ रही है, लेकिन अंबिकापुर में आई बैंक की सुविधा नहीं होने से नेत्रदान की पूरी प्रक्रिया अब भी बिलासपुर पर निर्भर है। नेत्रदान के बाद आंखों से निकाले गए आईबॉल को सुरक्षित रखने और समय पर संबंधित आई बैंक तक पहुंचाने की चुनौती बनी रहती है। इसका सीधा असर जरूरतमंद मरीजों को समय पर कॉर्निया उपलब्ध कराने की प्रक्रिया पर पड़ता है। इसी बीच अजीरमा निवासी स्व. कौनतये जायसवाल के निधन के बाद उनके पुत्र अजेय जायसवाल ने पिता की इच्छा का सम्मान करते हुए नेत्रदान कराया। बताया गया कि स्व. कौनतये जायसवाल ने वर्ष 1986 में नेत्रदान का संकल्प लिया था। निधन के बाद परिजनों की सहमति से 4 सितंबर को नेत्रदान की प्रक्रिया पूरी की गई। जिला नोडल अधिकारी अंधत्व एवं अल्पदृष्टि नियंत्रण कार्यक्रम तथा नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. रजत टोप्पो के मार्गदर्शन में चिकित्सकीय टीम ने आईबॉल सुरक्षित रूप से निकाला। नेत्रदान के बाद आईबॉल को सुरक्षित रखते हुए रात करीब 4 बजे सिम्स आई बैंक, बिलासपुर भेजा गया। आगामी एक-दो दिनों में दो कॉर्नियल प्रत्यारोपण की प्रक्रिया प्रस्तावित है। इससे कॉर्नियल बीमारी के कारण दृष्टिबाधित दो मरीजों को रोशनी मिलने की उम्मीद है। एक नेत्रदान से दो लोगों के जीवन में उजाला संभव है।

जागरूक लोग ही आगे आ रहे : सरगुजा में नेत्रदान पखवाड़े के दौरान लगातार जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। इसके बावजूद नेत्रदान करने वालों की संख्या अपेक्षाकृत कम है। इसकी एक बड़ी वजह लोगों में नेत्रदान को लेकर भ्रांतियां और पर्याप्त जागरूकता का अभाव भी माना जाता है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अनुसार,परिवार की सहमति और समय पर सूचना मिलने पर नेत्रदान की प्रक्रिया पूरी की जा सकती है।

आई बैंक होता तो स्थानीय स्तर पर मिलती सुविधा : अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज में आई बैंक की सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे में नेत्रदान के बाद आईबॉल को सुरक्षित रखते हुए बिलासपुर भेजना पड़ता है। दूरी के कारण समय प्रबंधन महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि अंबिकापुर में ही आई बैंक की सुविधा उपलब्ध हो,तो नेत्रदान के बाद कॉर्निया के संरक्षण,जांच और प्रत्यारोपण की प्रक्रिया को स्थानीय स्तर पर बेहतर तरीके से संचालित किया जा सकता है। डॉ. रजत टोप्पो ने कहा कि स्व. कौनतये जायसवाल का नेत्रदान और उनके पुत्र अजेय जायसवाल का निर्णय समाज के लिए प्रेरणादायक है। अब जरूरत केवल नेत्रदान के प्रति जागरूकता बढ़ाने की नहीं,बल्कि अंबिकापुर में आई बैंक जैसी आवश्यक सुविधा विकसित करने की भी है,ताकि दान की गई आंखों से अधिक से अधिक जरूरतमंदों को समय पर रोशनी मिल सके।

रक्षक बने साइबर शिक्षक,स्कूलों से शिक्षकों के घर तक पहुंची सरगुजा पुलिस

शिक्षक दिवस पर अनूठी पहल,2 हजार से अधिक विद्यार्थियों को साइबर ठगी से बचाव के बताए तरीके

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

छत्तीसगढ़ पुलिस के प्रदेशव्यापी 'साइबर जागृति अभियान' के तहत शिक्षक दिवस पर सरगुजा पुलिस ने जागरूकता की अनूठी पहल की। 'मैं हूं साइबर शिक्षक–साइबर शिक्षा से ही साइबर सुरक्षा' की थीम पर पुलिस टीमों ने जिले के विभिन्न स्कूलों में पहुंचकर विद्यार्थियों और शिक्षकों को साइबर अपराधों के प्रति जागरूक किया। अभियान के दौरान पुलिसकर्मी शिक्षकों के घरों तक भी पहुंचे और उन्हें साइबर सुरक्षा की जानकारी दी। डीआईजी एवं एसएसपी सरगुजा राजेश अग्रवाल के दिशा-निर्देशन और अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रितेश चौधरी के नेतृत्व में जिले के सभी थाना-चौकी क्षेत्रों में अभियान चलाया गया। पुलिस अधिकारियों ने कक्षाओं में पहुंचकर ब्लैक बोर्ड पर साइबर अपराधों के प्रकार और उनसे बचाव के तरीके लिखे तथा बच्चों को सरल भाषा में डिजिटल सुरक्षा के जरूरी पाठ पढ़ाए।

2 हजार से अधिक बच्चों तक पहुंची पुलिस : अभियान के तहत पुलिस टीमों ने करीब 2 हजार स्कूली विद्यार्थियों को सीधे तौर पर साइबर सुरक्षा की जानकारी दी। बच्चों को ऑनलाइन गेमिंग फ्रॉड, सोशल मीडिया पर फर्जी प्रोफाइल, फिशिंग लिंक, साइबर ग्रूमिंग, साइबर बुलिंग, ओटीपी और पासवर्ड से जुड़ी ठगी के बारे में बताया गया। पुलिस ने विद्यार्थियों को समझाया कि ऑनलाइन गेम खेलते समय अनजान लोगों से व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें। मुफ्त कॉइन, स्किन, हथियार अथवा अन्य गेमिंग आइटम के लालच में किसी संदिग्ध लिंक पर क्लिक या भुगतान न करें। सोशल मीडिया प्रोफाइल को निजी रखने और अनजान लोगों की फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार नहीं करने की भी सलाह दी गई।

अनजान लिंक से सावधान रहने की अपील : पुलिस टीमों ने बताया कि साइबर ठग व्हाट्सएप और एसएमएस के जरिए मुफ्त गिफ्ट, स्कॉलरशिप, कूपन या आकर्षक ऑफर का झांसा देकर फर्जी लिंक भेजते हैं। ऐसे लिंक पर क्लिक करने से व्यक्तिगत अथवा वित्तीय जानकारी चोरी होने का खतरा रहता है। विद्यार्थियों को किसी भी संदिग्ध लिंक या पॉप-अप पर बिना जांचे क्लिक नहीं करने की हिदायत दी गई। साइबर ग्रूमिंग और बुलिंग को लेकर बच्चों को विशेष रूप से सतर्क किया गया। पुलिस ने कहा कि ऑनलाइन कोई व्यक्ति परेशान करे,धमकाए या ब्लैकमेल करे तो डरकर चुप न रहें। तत्काल माता-पिता अथवा शिक्षक को इसकी जानकारी दें,संबंधित व्यक्ति को ब्लॉक करें और आवश्यक होने पर चैट अथवा मैसेज का स्क्रीनशॉट सुरक्षित रखें।

बच्चों से कहा...घर जाकर बनें साइबर शिक्षक : पुलिस ने विद्यार्थियों से अपील की कि वे स्वयं साइबर जागरूक बनने के साथ अपने माता-पिता और बुजुर्गों को भी डिजिटल ठगी से बचाव के तरीके बताएं। एक जागरूक बच्चा पूरे परिवार को साइबर अपराध से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। डीआईजी एवं एसएसपी राजेश अग्रवाल ने कहा कि डिजिटल युग में बच्चों और युवाओं को सुरक्षित रखना पुलिस की प्राथमिकता है। साइबर अपराधों से बचाव का सबसे प्रभावी तरीका जागरूकता है। यदि बच्चे स्कूल स्तर से ही डिजिटल सुरक्षा के प्रति सजग होंगे तो इसका लाभ पूरे समाज को मिलेगा।

ठगी होने पर तुरंत 1930 पर करें कॉल : पुलिस ने विद्यार्थियों और शिक्षकों को बताया कि ऑनलाइन वित्तीय ठगी होने पर घबराने के बजाय तुरंत 1930 पर कॉल करना चाहिए। इसके साथ ही नेशनल साइबर क्राइम पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराई जा सकती है।

शिक्षक दिवस पर विदा हुए शिक्षक एवं विद्वान शास्त्री चंद्रमा पाठक

70 वर्ष की उम्र में निधन,जिस दिन देश मना रहा था शिक्षक दिवस उसी दिन एक शिक्षक की अंतिम विदाई ने क्षेत्र को किया भावुक

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026
(घटती-घटना)।

शिक्षक दिवस पर जहां देशभर में शिक्षक एवं गुरुजनों के सम्मान में कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे थे, वहीं अम्बिकापुर में एक सेवानिवृत्त शिक्षक एवं विद्वान शास्त्री के निधन की खबर ने माहौल को गमगीन कर दिया। साक्षरता मार्ग,भट्ठी रोड, केदारपुर निवासी चंद्रमा पाठक (70) का शनिवार सुबह 11:30 बजे निधन हो गया। शिक्षक दिवस के दिन उनके निधन की खबर से परिवार,मोहल्ले और परिचितों में शोक की लहर दौड़ गई। चंद्रमा पाठक शिक्षा के क्षेत्र से लंबे समय तक जुड़े रहे और सेवानिवृत्त शिक्षक होने के साथ विद्वान शास्त्री के रूप में भी उनकी अपनी पहचान थी। शिक्षा,ज्ञान और संस्कार को उन्होंने अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया। सरल एवं सहज व्यक्तित्व, सौम्य व्यवहार और मिलनसार स्वभाव के कारण वे लोगों के बीच विशेष सम्मान रखते थे।

शिक्षक दिवस पर याद आया उनका शिक्षक जीवन : चंद्रमा पाठक का निधन ऐसे दिन हुआ,जब पूरा देश शिक्षक दिवस मना रहा था। संयोग से वे स्वयं भी शिक्षक रहे। यही वजह रही कि उनके निधन की खबर ने शिक्षक दिवस के अवसर को उनके परिचितों और विद्यार्थियों के लिए भावुक कर दिया। लोगों ने उन्हें याद करते हुए कहा कि जिस दिन समाज अपने शिक्षकों के योगदान को नमन कर रहा था,उसी दिन एक शिक्षक का संसार से विदा होना अपने आप में बेहद मार्मिक संयोग है। शिक्षण कार्य के साथ उनका सामाजिक सरोकारों से भी गहरा जुड़ाव रहा। वे सामाजिक गतिविधियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे और लोगों के सुख-दुःख में सहभागी बनते थे। अपने ज्ञान, व्यवहार और सामाजिक जुड़ाव के कारण उन्होंने क्षेत्र में सम्मान अर्जित किया।

कृष्ण मोहन और राजीव पाठक के पिता थे : चंद्रमा पाठक कृष्ण मोहन पाठक, अधिकारी सूरजपुर एवं राजीव पाठक,संचालक शगुन गार्डन, बैकुंठपुर के पिता थे। उनके निधन से परिवार में गहरा शोक है। बड़ी संख्या में रिश्तेदार, मोहल्लेवासी एवं नगरवासी अंतिम विदाई देने पहुंचे।

CMYK

शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता,वह स्वयं एक जीवंत किताब है : रेणुका सिंह

'विधायक गुरु सम्मान' में वनांचल के शिक्षकों को सलाम,मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी,बाइक और लैपटॉप देकर बढ़ाया हौसला

- गुरुओं के सम्मान में सोनहत ने रचा नया अध्याय विधायक गुरु सम्मान' में वनांचल के शिक्षकों को सलाम,मेधावी विद्यार्थियों को मिले स्कूटी, बाइक और लैपटॉप
- सेवानिवृत्त शिक्षक धर्मपाल राजवाड़े ने संभाली समारोह की अध्यक्षता
- वनांचल में शिक्षा की मशाल जलाने वाले गुरुजनों का सम्मान सोनहत में 'विधायक गुरु सम्मान',प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी मिला प्रोत्साहन
- गुरु को सलाम,प्रतिभाओं को सम्मान,वनांचल के शिक्षकों के समर्पण को नमन, मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी,बाइक और लैपटॉप

सोनहत में 'विधायक गुरु सम्मान' : शिक्षकों के समर्पण को सलाम, मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी, बाइक और लैपटॉप देकर किया सम्मानित

-संवाददाता-
सोनहत/कोरिया,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।
शिक्षक दिवस के अवसर पर सोनहत के सामुदायिक भवन में आयोजित 'विधायक गुरु सम्मान' समारोह शिक्षा,संस्कार और गुरु-शिष्य परंपरा के सम्मान का विशेष अवसर बन गया। समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षकों के साथ प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया, खास तौर पर कोटडोल,रामगढ़ और अन्य दूरस्थ वनांचल क्षेत्रों में कठिन भौगोलिक परिस्थितियों के बीच शिक्षा की अलख जगा रहे शिक्षकों के योगदान को मंच से सराहा गया, कार्यक्रम की अध्यक्षता किसी जनप्रतिनिधि ने नहीं, बल्कि वर्ष 2011 में सेवानिवृत्त वरिष्ठ शिक्षक धर्मपाल राजवाड़े ने की, विधायक रेणुका सिंह की इस पहल को गुरु के प्रति सम्मान और भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा की गरिमा से जोड़कर देखा गया।

शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता- समारोह को संबोधित करते हुए विधायक रेणुका सिंह ने कहा कि शिक्षक केवल विद्यार्थियों को पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं,बल्कि कई पीढ़ियों का भविष्य गढ़ने वाला मार्गदर्शक होता है,उन्होंने कहा, शिक्षक कभी रिटायर नहीं होता,वह स्वयं एक जीवंत किताब है,जिसके पास ज्ञान का असीमित भंडार होता है,उन्होंने कहा कि सरकारी सेवा से सेवानिवृत्ति हो सकती है,लेकिन शिक्षक का ज्ञान, अनुभव और समाज के प्रति योगदान कभी समाप्त नहीं होता,शिक्षक बच्चों को सिर्फ विषय का ज्ञान नहीं देता,बल्कि संस्कार, अनुशासन और जीवन में सही दिशा चुनने की क्षमता भी देता है,विधायक ने कहा कि समाज में डॉक्टर,इंजीनियर,अधिकारी,जनप्रतिनिधि और जिम्मेदार नागरिक के रूप में जो लोग आगे बढ़ते हैं,उनकी सफलता के पीछे किसी न किसी शिक्षक का मार्गदर्शन अवश्य होता है।

70 प्रतिशत वनांचल,फिर भी शिक्षा की लौ कायम-रेणुका सिंह ने भरतपुर-सोनहत विधानसभा क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए कहा कि क्षेत्र का बड़ा हिस्सा वनांचल है,कोटडोल और रामगढ़ जैसे इलाकों में प्राकृतिक सुंदरता के बीच रहने वाले लोगों की वास्तविक कठिनाइयों को बाहर से देखने वाले आसानी से नहीं समझ सकते,उन्होंने कहा कि कई स्थानों पर मोबाइल नेटवर्क,आवागमन और अन्य बुनियादी सुविधाओं की चुनौतियां आज भी मौजूद हैं,इसके बावजूद शिक्षक नियमित रूप से विद्यालय पहुंचकर बच्चों के भविष्य को संवारने में जुटे हैं,उन्होंने कहा कि दुर्गम इलाकों में शिक्षा की जिम्मेदारी निभाना महज नौकरी नहीं,बल्कि सेवा और संकल्प है,ऐसे शिक्षकों के समर्पण को सम्मानित करना पूरे समाज का दायित्व है।

'विधायक छात्र गौरव पुरस्कार' से बढ़ेगी प्रतिस्पर्धा-विधायक ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू किए गए 'विधायक छात्र गौरव पुरस्कार' को भी महत्वपूर्ण पहल बताया, उन्होंने कहा कि प्रतिभावान विद्यार्थियों को सम्मान और प्रोत्साहन मिलने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है,इसका उद्देश्य केवल कुछ विद्यार्थियों को पुरस्कार देना नहीं,बल्कि दूसरे विद्यार्थियों को भी बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरित करना है, इससे शिक्षा के क्षेत्र में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और आगे बढ़ने की ललक पैदा होगी।

सेवानिवृत्त शिक्षक को अध्यक्षता देकर बढ़ाया सम्मान

समारोह की सबसे खास पहल वरिष्ठ सेवानिवृत्त शिक्षक धर्मपाल राजवाड़े को कार्यक्रम की अध्यक्षता सौंपना रही,वर्ष 2011 में शासकीय सेवा से सेवानिवृत्त हुए राजवाड़े को मंच पर विशेष सम्मान दिया गया,विधायक ने कहा कि शिक्षक की सेवानिवृत्ति केवल सरकारी सेवा से होती है। उसका अनुभव और ज्ञान समाज के लिए हमेशा उपयोगी रहता है, सेवानिवृत्त शिक्षक को कार्यक्रम की अध्यक्षता देना उनके अनुभव और योगदान के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

स्थानीय प्रतिभाओं को राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने पर जोर

विधायक ने कोरिया और एमसीबी जिले के शिक्षा विभाग तथा प्रशासनिक अधिकारियों से बेहतर अंतर-विभागीय समन्वय के साथ काम करने का आह्वान किया,उन्होंने कहा कि क्षेत्र के प्रतिभावान विद्यार्थी और उत्कृष्ट कार्य करने वाले शिक्षक केवल स्थानीय स्तर तक सीमित न रहें, बल्कि उन्हें राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर मिलें, उन्होंने अधिकारियों से ऐसी प्रतिभाओं को चिन्हित कर उन्हें दिल्ली के राष्ट्रीय मंच तक पहुंचाने के लिए समन्वित प्रयास करने की बात कही।

टॉपर रागनी को स्कूटी,त्रिवेंद्र को बाइक

समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया,टॉपर रागनी गुप्ता को स्कूटी और त्रिवेंद्र कुशवाहा को बाइक प्रदान की गई, इसके अलावा मेधावी छात्र-छात्राओं को लैपटॉप वितरित किए गए, उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यालयों को 11-11 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की गई। विधायक ने कहा कि ऐसे सम्मान विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के उत्साह को बढ़ाने का काम करते हैं।

गुरु-शिष्य परंपरा जीवन की दिशा तय करती है...

विकासखंड शिक्षा अधिकारी अरविंद सिंह ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए गुरु-शिष्य परंपरा के महत्व पर प्रकाश डाला,उन्होंने कहा कि समर्पित शिक्षक विद्यार्थी के जीवन की दिशा और दशा दोनों बदल सकता है, उन्होंने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,शत-प्रतिशत नामांकन और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों का उल्लेख करते हुए विद्यार्थियों से गुरुजनों का सम्मान करने और उनके बताए मार्ग पर आगे बढ़ने का आह्वान किया।

मनेन्द्रगढ़ में भी होगा ऐसा आयोजन

बीईओ मनेन्द्रगढ़ विपिन पाण्डेय ने कार्यक्रम को शिक्षकों के सम्मान की दिशा में विशेष पहल बताया,उन्होंने कहा कि सेवानिवृत्त शिक्षक को कार्यक्रम की अध्यक्षता सौंपना पूरे शिक्षक समाज के सम्मान का प्रतीक है,उन्होंने कहा कि इस आयोजन से प्रेरणा लेते हुए अगले शैक्षणिक सत्र से मनेन्द्रगढ़ जिले में भी इसी तरह का शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित करने का प्रयास किया जाएगा, सोनहत जनपद पंचायत उपाध्यक्ष संदीप जायसवाल ने भी शिक्षक के सम्मान को समाज की नैतिक जिम्मेदारी बताया, उन्होंने कहा कि शिक्षक दिवस पर सम्मान करने के साथ-साथ शिक्षकों के आदर्शों और बताए मार्ग पर चलना भी जरूरी है।

बच्चियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने बांधा समां

समारोह में छात्राओं ने गीत,नृत्य और विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर दर्शकों का मन मोह लिया,उनकी प्रस्तुतियों से सामुदायिक भवन तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा, विधायक ने छात्राओं की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए कहा कि शिक्षा के साथ संस्कृति और संस्कार भी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण के लिए आवश्यक हैं, समारोह का संदेश साफ रहा–शिक्षक का सम्मान केवल एक दिन का आयोजन नहीं, बल्कि उस ज्ञान,अनुभव और समर्पण के प्रति सम्मान है,जिससे समाज की आने वाली पीढ़ियां तैयार होती हैं,विधायक की इस पहल में वनांचल के शिक्षकों को सम्मान, विद्यार्थियों को प्रोत्साहन और सेवानिवृत्त गुरु को मंच की अध्यक्षता–तीनों पहलुओं ने शिक्षक दिवस समारोह को अलग पहचान दी।

विकसित भारत के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका पर संगोष्ठी आज...

ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का आयोजन,शिक्षा क्षेत्र में योगदान देने वाले शिक्षक होंगे सम्मानित

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।
शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय अंबिकापुर द्वारा 'विकसित भारत के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी एवं सम्मान समारोह का आयोजन 6 सितंबर, रविवार को शाम 5 बजे नव विश्व भवन, चोपड़ापारा में किया जाएगा। कार्यक्रम में शहर के शासकीय एवं निजी विद्यालयों में समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा के साथ शिक्षा के क्षेत्र में योगदान देने वाले शिक्षकों का सम्मान किया जाएगा। संगोष्ठी का उद्देश्य राष्ट्र निर्माण और संस्कारवान युवा पीढ़ी तैयार करने में शिक्षकों की भूमिका को रेखांकित करना है। आयोजकों ने पूर्व राष्ट्रपति एवं महान शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों का उल्लेख करते हुए कहा कि राष्ट्र के निर्माण में कक्षा और शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। वर्तमान समय में विद्यार्थियों को विषयगत ज्ञान के साथ नैतिक मूल्यों, अनुशासन और संस्कारों से जोड़ना भी जरूरी है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के ज्वाइंट डायरेक्टर राजेश कुमार सिंह, जिला शिक्षा अधिकारी दिनेश कुमार झा, इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य आरएन खरे, डाइट प्राचार्य केसी गुप्ता और साईं बाबा विद्यालय के प्राचार्य राजेश श्रीवास्तव विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। अंबिकापुर सेवाकेंद्र की संचालिका ब्रह्माकुमारी विद्या दीदी ने शिक्षकों से कार्यक्रम में शामिल होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि शिक्षक केवल विषय का ज्ञान देने वाले नहीं,बल्कि विद्यार्थियों को जीवन की दिशा देने वाले मार्गदर्शक और राष्ट्र के भावी निर्माणकर्ता हैं। उनके व्यक्तित्व और संस्कारों का प्रभाव आने वाली पीढ़ियों पर पड़ता है। विकसित एवं श्रेष्ठ भारत के निर्माण के लिए शिक्षकों की भूमिका को और मजबूत करना समय की आवश्यकता है।

सूखी लकड़ी लेने जंगल गई महिला पर मधुमक्खियों का हमला,इलाज के दौरान मौत

छत्ते के नीचे लकड़ी काटने से भड़कीं मधुमक्खियां,भागकर नाली में लेटी फिर भी नहीं छोड़ा,8 दिन तक चला इलाज

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।
उदयपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पोतका में जंगल से सूखी लकड़ी लेने गई 56 वर्षीय महिला पर मधुमक्खियों के झुंड ने हमला कर दिया। जान बचाने के लिए महिला जंगल से भागकर तालाब के पास बनी नाली में लेट गई,लेकिन मधुमक्खियां काफी देर तक उसके शरीर पर डंक मारती रहीं। गंभीर हालत में उसे अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां करीब आठ दिन तक चले इलाज के बाद उसकी मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, ग्राम पोतका निवासी कुमार पिता गंगादास (56) पिछले दो वर्षों से अपनी छोटी बहन के घर रह रही थी। 29 अगस्त को वह अन्य लोगों के साथ पास के जंगल में सूखी लकड़ी लेने गई थी। बताया गया कि महिला जिस पेड़ से लकड़ी काट रही थी, उसी पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता लगा हुआ था। लकड़ी काटने के दौरान छत्ता प्रभावित होने पर मधुमक्खियां अचानक आक्रामक हो गईं और महिला पर हमला कर दिया। अचानक हुए हमले से बचने के लिए महिला जंगल से बाहर की ओर भागी और तालाब के पास बनी नाली में जाकर लेट गई। इसके बावजूद मधुमक्खियों ने उसका पीछा नहीं छोड़ा और उसके शरीर पर लगातार डंक मारती रहीं। आसपास मौजूद लोगों ने किसी तरह उसे बचाया और घटना की जानकारी परिजनों को दी।

पहले उदयपुर, फिर मेडिकल कॉलेज रेफर : परिजन महिला को तत्काल उदयपुर के अस्पताल ले गए, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उसे घर ले आए। 30 अगस्त को तबीयत में सुधार नहीं होने पर परिजन उसे संजीवनी 108 की मदद से उदयपुर अस्पताल लेकर पहुंचे। चिकित्सकों ने उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए अंबिकापुर मेडिकल कॉलेज अस्पताल रेफर कर दिया। 31 अगस्त को परिजनों ने महिला को मेडिकल कॉलेज अस्पताल में भर्ती कराया। यहां चिकित्सकों की निगरानी में उसका उपचार चल रहा था। हालत गंभीर बनी रहने के कारण उसे लगातार उपचार दिया जा रहा था। 5 सितंबर की सुबह उपचार के दौरान महिला की मौत हो गई। घटना के बाद परिवार में मातम का माहौल है। जंगल में लकड़ी लेने के दौरान मधुमक्खियों के छत्ते के आसपास सावधानी बरतने की जरूरत एक बार फिर सामने आई है। स्थानीय लोगों के अनुसार, ग्रामीण अक्सर जंगल से जलावन के लिए सूखी लकड़ी लेने जाते हैं, ऐसे में पेड़ों पर लगे मधुमक्खियों के छत्तों की जानकारी और सावधानी बेहद जरूरी है।

प्रयास विद्यालय के हॉस्टल में छात्रों के बीच मारपीट,परिजनों की शिकायत पर रिपोर्ट दर्ज

-संवाददाता-
अम्बिकापुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।
प्रयास विद्यालय के छात्रावास में छात्रों के बीच हुई मारपीट के मामले में गांधी नगर पुलिस ने चार छात्रों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। घटना की जानकारी मिलने के बाद हॉस्टल के वार्डन दोनों घायल छात्रों को अस्पताल लेकर गए,जहां उनका उपचार कराया गया। परिजनों का आरोप है कि स्कूल या हॉस्टल प्रबंधन ने उन्हें घटना की जानकारी नहीं दी, जिससे नाराज होकर उन्होंने पुलिस से शिकायत की। जानकारी के अनुसार, कक्षा 11वीं और 12वीं के कुछ छात्रों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हुआ था। विवाद बढने पर मारपीट हो गई। जिसमें दो छात्र घायल हो गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद हॉस्टल के वार्डन दोनों छात्रों को अस्पताल लेकर पहुंचे और उनका उपचार कराया। बाद में एक छात्र ने अपने पिता अजय कुमार मार्को को घटना की जानकारी दी। इसके बाद अजय कुमार मार्को शुक्रवार देर शाम अंबिकापुर पहुंचे। परिजनों का आरोप है कि उन्हें घटना की जानकारी हॉस्टल या स्कूल प्रबंधन की ओर से नहीं दी गई। इसको लेकर उन्होंने नाराजगी जताई। इसके बाद अजय कुमार मार्को दूसरे छात्र के परिजनों के साथ गांधी नगर थाने पहुंचे और शिकायत दर्ज कराई। गांधीनगर थाना प्रभारी शक्तिकांत सिन्हा ने बताया कि मामले में चार छात्रों के खिलाफ मारपीट का प्रकरण दर्ज किया गया है। शुरुआती जांच में रैगिंग की बात सामने नहीं आई है।

जंगल में बैल का वध कर मांस गायब करने के आरोप में दो गिरफ्तार

विजयनगर पुलिस की कार्रवाई,मांस के टुकड़े और धारदार हथियार बरामद; दोनों को भेजा गया जेल

-संवाददाता-
रामानुजगंज,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)।
बलरामपुर-रामानुजगंज जिले की विजयनगर चौकी पुलिस ने ग्राम लावा के जंगल में मवेशी के वध के मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से मांस के टुकड़े और घटना में प्रयुक्त धारदार हथियार बरामद किए हैं। दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश किया गया, जहां से उन्हें जिला जेल रामानुजगंज भेज दिया गया। पुलिस के अनुसार, विजयनगर चौकी को सूचना मिली थी कि ग्राम लावा के जंगल में बड़ी मात्रा में खून और मवेशियों की हड्डियां पड़ी हैं। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची और निरीक्षण किया। वहां खून के निशान और हड्डियां मिलने के बाद मामले की जांच शुरू की गई।

पूछताछ में सामने आई वध की बात : पुलिस ने ग्रामीणों से पूछताछ की। संदेह के आधार पर दो स्थानीय लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। पुलिस के मुताबिक पूछताछ में दोनों ने एक बैल खरीदने और अन्य साथियों के साथ मिलकर उसका वध करने की बात स्वीकार की। आरोपियों ने कथित तौर पर मांस को आपस में बांटकर अलग-अलग स्थानों पर रख दिया था। आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने उनके घरों की तलाशी ली, जहां से मांस के टुकड़े और वध में इस्तेमाल धारदार हथियार बरामद किए गए।

ये आरोपी गिरफ्तार : गिरफ्तार आरोपियों में लालू कोरवा (36),पिता राम सूरत कोरवा तथा चंद्र देव पाल (46),पिता लालजी पाल, दोनों निवासी ग्राम लावा,चौकी विजयनगर शामिल हैं। पुलिस ने मामले में अपराध क्रमांक 158/2026 के तहत भारतीय न्याय संहिता की धारा 325, 238, 3(5) के साथ छत्तीसगढ़ कृषक पशु परिरक्षण अधिनियम 2004 की धारा 4,10 तथा पशु क्रूरता निवारण अधिनियम की धारा 11(1) के तहत अपराध दर्ज किया है। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहां से न्यायालय के आदेश पर उन्हें जिला जेल रामानुजगंज भेज दिया गया। मामले में अन्य संभावित आरोपियों की भूमिका की जांच और अग्रिम विवेचना जारी है।

एनएच-130 पर डाक पार्सल पिकअप और स्वीफ्ट की आमने-सामने भिड़ंत

कुंवरपुर में हादसा,दोनों वाहनों के अगले हिस्से बुरी तरह क्षतिग्रस्त,घायलों को अस्पताल भेजा

-संवाददाता-
लखनपुर,05 सितम्बर 2026(घटती-घटना)।
राष्ट्रीय राजमार्ग-130 पर कुंवरपुर के नवीन कॉलेज के पास शनिवार को डाक पार्सल पिकअप और स्वीफ्ट कार की आमने-सामने जोरदार भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दोनों वाहनों के अगले हिस्से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गए। हादसे के बाद मौके पर अफरा-तफरी मच गई। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, दोनों वाहन तेज रफ्तार में थे। इसी दौरान दोनों के बीच आमने-सामने टक्कर हो गई। हादसे की आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण और राहगीर मौके पर पहुंचे। वाहनों में फंसे घायलों को बाहर निकालकर पुलिस और डायल-112 को सूचना दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और घायलों को एंबुलेंस की मदद से नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भेजा गया। कुछ घायलों की हालत गंभीर बताई जा रही है। चिकित्सकों द्वारा उनका उपचार किया जा रहा है। हादसे के बाद दोनों क्षतिग्रस्त वाहन सडक़ पर ही खड़े हो गए,जिससे एनएच-130 पर कुछ समय के लिए यातायात बाधित रहा। सडक़ के दोनों ओर वाहनों की कतार लग गई। पुलिस ने क्रेन की मदद से दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को सडक़ से हटवाया, जिसके बाद यातायात सामान्य हुआ। पुलिस ने हादसे की जांच शुरू कर दी है।

13 किलोमीटर फोरलेन के लिए ₹ 88.51 करोड़ की प्रशासकीय स्वीकृति | अब तकनीकी स्वीकृति के बाद जल्द शुरू होगी निविदा प्रक्रिया | त्योहारों के समय जाम से मिलेगी राहत ग्राहकों की बढ़ेगी बाजार तक पहुंच | प्रभावित छोटे दुकानदारों के पुनर्वास की मांग, संतुलित विकास पर जोर

सड़क चौड़ीकरण: आज थोड़ी परेशानी,कल वर्षों की बड़ी राहत

थोड़ी परेशानी,बड़ी राहत-सड़क चौड़ीकरण से बदलेगा बैकुंठपुर का कारोबार और यातायात

-रवि सिंह-

बैकुंठपुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। कोरिया जिला मुख्यालय बैकुंठपुर के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित सड़क चौड़ीकरण की योजना अब कागजों से निकलकर जमीन पर उतरने की दिशा में बढ़ रही है, खरवत चौक स्थित एनएच-43 के गेज नदी पुल से जमगहना मुख्य मार्ग तक लगभग 13 किलोमीटर लंबे मार्ग को फोरलेन में विकसित करने के लिए ?88 करोड़ 51 लाख 29 हजार की प्रशासकीय स्वीकृति 1 सितंबर 2026 को जारी की गई है,अब तकनीकी स्वीकृति, ड्राइंग-डिजाइन और उसके बाद निविदा प्रक्रिया पूरी होने पर निर्माण कार्य शुरू होने का रास्ता खुलेगा। शहर के लिए यह सड़क चौड़ीकरण केवल सड़क की चौड़ाई बढ़ाने का मामला नहीं है,इसके साथ बैकुंठपुर के यातायात,व्यापार, बाजार की पहुंच,पार्किंग,शहर के भविष्य के विस्तार और आसपास के क्षेत्रों से कनेक्टिविटी का सवाल भी जुड़ा हुआ है। वर्षों से संकरी सड़कों,बढ़ते वाहनों और बाजार क्षेत्र में लगने वाले जाम से परेशान शहर के लिए यह परियोजना आने वाले समय में बड़ी राहत का कारण बन सकती है,लेकिन इस विकास की एक दूसरी तस्वीर भी है। सड़क चौड़ीकरण की जद में आने वाली दुकानों और छोटे कारोबारियों के सामने अपने वर्षों पुराने व्यवसाय को बचाने की चुनौती खड़ी हो सकती है,इसी चिंता को लेकर शहर के चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रशांत गुप्ता ने सड़क चौड़ीकरण का स्वागत करते हुए प्रभावित व्यापारियों के भविष्य और पुनर्वास की ठोस व्यवस्था पहले से सुनिश्चित करने की मांग उठाई है,उनका कहना है कि'थोड़ी परेशानी, बड़ी राहत' की सोच के साथ विकास को आगे बढ़ाना चाहिए, लेकिन यह भी सुनिश्चित होना चाहिए कि विकास की कीमत किसी छोटे व्यापारी की आजीविका खत्म करके न चुकाई जाए।

सड़क चौड़ी होगी तो सिर्फ यातायात नहीं, व्यापार भी बढ़ेगा-बैकुंठपुर के बाजार की सबसे बड़ी समस्या यह है कि शहर की मुख्य सड़कों पर यातायात और व्यापार दोनों का दबाव एक साथ रहता है, दुकानें सड़क के किनारे हैं, ग्राहक सड़क पर वाहन खड़े करते हैं,सामान लेकर आने वाले वाहन भी इसी मार्ग का उपयोग करते हैं और इसी रास्ते से दूसरे क्षेत्रों का यातायात भी गुजरता है,ऐसे में सड़क की सीमित चौड़ाई कई बार पूरे बाजार की गति को प्रभावित करती है,प्रशांत गुप्ता के मुताबिक सड़क चौड़ीकरण का सबसे बड़ा संभावित फायदा व्यापार के विस्तार के रूप में सामने आ सकता है,उनका मानना है कि जब किसी शहर के बाजार तक पहुंचना आसान होता है तो ग्राहक वहां अधिक सहजता से पहुंचता है,इसके उलट यदि बाजार में पहुंचने में जाम,भीड़ और पार्किंग की समस्या लगातार बनी रहे तो बाहर से आने वाला ग्राहक दूसरे विकल्प तलाश सकता है,यही वजह है कि सड़क चौड़ीकरण को केवल वाहन चालकों की सुविधा से जोड़कर देखना उचित नहीं होगा,इसका सीधा संबंध बाजार और व्यापार से भी है।

जाम से परेशान बाजार को मिलेगी सांस लेने की जगह...

बैकुंठपुर में त्योहारी सीजन इसका सबसे बड़ा उदाहरण बनकर सामने आता है,सामान्य दिनों में किसी तरह चलने वाला यातायात दीपावली,दशहरा,होली,विवाह सीजन अथवा अन्य महत्वपूर्ण अवसरों पर अचानक दबाव में आ जाता है,ग्राहकों की संख्या बढ़ती है,दुकानों के सामने वाहन खड़े होते हैं,पैदल लोगों की आवाजाही बढ़ती है,सामान लेकर आने-जाने वाले वाहनों की संख्या बढ़ जाती है,परिणाम यह होता है कि बाजार की सड़क धीरे-धीरे जाम के दबाव में आने लगती है,ऐसे समय में व्यापारी के सामने दोहरी समस्या होती है–ग्राहक दुकान तक पहुंच नहीं पाता और व्यापारी की बिक्री भी प्रभावित होती है,प्रशांत गुप्ता के मुताबिक यही वह स्थिति है जब महसूस होता है कि जिला मुख्यालय होने के बावजूद शहर बुनियादी यातायात व्यवस्था के दबाव से गुजर रहा है, सड़क चौड़ीकरण इस समस्या को काफी हद तक कम करने की क्षमता रखता है।

ग्राहक शहर में घुसने से डरे नहीं,यह भी व्यापार की जरूरत...

किसी भी बाजार की ताकत सिर्फ दुकानों की संख्या से नहीं,बल्कि वहां ग्राहकों की पहुंच से तय होती है, यदि ग्राहक को बाजार तक पहुंचने में आधा समय जाम में खड़ा रहना पड़े,वाहन खड़ा करने की जगह न मिले या भीड़ के कारण बाजार में प्रवेश करना मुश्किल हो जाए,तो वह जरूरी सामान के लिए भी दूसरे विकल्प तलाश सकता है,बैकुंठपुर के संदर्भ में सड़क चौड़ीकरण का एक महत्वपूर्ण लाभ यह हो सकता है कि बाहर से आने वाले ग्राहक और आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोग शहर के बाजार तक अधिक आसानी से पहुंच सकें,इसका असर छोटे से लेकर बड़े व्यापारियों तक पड़ सकता है,ग्राहक की आवाजाही बढ़ेगी तो बाजार में व्यापारिक गतिविधियां भी बढ़ने की संभावना रहेगी।

लेकिन विकास के बीच छोटे दुकानदारों की चिंता भी बड़ी–सड़क चौड़ीकरण का दूसरा पहलू नजरअंदाज नहीं किया जा सकता,प्रशांत गुप्ता ने अपने संदेश में विशेष रूप से उन छोटे दुकानदारों की चिंता उठाई है जो वर्षों से छोटी-छोटी दुकानें संचालित कर अपने परिवार का पालन-पोषण कर रहे हैं, विशेष रूप से नवीन नगर पालिका परिसर से पुराने बस स्टैंड तक सड़क चौड़ीकरण की जद में आने वाली दुकानों के प्रभावित होने की आशंका जताई गई है,इनमें ऐसे व्यापारी भी हैं जिन्होंने वर्षों पहले इसी स्थान से अपना कारोबार शुरू किया और अब उसी दुकान की आय से परिवार चला रहे हैं,ऐसे परिवारों के लिए दुकान सिर्फ चार दीवारें नहीं होती,वह उनकी आजीविका, परिवार की आर्थिक सुरक्षा और वर्षों की मेहनत का आधार होती है,इसलिए सड़क चौड़ीकरण के दौरान प्रशासन के सामने सबसे बड़ी चुनौती यही होगी कि विकास और विस्थापन के बीच संतुलन कैसे बनाया जाए।

आज का नुकसान या कल की बड़ी राहत?–सड़क चौड़ीकरण के दौरान कुछ लोगों को परेशानी होना संभव है, कहीं दुकान का हिस्सा प्रभावित हो सकता है, कहीं निर्माण के दौरान कारोबार प्रभावित होगा,कहीं यातायात को वैकल्पिक मार्ग से निकालना पड़ सकता है,लेकिन सवाल यह है कि क्या तत्काल होने वाली परेशानी के कारण शहर के दीर्घकालिक विकास को रोक दिया जाए? प्रशांत गुप्ता का तर्क है कि ऐसा नहीं होना चाहिए,उनका कहना है कि एक बार की परेशानी के मुकाबले वर्षों की सुविधा को ध्यान में रखना जरूरी है,लेकिन इसी के साथ प्रभावित लोगों के पुनर्वास की ठोस व्यवस्था भी पहले से होनी चाहिए, यानी विकास का मॉडल ऐसा हो जिसमें यह न कहा जाए कि सड़क चौड़ी करनी है,इसलिए दुकान हटेगी, बल्कि व्यवस्था यह हो कि सड़क चौड़ी होगी और प्रभावित दुकानदार को सम्मानजनक तरीके से दोबारा कारोबार करने की जगह भी मिलेगी।

पुनर्वास सिर्फ दुकान देने का नाम नहीं-यही इस पूरे प्रकरण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है, यदि किसी छोटे व्यापारी की दुकान सड़क चौड़ीकरण में प्रभावित होती है तो केवल कहीं दूसरी जगह एक दुकान बनाकर देना ही पर्याप्त नहीं होगा,असली पुनर्वास तभी होगा जब उसे व्यवसाय चलने योग्य स्थान मिले,प्रशांत गुप्ता ने स्पष्ट रूप से मांग की है कि आगामी नगर पालिका कॉम्प्लेक्स और संबंधित व्यावसायिक विकास योजनाओं में प्रभावित छोटे दुकानदारों के लिए पर्याप्त संख्या में दुकानें आरक्षित की जाएं,साथ ही वैकल्पिक दुकानें ऐसी जगह हों जहां वास्तविक बाजार और ग्राहकों की आवाजाही हो,यदि प्रभावित व्यापारी को ऐसी जगह भेज दिया गया जहां ग्राहक ही नहीं पहुंचता, तो दुकान मिल जाने के बावजूद उसका कारोबार खत्म हो सकता है,इसलिए पुनर्वास का अर्थ सिर्फ 'दुकान का निर्माण'नहीं बल्कि 'व्यवसाय चलने योग्य स्थान उपलब्ध कराना' होना चाहिए।

सड़क के साथ पार्किंग और यातायात व्यवस्था भी जरूरी-सड़क चौड़ीकरण के बाद यदि पार्किंग की समस्या जस की तस बनी रहती है तो कुछ वर्षों बाद सड़क पर फिर वही दबाव लौट सकता है, इसलिए परियोजना के साथ ही शहर की भविष्य की यातायात व्यवस्था पर भी योजना बनाना जरूरी है, पार्किंग,पैदल यात्रियों की सुविधा,नाली,स्ट्रीट लाइट, सड़क किनारे की व्यवस्था,यातायात संकेतक और अतिक्रमण नियंत्रण जैसे मुद्दों को सड़क निर्माण की व्यापक योजना का हिस्सा बनाया जाना चाहिए,सड़क चौड़ी हो और लोग फिर सड़क के दोनों ओर वाहन खड़े कर दें तो चौड़ी सड़क का बड़ा हिस्सा दोबारा पार्किंग में बदल सकता है,ऐसे में करोड़ों रुपये की परियोजना का उद्देश्य कमजोर पड़ सकता है।

13 किलोमीटर की सड़क,बदल सकता है पूरे क्षेत्र का आर्थिक नक्शा-स्वीकृत परियोजना के तहत खरवत चौक के गेज नदी पुल से जमगहना मुख्य मार्ग तक लगभग 13 किलोमीटर सड़क को फोरलेन बनाने की योजना है, परियोजना की स्वीकृत राशि 88.51 करोड़ से अधिक है,यह मार्ग केवल बैकुंठपुर शहर के लिए महत्वपूर्ण नहीं है,बल्कि आसपास के क्षेत्रों से आने-जाने वाले लोगों के लिए भी प्रमुख संपर्क मार्ग है,सड़क की क्षमता बढ़ने से आवागमन में समय की बचत और यातायात दबाव में कमी की उम्मीद है, प्रशासन की ओर से भी व्यापारिक प्रतिष्ठानों और आम नागरिकों को इससे सुविधा मिलने की बात कही गई है, ऐसे में इस परियोजना का असर आने वाले वर्षों में शहर की आर्थिक गतिविधियों पर भी दिखाई दे सकता है।

अब असली परीक्षा टेंडर के बाद शुरू होगी-प्रशासकीय स्वीकृति मिल चुकी है,लेकिन सड़क अभी जमीन पर चौड़ी नहीं हुई है, परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए तकनीकी स्वीकृति,ड्राइंग-डिजाइन की मंजूरी और निविदा प्रक्रिया जैसे चरण पूरे होने हैं। उपलब्ध रिपोर्टों के अनुसार इसके बाद ही निर्माण कार्य की दिशा स्पष्ट होगी,यानी शहरवासियों के लिए अब अगला इंतजार टेंडर और कार्यादेश का है,इसके बाद उससे भी बड़ा सवाल निर्माण की गुणवत्ता का होगा, 88.51 करोड़ से अधिक की परियोजना में सड़क कितनी मजबूत बनती है,निर्माण कितने समय में पूरा होता है और स्वीकृत डिजाइन के अनुसार काम होता है या नहीं–इन सभी पर निगरानी जरूरी होगी।

बैकुंठपुर को ऐसी सड़क चाहिए जो अगले 20 साल की जरूरत पूरी करे-बैकुंठपुर आज जितना है, आने वाले वर्षों में उससे कहीं बड़ा शहर होगा,जिला मुख्यालय के रूप में प्रशासनिक गतिविधियां बढ़ेंगी, वाहनों की संख्या बढ़ेगी,व्यापार बढ़ेगा और आसपास के क्षेत्रों से शहर में आने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ेगी,इसलिए सड़क चौड़ीकरण को केवल आज के जाम का समाधान नहीं माना जाना चाहिए,इसे भविष्य की जरूरत की तैयारी के रूप में देखना होगा,प्रशांत गुप्ता का संदेश इसी संतुलन की ओर इशारा करता है–विकास जरूरी है,सड़क चौड़ीकरण जरूरी है, लेकिन विकास की प्रक्रिया में उन छोटे कारोबारियों को भी साथ लेकर चलना होगा जिनकी दुकानें इस योजना से प्रभावित हो सकती हैं।

जाम से निजात,कारोबार को रफ्तार... बैकुंठपुर की चौड़ी सड़क का इंतजार खत्म होने को...

टेंडर की ओर कदम,प्रभावित छोटे दुकानदारों के पुनर्वास की मांग भी उठी...

संकरी सड़कों से चौड़े विकास तक... बैकुंठपुर को मिलेगी बड़ी राहत...

चौड़ी सड़क,सुगम यातायात और बढ़ता कारोबार...बैकुंठपुर के विकास की नई राह...

सड़क चौड़ी होगी तो बाजार भी बढ़ेगा... छोटी परेशानी के बाद बड़ी राहत...

बैकुंठपुर की सड़क चौड़ी होगी,व्यापार की राह भी खुलेगी

विकास की राह में थोड़ी परेशानी,बदले में वर्षों की राहत

सड़क चौड़ीकरण जरूरी,छोटे दुकानदारों का पुनर्वास भी जरूरी...

जाम में फंसा बाजार अब खुलेगा? 88.51 करोड़ की सड़क परियोजना से उम्मीद...

सड़क चौड़ीकरण से मिलेगी राहत,लेकिन छोटे कारोबारियों की चिंता बरकरार

13 किमी फोरलेन के लिए 88.51 करोड़ की प्रशासकीय स्वीकृति,अब तकनीकी स्वीकृति और टेंडर की ओर कदम, प्रभावित छोटे दुकानदारों के पुनर्वास की मांग भी उठी

शहर को सड़क भी चाहिए और दुकानदारों का चूल्हा भी जलता रहना चाहिए...

बैकुंठपुर के लिए सड़क चौड़ीकरण निश्चित रूप से एक बड़ा अवसर है, इससे यातायात का दबाव कम हो सकता है,बाजार तक पहुंच आसान हो सकती है, व्यापार को विस्तार मिल सकता है और शहर के भविष्य के विकास को गति मिल सकती है,लेकिन इस विकास की सफलता का पैमाना सिर्फ चौड़ी सड़क नहीं होगी,सफलता तब होगी जब सड़क चौड़ी हो,यातायात सुगम हो,जाम कम हो,ग्राहक बाजार तक आसानी से पहुंचे,व्यापार बढ़े और सड़क की जद में आने वाले छोटे दुकानदार भी अपना कारोबार दोबारा शुरू कर सकें,यही वजह है कि सड़क चौड़ीकरण को 'थोड़ी परेशानी,बड़ी राहत' के नजरिए से देखना उचित हो सकता है,लेकिन उस 'थोड़ी परेशानी'को झेलने वालों के लिए प्रशासन को पहले से ठोस और व्यावहारिक पुनर्वास व्यवस्था भी सुनिश्चित करनी होगी, बैकुंठपुर को विकास चाहिए...लेकिन ऐसा विकास, जिसमें सड़क भी चौड़ी हो और छोटे व्यापारी के घर का चूल्हा भी जलता रहे।

साल के जंगल में अवैध कटाई का खेल! पेड़ काटकर जंगल में ही तैयार हो रही सिल्ली, केतका सर्किल में वन विभाग की निगरानी पर उठे सवाल

-संवाददाता-

सूरजपुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। सूरजपुर वन मंडल के वन परिक्षेत्र सूरजपुर अंतर्गत केतका सर्किल के जंगलों में साल के हरे-भरे और पुराने पेड़ों की कथित अवैध कटाई को लेकर सवाल खड़े हो रहे हैं। सामने आई तस्वीरों में साल के बड़े पेड़ों के तनों पर कटाई के निशान दिखाई दे रहे हैं,वहीं जंगल के भीतर लकड़ी के बड़े-बड़े पटरेनुमा टुकड़े भी नजर आ रहे हैं,इन तस्वीरों ने यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या जंगल के भीतर पेड़ों को काटने के बाद लकड़ी को मौके पर ही चीरकर उपयोगी आकार में तैयार किया जा रहा है? हालांकि तस्वीरों के आधार पर अवैध कटाई या किसी व्यक्ति की संलिप्तता को अंतिम रूप से प्रमाणित नहीं किया जा सकता,पूरे मामले की वास्तविक स्थिति वन विभाग के मौके पर निरीक्षण और जांच के बाद ही स्पष्ट होगी, लेकिन यदि तस्वीरों में दिखाई दे रही स्थिति वास्तव में अवैध कटाई से जुड़ी है तो यह वन सुरक्षा और विभागीय निगरानी व्यवस्था के लिए गंभीर मामला हो सकता है। जंगल में कटे पेड़, मौके पर लकड़ी के टुकड़े- केतका सर्किल के जंगल से सामने आई तस्वीरों में एक बड़े साल के पेड़ के तने पर कटाई के स्पष्ट निशान दिखाई दे रहे हैं,आसपास लकड़ी के टुकड़े और पटरेनुमा सामग्री भी नजर आ रही है, यही दृश्य इस मामले को सामान्य पेड़ कटाई से आगे ले जाता है, सवाल यह है कि यदि पेड़ काटे गए हैं तो क्या लकड़ी को जंगल से बाहर ले जाने के बजाय मौके पर ही चीरने की कोशिश की गई? यदि ऐसा हुआ है तो इसके लिए इस्तेमाल किए गए औजार या उपकरण जंगल तक कैसे पहुंचे और तैयार लकड़ी को वहां से किस माध्यम से बाहर ले जाया गया? इन सवालों का जवाब केवल मौके की जांच से ही मिल सकता है।

पेड़ काटना ही नहीं,लकड़ी को 'तैयार माल' में बदलने का आरोप- स्थानीय स्तर पर कुछ लोगों और सूत्रों की ओर से दावा किया जा रहा है कि क्षेत्र में कथित रूप से लंबे समय से साल की लकड़ी की अवैध कटाई और उसके परिवहन का सिलसिला चल रहा है,आरोप है कि जंगल में पेड़ों को काटने के बाद लकड़ी को वहीं चीरकर सिल्ली,कंडी या चौखट जैसे उपयोगी आकार में तैयार किया जाता है और फिर उसे अलग-अलग रास्तों से बाहर ले जाया जाता है,इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि अभी नहीं हुई है, यदि जांच में जंगल के भीतर ही लकड़ी की चिराई की पुष्टि होती है तो मामला और गंभीर हो सकता है, क्योंकि तब यह पता लगाना जरूरी होगा कि वहां किस तरह के उपकरण इस्तेमाल किए गए और कितने समय से यह गतिविधि चल रही थी।

वन विभाग की गश्त पर बड़ा सवाल- जंगलों की सुरक्षा के लिए वन विभाग द्वारा नियमित गश्त और निगरानी की व्यवस्था की जाती है, ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि यदि जंगल में बड़े और पुराने साल के पेड़ों की कटाई हुई है तो वन अमले को इसकी जानकारी कब हुई? अगर पेड़ हाल में काटे गए हैं तो कटाई के निशान और लकड़ी के अवशेष मौके पर मौजूद होने के बावजूद इसकी सूचना विभाग तक क्यों नहीं पहुंची? और यदि स्थानीय दावों के अनुसार यह गतिविधि लंबे समय से चल रही है तो फिर नियमित गश्त के दौरान वन अमले को इसकी भनक क्यों नहीं लगी? ये सवाल किसी कर्मचारी को दोषी ठहराने के लिए नहीं, बल्कि वन सुरक्षा व्यवस्था की प्रभावशीलता जांचने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कर्मचारियों की भूमिका पर भी उठ रहे सवाल- स्थानीय स्तर पर कुछ वन कर्मचारियों की भूमिका को लेकर भी संदेह व्यक्त किया जा रहा है, हालांकि किसी कर्मचारी की मिलीभगत अथवा लापरवाही का निष्कर्ष केवल आरोपों के आधार पर नहीं निकाला जा सकता,यदि विभाग जांच करता है तो उसे यह भी देखना चाहिए कि संबंधित क्षेत्र में किस-किस कर्मचारी की ड्यूटी थी, गश्त का रिकॉर्ड क्या है, वन अपराधों से संबंधित पूर्व सूचना या शिकायतें मिली थीं या नहीं और यदि मिली थीं तो उन पर क्या कार्रवाई की गई,इससे यह स्पष्ट हो सकेगा कि मामला केवल कुछ लोगों द्वारा की गई कथित अवैध गतिविधि का है या निगरानी व्यवस्था में भी कहीं कमी रही।

कितने पेड़ कटे? कितनी लकड़ी निकली?- मामले की गंभीरता का अंदाजा तभी लगाया जा सकेगा जब वन विभाग मौके पर जाकर पेड़ों और लकड़ी का वास्तविक आकलन करे, जांच में यह देखा जाना चाहिए कि कितने साल के पेड़ कटे हैं? पेड़ों की अनुमानित संख्या कितनी है? कटे हुए पेड़ों की उम्र और आकार क्या था? मौके पर कितनी लकड़ी मिली? लकड़ी के कितने टुकड़े या सिल्ली तैयार की गई? कटाई के निशान कितने पुराने हैं? लकड़ी को काटने में कौन से उपकरण इस्तेमाल किए गए? क्या आसपास और भी कटे हुए पेड़ों के ठूंठ मौजूद हैं? क्या पहले भी इस क्षेत्र से वन अपराध की शिकायत मिली है? इन सवालों के जवाब सामने आने के बाद ही अवैध कटाई के वास्तविक दायरे का पता चल सकेगा।

साल के पेड़ों की कटाई सिर्फ लकड़ी का नुकसान नहीं- साल का पेड़ वन क्षेत्र की महत्वपूर्ण वन संपदा में शामिल है, किसी भी जंगल में बड़े और पुराने पेड़ों की अनधिकृत कटाई का प्रभाव केवल लकड़ी के नुकसान तक सीमित नहीं रहता, इसका असर वन क्षेत्र की संरचना और स्थानीय पारिस्थितिकी पर भी पड़ सकता है,इसीलिए जंगल में पेड़ कटने की सूचना या तस्वीर सामने आने पर विभाग के लिए जरूरी है कि वह मौके का निरीक्षण करे और यदि वन अपराध पाया जाए तो नियमानुसार कार्रवाई करे, सूरजपुर जिले में इससे पहले भी अवैध लकड़ी के मामलों में कार्रवाई सामने आती रही है, जून 2026 में वन विभाग ने प्रतापपुर क्षेत्र में एक ओमनी वैन से 9 नग अवैध साल चिरान जब्त करने की जानकारी दी थी,विभाग के अनुसार वाहन चालक मौके से फरार हो गया था और भारतीय वन अधिनियम के तहत कार्रवाई की गई थी,इससे स्पष्ट है कि जिले में अवैध साल लकड़ी के परिवहन पर कार्रवाई के मामले सामने आते रहे हैं,ऐसे में केतका सर्किल से सामने आई तस्वीरों की भी गंभीरता से जांच अपेक्षित है।

अब कैमरे की तस्वीर से आगे विभागीय जांच जरूरी- केतका सर्किल के जंगल से सामने आई तस्वीरों ने सवाल जरूर खड़े किए हैं,लेकिन तस्वीरें अपने आप में पूरी कहानी नहीं बतातीं, असली सवाल अब यह है कि वन विभाग इन तस्वीरों को कितनी गंभीरता से लेता है,यदि विभाग मौके पर पहुंचकर कटे पेड़ों की संख्या, लकड़ी की मात्रा,कटाई के तरीके और वहां मौजूद साक्ष्यों का पंचनामा तैयार करता है तो स्थिति काफी हद तक स्पष्ट हो सकती है, जरूरत पड़ने पर आसपास के क्षेत्र में व्यापक तलाशी, गश्त रिकॉर्ड की जांच और पूर्व शिकायतों की समीक्षा भी की जा सकती है।

जंगल की रखवाली सिर्फ कागजों में नहीं,जमीन पर भी दिखनी चाहिए-वन संपदा सरकारी रिकॉर्ड की कोई निर्जीव संपत्ति नहीं है, जंगल में खड़ा हर पेड़ पर्यावरण और आने वाली पीढ़ियों से जुड़ा है। इसलिए यदि केतका सर्किल में सामने आए कटाई के निशान वास्तव में अवैध कटाई की पुष्टि करते हैं तो जिम्मेदारों तक पहुंचना और कार्रवाई करना जरूरी होगा,और यदि जांच में आरोप गलत पाए जाते हैं, तब भी विभाग को तस्वीरों और संदेह की स्थिति को स्पष्ट करना चाहिए, अब सवाल सिर्फ यह नहीं है कि जंगल में पेड़ किसने काटे, बल्कि यह भी है कि कटते पेड़ों की आवाज वन विभाग की निगरानी व्यवस्था तक क्यों नहीं पहुंची?

मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने दिलाया स्वस्थ समाज का संकल्प,30 सितंबर तक टीबी मुक्त खड़गवां का लक्ष्य

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी में जल्द आईसीयू और चिरमिरी में मेंटल अस्पताल की तैयारी

स्वस्थ समाज की ओर बड़ा कदम, खड़गवां से सेवा संकल्प अभियान शुरू

खड़गवां से स्वस्थ समाज की हुंकार,मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने दिलाया संकल्प

-संवाददाता-

खड़गवां,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। स्वास्थ्य सेवाओं को आम लोगों तक पहुंचाने, गंभीर बीमारियों की समय पर पहचान करने और जरूरतमंद मरीजों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 'सेवा संकल्प अभियान 2026' का शुभारंभ शनिवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खड़गवां में स्वास्थ्य मंत्री एवं क्षेत्रीय विधायक श्याम बिहारी जायसवाल ने किया, अभियान के तहत क्षेत्र में व्यापक स्वास्थ्य जांच,स्क्रीनिंग और उपचार की गतिविधियां आयोजित की जाएंगी। कार्यक्रम की शुरुआत पंजीयन काउंटर के निरीक्षण से हुई, स्वास्थ्य मंत्री ने स्वयं पंजीयन व्यवस्था का जायजा लिया और विभिन्न बीमारियों की जांच के लिए बनाए गए विभागवार कक्षों का निरीक्षण किया,उन्होंने अधिकारियों से मरीजों की जांच, उपलब्ध चिकित्सा सुविधाओं,स्वास्थ्य सेवाओं और उपचार व्यवस्था की जानकारी ली, इसके बाद छत्तीसगढ़ महतारी के छायाचित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर मेगा स्वास्थ्य शिविर का विधिवत शुभारंभ किया गया,कार्यक्रम में वंदे मातरम्,राष्ट्रगान और छत्तीसगढ़ के राजकीय गीत की धुन के बीच उपस्थित लोगों ने सहभागिता की। इसके बाद स्वागत समारोह आयोजित किया गया।

30 सितंबर तक खड़गवां को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा कि 30 सितंबर को जनपद खड़गवां को टीबी मुक्त घोषित करने का लक्ष्य रखा गया है, उन्होंने कहा कि टीबी समेत गंभीर बीमारियों के खिलाफ सबसे महत्वपूर्ण हथियार समय पर जांच और समय पर उपचार है,उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास है कि बीमारी की पहचान शुरुआती स्तर पर हो,ताकि मरीज को गंभीर अवस्था में पहुंचने से पहले उपचार उपलब्ध कराया जा सके। इसके लिए स्वास्थ्य विभाग के मैदानी अमले और स्थानीय स्तर पर चलाए जा रहे स्क्रीनिंग अभियानों की भूमिका महत्वपूर्ण है,देश में भी टीबी उन्मूलन के लिए सक्रिय खोज,जांच और उपचार पर लगातार जोर दिया जा रहा है। केंद्रीय टीबी प्रभाग के अनुसार टीबी की जांच और उपचार की सेवाएं स्वास्थ्य केंद्रों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती हैं।

17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक चलेगा स्वास्थ्य अभियान- मंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिवस 17 सितंबर के अवसर पर मनेंद्रगढ़

में मेगा हेल्थ कैंप आयोजित किया जाएगा,इसके साथ ही 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक लगातार स्वास्थ्य शिविर और स्क्रीनिंग अभियान चलाने की योजना है,इस अभियान में अलग-अलग बीमारियों की जांच के साथ गंभीर बीमारियों की शुरुआती पहचान पर विशेष ध्यान दिया जाएगा,स्क्रीनिंग के दौरान यदि किसी व्यक्ति में गंभीर बीमारी के लक्षण या समस्या सामने आती है तो उसे आवश्यकता के अनुसार विशेषज्ञ अस्पताल अथवा संबंधित चिकित्सा केंद्र भेजा जाएगा,मंत्री के अनुसार सरकार का प्रयास रहेगा कि ऐसे मरीजों के उपचार की प्रक्रिया को भी आगे बढ़ाया जाए,ताकि जांच के बाद मरीज केवल रिपोर्ट लेकर घर न लौटे,बल्कि उसे जरूरत के अनुसार उपचार की सुविधा भी मिले।

चिरमिरी में तीन दिवसीय मेगा हेल्थ कैंप- स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि 30 सितंबर से चिरमिरी में तीन दिवसीय मेगा हेल्थ कैंप आयोजित किया जाएगा, अभियान के दौरान अधिक से अधिक लोगों की स्वास्थ्य जांच कराने और उन्हें स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने पर जोर रहेगा,उन्होंने कहा कि सेवा संकल्प अभियान को केवल एक कार्यक्रम तक सीमित नहीं रखा जाएगा, इसका उद्देश्य स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ बीमारी की पहचान और उपचार की व्यवस्था को मजबूत करना है।

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी में आईसीयू सुविधा पर जोर- क्षेत्र में गंभीर मरीजों के उपचार की सुविधा बढ़ाने को लेकर भी स्वास्थ्य मंत्री ने महत्वपूर्ण घोषणा की, उन्होंने कहा कि मनेंद्रगढ़ और चिरमिरी में एक माह के भीतर आईसीयू सेवा शुरू करने का प्रयास किया जा रहा है,यदि यह सुविधा शुरू होती है तो गंभीर मरीजों को तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी, वर्तमान में गंभीर मरीजों को उच्च स्तरीय उपचार के लिए दूसरे शहरों की ओर रेफर करना पड़ने की स्थिति में समय और संसाधन दोनों की चुनौती सामने आती है,स्थानीय स्तर पर आईसीयू सुविधा उपलब्ध होने से आपातकालीन चिकित्सा व्यवस्था को मजबूती मिलने की उम्मीद है,हालांकि,इसकी वास्तविक उपयोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि आईसीयू में विशेषज्ञ चिकित्सक,प्रशिक्षित स्टाफ, आवश्यक उपकरण,चौबीसों घंटे सेवा और रेफरल व्यवस्था कितनी प्रभावी ढंग से उपलब्ध कराई जाती है।

एक-दो माह में शुरू करने का प्रयास, मेंटल अस्पताल- मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर भी मंत्री ने क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण जानकारी साझा की,उन्होंने कहा कि चिरमिरी में मेंटल अस्पताल को एक-दो माह के भीतर शुरू करने का प्रयास किया जा रहा है, मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के लिए स्थानीय स्तर पर विशेषज्ञ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होने से मरीजों और उनके परिवारों को दूसरे शहरों पर निर्भरता कम करने में मदद मिल सकती है। हालांकि अस्पताल के संचालन की सफलता के लिए चिकित्सकीय विशेषज्ञों, काउंसलिंग, नर्सिंग स्टाफ और आवश्यक सुविधाओं की उपलब्धता महत्वपूर्ण होगी।

जीवन दीप समितियों की आय में बढ़ोतरी- स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि खड़गवां, चिरमिरी और मनेंद्रगढ़ की जीवन दीप समितियों की आय में वृद्धि हुई है, उन्होंने इसके लिए समिति से जुड़े लोगों और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की,उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य व्यवस्था केवल सरकारी अस्पतालों और भवनों से मजबूत नहीं होती,बल्कि उसमें काम करने वाले कर्मचारियों,स्थानीय संस्थाओं और जनप्रतिनिधियों की सक्रिय भूमिका भी महत्वपूर्ण होती है।

जनवरी-फरवरी तक रेलवे प्रोजेक्ट की उम्मीद- कार्यक्रम के दौरान मंत्री ने क्षेत्र के विकास से जुड़ी अन्य योजनाओं का भी उल्लेख किया,उन्होंने कहा कि जनवरी या फरवरी तक चिरमिरी रेलवे स्टेशन से जुड़ा एक बड़ा रेलवे प्रोजेक्ट शुरू होने की उम्मीद है, उन्होंने इसे क्षेत्र के विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया और कहा कि आने वाले समय में स्वास्थ्य के साथ-साथ आधारभूत संरचना और कनेक्टिविटी से जुड़े क्षेत्रों में भी काम को गति देने का प्रयास किया जा रहा है, इससे पहले भी चिरमिरी में करोड़ों रुपये के विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन और शिलान्यास किया जा चुका है, जून 2026 में स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने चिरमिरी नगर निगम क्षेत्र में लगभग 5.50 करोड़ के विकास कार्यों का भूमिपूजन और शिलान्यास किया था।

स्वास्थ्य सेवाओं की नई परीक्षा- सेवा संकल्प अभियान के जरिए सरकार ने स्वास्थ्य जांच और स्क्रीनिंग को लेकर बड़ा लक्ष्य रखा है, अब इसकी असली सफलता इस बात से तय होगी कि कितने लोगों की स्क्रीनिंग हुई, कितने मरीज चिन्हित हुए,कितनों को समय पर उपचार मिला और गंभीर मरीजों को विशेषज्ञ चिकित्सा तक कितनी जल्दी पहुंचाया गया,खड़गवां को टीबी मुक्त घोषित करने का लक्ष्य,17 सितंबर से एक माह तक चलने वाला स्वास्थ्य अभियान, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी में प्रस्तावित आईसीयू और चिरमिरी में मानसिक स्वास्थ्य सुविधा–ये सभी घोषणाएं क्षेत्र की स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण हैं,अब जनता की नजर इन घोषणाओं के जमीन पर क्रियान्वयन और तय समयसीमा में उपलब्ध होने वाली सुविधाओं पर रहेगी।

बीमारी का इलाज ही नहीं,बीमारी की पहचान भी लक्ष्य-

सेवा संकल्प अभियान की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसका फोकस केवल अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों के इलाज तक सीमित नहीं रखा गया है, अभियान के तहत लोगों की स्क्रीनिंग,बीमारी की शुरुआती पहचान,विशेषज्ञ चिकित्सा तक पहुंच और उपचार को एक साथ जोड़ने की कोशिश की जा रही है,स्वास्थ्य सेवाओं में स्क्रीनिंग का महत्व इसलिए भी अधिक है क्योंकि कई गंभीर बीमारियां शुरुआती दौर में स्पष्ट लक्षण नहीं देतीं। ऐसे में समय पर जांच बीमारी की पहचान और उपचार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

स्वस्थ समाज के लिए जनभागीदारी जरूरी

कार्यक्रम के अंत में स्वास्थ्य मंत्री ने उपस्थित लोगों को स्वस्थ जीवनशैली,नियमित स्वास्थ्य जांच,बीमारी से बचाव और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का संकल्प दिलाया,उन्होंने कहा कि स्वस्थ समाज का निर्माण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है,इसके लिए आम लोगों की भागीदारी भी जरूरी है,लोगों को बीमारी के लक्षणों को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए और जरूरत पड़ने पर समय पर स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर जांच करानी चाहिए,कार्यक्रम में महापौर राम नरेश राय,खड़गवां भाजपा मंडल अध्यक्ष धर्मपाल सिंह,पूर्व मंडल अध्यक्ष रामलाल साहू,भाजपा किसान मोर्चा अध्यक्ष एमसीबी राम प्रताप गुप्ता,युवा नेता अरुणोदय पांडे,धनंजय पांडे,वरिष्ठ भाजपा नेता मुकेश जायसवाल,विधायक प्रतिनिधि राजू नायक,यशवंती सिंह,जिला अस्पताल के अधीक्षक डॉ. राजेंद्र राय,मनेंद्रगढ़ अस्पताल अधीक्षक डॉ. स्वप्निल तिवारी,डीपीएम शिशिर जायसवाल,खड़गवां डीपीएम राजकुमार रजवाड़े,बीएमओ डॉ. मनीष सिंह सहित जनप्रतिनिधि,अधिकारी-कर्मचारी और गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

बारिश ने उजाड़े गरीबों के आशियाने,दर्जनभर मकान धराशाई

शिवप्रसादनगर क्षेत्र में लगातार बारिश का असर,कई छप्परपोश मकान जर्जर,प्राकृतिक आपदा राहत राशि तत्काल देने की मांग

-संवाददाता-

सूरजपुर,05 सितम्बर 2026 (घटती-घटना)। विगत पखवाड़े से लगातार हो रही बारिश ने ग्रामीण इलाकों में गरीब परिवारों की मुश्किलें बढ़ा दी हैं,शिवप्रसादनगर क्षेत्र में बारिश के कारण दर्जनभर ग्रामीणों के आशियाने धराशाई होने की जानकारी सामने आई है,वहीं कई छप्परपोश मकान बुरी तरह क्षतिग्रस्त और जर्जर हो चुके हैं,मकान गिरने के बाद प्रभावित परिवारों के सामने रहने और घरेलू सामान को सुरक्षित रखने की गंभीर समस्या खड़ी हो गई है,लगातार बारिश से कच्चे और छप्परपोश मकानों की स्थिति पहले से ही खराब थी,पानी से दीवारों और छतों पर असर पड़ने के बाद कई मकान अचानक धराशाई हो गए,सूरजपुर जिले में इस बारिश के दौरान कच्चे मकानों के क्षतिग्रस्त होने की घटनाएं सामने आना कोई अलग-थलग स्थिति नहीं है; हाल में जिले के अन्य क्षेत्रों में भी बारिश के चलते कच्चे मकानों के गिरने की रिपोर्ट सामने आई थी।

इन ग्रामीणों के मकान हुए प्रभावित- प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत शिवप्रसादनगर के गढ़ीपारा निवासी शिव प्रसाद कुशवाहा का मकान बारिश की चपेट में आया है, इसी तरह ग्राम पंचायत बड़सरा निवासी नागेश्वर चक्रधारी, कमलेश्वर साहू और स्वर्गीय हरि चक्रधारी के मकान भी क्षतिग्रस्त बताए गए हैं, इसी क्षेत्र में भाजपा मंडल अध्यक्ष सुनील साहू का ब्रिक्स प्लांट भी बारिश से प्रभावित होने की जानकारी दी गई है, ग्राम पंचायत बस्कर में रामचंद्र, मनिजर और बालम सिंह के मकान बारिश के कारण गिरने की बात सामने आई है, वहीं कुर्रीडीह निवासी सुमित्रा सिंह और गुलाल सिंह के घर भी प्रभावित हुए हैं, दनौली में होलसाय राजवाड़े और भैयालाल राजवाड़े का छप्परपोश मकान गिरने की जानकारी है, इन घटनाओं के बाद प्रभावित परिवारों को तत्काल राहत की जरूरत है,कई परिवार ऐसे बताए जा रहे हैं जिनके पास बारिश से बचने के लिए सुरक्षित वैकल्पिक व्यवस्था नहीं है।

'गांव चलो, बस्ती चलो' अभियान के दौरान सामने आई समस्या- क्षेत्र के सामाजिक कार्यकर्ता रक्षेन्द्र प्रताप सिंह ने ग्रामीण क्षेत्रों में संपर्क के दौरान इन परिवारों की स्थिति सामने आने के बाद मामले को जनप्रतिनिधियों तक पहुंचाया है,उन्होंने क्षेत्र की विधायक एवं महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े को आवेदन देकर प्रभावित परिवारों को प्राकृतिक आपदा राहत के तहत मुआवजा राशि उपलब्ध कराने की मांग की है, इसके साथ ही उन्होंने जिला पंचायत सदस्य अखिलेश प्रताप सिंह को दूरभाष के माध्यम से प्रभावित परिवारों की स्थिति की जानकारी दी और तत्काल राहत दिलाने का आग्रह किया,सामाजिक कार्यकर्ता का कहना है कि जिन परिवारों के मकान पूरी तरह गिर चुके हैं,उनके सामने सिर्फ मकान दोबारा बनाने की चुनौती नहीं है,बल्कि बारिश के बीच परिवार और घरेलू सामान को सुरक्षित रखने की समस्या भी बनी हुई है, ऐसे में प्रशासन को मौके का निरीक्षण कर वास्तविक नुकसान का आकलन करते हुए पात्र परिवारों को नियमानुसार राहत उपलब्ध करानी चाहिए।

बारिश थमी तो भी संकट खत्म नहीं- ग्रामीण क्षेत्रों में छप्परपोश और कच्चे मकानों के लिए लगातार बारिश सबसे बड़ा खतरा बन जाती है, एक बार दीवारों में नमी आने और मिट्टी कमजोर होने के बाद मकान का ढांचा कभी भी गिर सकता है, यही वजह है कि जिन घरों में फिलहाल सिर्फ दरारें या आंशिक क्षति हुई है, वहां भी खतरा टला नहीं है, प्रभावित परिवारों के लिए अब सबसे जरूरी काम नुकसान का आकलन और सुरक्षित आश्रय की व्यवस्था है, प्रशासनिक स्तर पर यदि समय रहते क्षतिग्रस्त मकानों का सर्वे कर लिया जाए तो गंभीर हादसे की संभावना को भी कम किया जा सकता है, जिला प्रशासन की वेबसाइट पर आपदा संबंधी सहायता के लिए बचाव और राहत आयुक्त का हेल्पलाइन नंबर 1070 भी उपलब्ध कराया गया है।

राहत के लिए अब प्रशासन की ओर नजर- मामला जनप्रतिनिधियों तक पहुंचने के बाद अब प्रभावित परिवारों की नजर प्रशासनिक कार्रवाई पर है,ग्रामीणों की मांग है कि राजस्व अमला मौके पर पहुंचकर प्रत्येक क्षतिग्रस्त मकान का पंचनामा तैयार करे,नुकसान का वास्तविक आकलन करे और पात्र हितग्राहियों को नियमानुसार प्राकृतिक आपदा राहत राशि उपलब्ध कराई जाए, खास तौर पर जिन परिवारों के मकान पूरी तरह धराशाई हो चुके हैं, उनके लिए राहत में देरी का मतलब बारिश के बीच खुले आसमान के नीचे रहने जैसी स्थिति हो सकती है। इसलिए सिर्फ कागजी सर्वे के बजाय मौके पर पहुंचकर वास्तविक स्थिति देखने और शीघ्र राहत देने की जरूरत है, दिलचस्प बात यह है कि 2 सितंबर को मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने सूरजपुर और भैयाथान में विकासखंड स्तरीय समीक्षा बैठकों में अधिकारियों को योजनाओं का लाभ पात्र हितग्राहियों तक समयबद्ध तरीके से पहुंचाने और मैदानी स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग के निर्देश दिए थे।

CMYK

जौहर विवाद पर श्रिया पिलगांवकर ने रखी अपनी राय

फिल्म 'पद्मावत' और उसमें दिखाए गए जौहर को लेकर अभिनेत्री स्वरा भास्कर की टिप्पणी पर शुरू हुई बहस एक बार फिर चर्चा में आ गई है। अब 'मिर्जापुर' फेम अभिनेत्री श्रिया पिलगांवकर ने इस विवाद पर अपनी राय रखी है। श्रिया का कहना है कि वर्तमान समय के नजरिए से सैकड़ों साल पुराने दौर के लोगों, उनकी परिस्थितियों और सांस्कृतिक मूल्यों को आंकना उचित नहीं है। उनकी टिप्पणी सामने आने के बाद स्वरा भास्कर ने भी सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया देते हुए एक बार फिर स्पष्ट किया कि उन्होंने रानी पद्मावती को कभी 'कायर' नहीं कहा था। हाल ही में 'फिल्मी ज्ञान' को दिए एक इंटरव्यू के दौरान श्रिया पिलगांवकर से स्वरा भास्कर के जौहर संबंधी बयान और उसके बाद पैदा हुए विवाद पर सवाल किया गया। इसके जवाब में श्रिया ने कहा कि वर्तमान में बैठकर किसी दूसरे ऐतिहासिक दौर के संदर्भ को जज करना बेहद आसान होता है,लेकिन उस समय की परिस्थितियों को समझना भी जरूरी है। श्रिया ने कहा कि 2026 में बैठकर सैकड़ों वर्ष पहले के लोगों की सोच, मूल्यों और उनके फैसलों का मूल्यांकन केवल आज के सामाजिक मानकों के आधार पर नहीं किया जा सकता। अलग-अलग समय में समाज की परिस्थितियां और सांस्कृतिक संदर्भ अलग रहे हैं।

समय के साथ बदलती हैं संस्कृतियां

श्रिया पिलगांवकर ने अपनी बात रखते हुए इस पहलू पर जोर दिया कि संस्कृति स्थिर नहीं रहती। समय और परिस्थितियों के साथ समाज और संस्कृति में परिवर्तन आते हैं। जो चीजें किसी विशेष ऐतिहासिक दौर में सामाजिक या सांस्कृतिक परिस्थितियों का हिस्सा रही हों, उन्हें वर्तमान समय की कसौटी पर रखकर सीधे फैसला सुनाना सही तरीका नहीं हो सकता। उनकी टिप्पणी का केंद्र ऐतिहासिक घटनाओं को उनके अपने संदर्भ में समझने पर रहा। श्रिया के मुताबिक किसी पुराने दौर के लोगों ने क्या सोचा, उनके मूल्य क्या थे और उन्होंने किसी खास परिस्थिति में कौन सा निर्णय क्यों लिया, इसे समझने के लिए उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ को भी ध्यान में रखना चाहिए। उनका कहना था कि आज हमारे पास जो सामाजिक समझ और मूल्य हैं, वे लंबे समय के बदलाव का परिणाम हैं। ऐसे में उन्हें सीधे कई सौ साल पुराने समाज पर लागू करना ऐतिहासिक संदर्भ की जटिलता को नजरअंदाज कर सकता है।

64 करोड़ व्यूज और 30 लाख रील्स,गर्दा उड़ा रहा है खेसारी लाल का भोजपुरी गाना,इंस्टाग्राम पर जमकर हो रहा वायरल

64 करोड़ से अधिक व्यूज बटोरने वाला खेसारी लाल यादव का भोजपुरी गाना इंस्टाग्राम पर खूब वायरल हो रहा है, जिस पर अभी तक 30 लाख से ज्यादा रील्स बन चुकी हैं।

भोजपुरी सिनेमा में कई ऐसे एक्टर्स हैं, जिन्हें अभिनय के साथ-साथ सिंगिग में महारथ हासिल है। जिनमें पवन सिंह, मनोज तिवारी के साथ-साथ खेसारी लाल यादव का नाम भी शामिल हैं। खेसारी लाल ने भोजपुरी में एक से बढ़कर एक गाने दिए हैं। अब हाल ही में उनका 64 करोड़ व्यूज वाला एक गाना इस वक्त हर किसी की जुबान पर चढ़ा हुआ है। यह गाना इंस्टाग्राम पर इस कदर वायरल हो रहा है कि हजारों लोग अब तक गाने पर रील बना चुके हैं।

खेसारी के साथ आम्रपाली दूबे की दिखी सिजलिंग केमिस्ट्री

खेसारी लाल यादव का जो डांस नंबर इस वक्त इंस्टाग्राम पर खूब ट्रेंड कर रहा है, वह दरअसल साल 2022 में यूट्यूब पर रिलीज किया गया था। गाने के लिरिक्स थे %पलंग सागवान के...। इस धमाकेदार गाने को यूपी और बिहार में कितना ज्यादा पसंद किया गया इस बात का अंदाजा आपको इसके व्यूज से मिल जाएगा। पलंग सागवान के गाने को यूट्यूब पर 646 मिलियन यानी कि 64 करोड़ 65 लाख व्यूज मिल रहे हैं। खेसारी लाल यादव के साथ इस पॉपुलर गाने में भोजपुरी सिंगर इंदू सोनाली ने आवाज दी है। गाने के लिरिक्स सुमित सिंह चंद्रवंशी ने लिखे हैं और फिल्म का म्यूजिक छोटे बाबा ने तैयार किया है। यह एक रोमांटिक ट्रेक है।

इंस्टाग्राम पर 30 लाख लोगों ने बनाई रील्स

खेसारी लाल यादव और आम्रपाली दूबे को यह गाना भले ही तीन साल पहले आया हो, लेकिन अब यह गाना इंस्टाग्राम पर

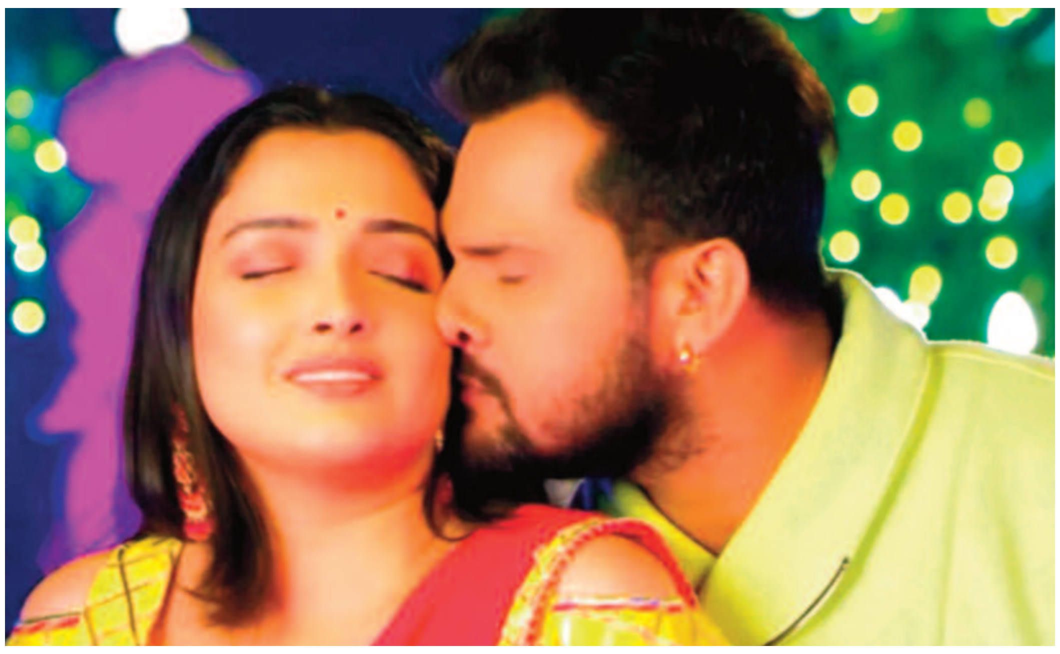

छाया हुआ है और 30 लाख से ज्यादा लोग अभी तक %पलंग सागवन के% ऑडियो पर रील्स बना चुके हैं। हर पल इस गाने के व्यूज बढ़ रहे हैं।यह पॉपुलर गाना रोमांटिक कॉमेडी भोजपुरी फिल्म डोली सजा के रखना का है, जिसमें खेसारी लाल यादव, आम्रपाली दूबे, रक्षा गुप्ता,विनोद मिश्रा,अनूप अरोड़ा,सामंथा चतुर्वेदी,आयाज खान,रीना रानी जैसे एक्टर्स नजर आए थे फिल्म के निर्देशन की कमान रजनीश मिश्रा ने संभाली थी। यह फिल्म भोजपुरी सिनेमा की बड़ी हिट फिल्मों में शामिल है। भोजपुरी ही नहीं खेसारी लाल यादव की आवाज का जादू बॉलीवुड ऑडियंस के भी सिर चढ़कर बोला।

सिनेमा में 18 साल : नेचुरल स्टार नानी ने फैंस का जताया आभार

तेलुगु स्टार नानी,जिन्होंने फिल्म इंडस्ट्री में एक एक्टर के तौर पर 18 साल पूरे कर लिए हैं, ने शनिवार को अपने फैंस और दर्शकों से कहा कि उन्होंने कभी भी उनके प्यार को हल्के में नहीं लिया और उन्हें भरोसा दिलाया कि वे आगे भी ऐसा कभी नहीं करेंगे। फिल्म इंडस्ट्री में 18 साल पूरे होने की बात बताते हुए नानी ने अपने एक्स टाइमलाइन पर लिखा, 18 साल। सिनेमा में आधिकारिक तौर पर एक एडल्ट (स्माइली फेस)। आपके प्यार को कभी हल्के में नहीं लिया। आगे भी कभी नहीं लूंगा। जो लोग नहीं जानते, उन्हें बता दें कि एक्टर की पहली फिल्म अष्ट चम्मा, जिसे मोहना कृष्णा इंद्रगंती ने डायरेक्ट किया था,पहली बार 5 सितंबर, 2008 को रिलीज़ हुई थी। नानी,जो इन 18 सालों में सिर्फ़ एक एक्टर से हीरो और प्रोड्यूसर बन गए हैं, अभी डायरेक्टर श्रीकांत ओडेला की बेसब्री से इंतज़ार की जा रही एक्शन एंटरटेनर फिल्म द पैराडाइज़ पर काम कर रहे हैं। यह फिल्म इस साल 24 सितंबर को रिलीज़ होने वाली है। द पैराडाइज़, जिसे एसएलव्ही सिनेमाज़ ने प्रोड्यूस किया है,असल में 26 मार्च, 2026 को बड़े पैमाने पर रिलीज़ होने वाली थी। हालांकि, इसके मेकर्स ने फिल्म की रिलीज़ को पहले 21 अगस्त और फिर 24 सितंबर तक टालने का फैसला किया। हाल ही में मेकर्स द्वारा रिलीज़ किए गए टीज़र ने

उत्साह और बढ़ा दिया है। रिलीज़ हुए टीज़र की शुरुआत एक वॉयसओवर से होती है जिसमें पूछा जाता है,अब से, यह जगह किसकी है?÷ इसके बाद नानी एक्रोबैटिक स्टंट करते हुए बहुत ही ड्रमैटिक अंदाज़ में अपनी एंट्री करते हैं। दो चोटियाँ बनाए और खून से लथपथ, वे धीरे-धीरे चलते हुए कुछ पीते हुए नज़र आते हैं। इसके बाद हम मोहन बाबू को देखते हैं, जो विलेन का रोल निभा रहे हैं। वे लोगों को पैराडाइज़ के मेरे प्यारे लोगों कहकर संबोधित करते हैं। इसके बाद कई एक्शन सीन आते हैं जिनमें खूब खून-खराबा होता है और हम एक महिला को यह पूछते हुए सुनते हैं, क्या सरकार तुम्हारे सामंती सरदारों के लिए है या लोगों के लिए? इसके बाद, हम एक आदमी को यह कहते हुए सुनते हैं,हमारी दबी-कुचली जाति को बगावत करनी होगी।

एक्टिंग में थे गोविंदा के बाप...डायलॉग और कॉमेडी टाइमिंग से बने बॉलीवुड के उस्ताद...कभी थे इंजीनियरिंग के प्रोफेसर

आज टीचर्स डे है और हम आपको इस खास मौके पर 300 फिल्में देने वाले उस एक्टर के बारे में बता रहे हैं,जो कभी स्कूल में प्रोफेसर हुआ करते थे और बाद में

एक्टिंग की दुनिया में खूब नाम कमाया।

आज टीचर्स डे है, जहां हर कोई अपने स्कूल के दिनों को याद कर रहा है। बॉलीवुड में भी कई ऐसे सितारे हैं, जो सिर्फ अच्छे एक्टर ही नहीं हैं,बल्कि एक समय पर वह स्कूलों में प्रोफेसर भी रह चुके हैं। किसी ने म्यूजिक की क्लास दी,तो कोई नर्सरी के बच्चों का ध्यान रखता था।हालांकि, इन्हीं में एक दिग्गज अभिनेता हैं, जिनके सामने 90 के दशक के सुपरस्टार गोविंदा की कॉमेडी टाइमिंग भी फीकी थी। करियर में 300 यादगार फिल्में देने वाले कौन हैं वह अभिनेता जो फिल्मों में आने के साथ-साथ थे सिविल इँजीनियरिंग के प्रोफेसर।

मुंबई के कॉलेज में पढ़ाते थे इंजीनियरिंग

बॉलीवुड के जिस चमकते हीरे की हम बात कर रहे हैं। वह कोई और नहीं,बल्कि गोविंदा के कॉमेडी गुरू कादर खान थे,जो सिर्फ एक बेहतरीन एक्टर नहीं थे, बल्कि मल्टीटैलेंटेड थे। उनके संघर्ष के बारे में तो लोगों ने बहुत सुना है,लेकिन बहुत ही कम लोग शायद ये जानते होंगे कि वह फिल्मों के साथ-साथ प्रोफेसर भी थे।साल 1970 में फज्र ए इस्लाम में नैरेटर के रूप में काम करने के साथ-साथ कादर खान सिविल इंजीनियरिंग के स्टूडेंट्स को भी पढ़ाते थे। 1970 से 75 तक वह एक कॉलेज में प्रोफेसर रहे। मुंबई के मुंबई के एम एच साबू सिद्दिक कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग में वह पढ़ाते थे।

दुबई के स्कूलों में बच्चों को पढ़ाई हिंदी

रिपोर्ट्स की मानें तो कादर खान ने सिर्फ मुंबई में ही बच्चों को नहीं पढ़ाया, बल्कि बाद में उन्होनें दुबई जाकर स्कूल में छात्रों को हिंदी की पढ़ाई करवाई। कादर खान ने वैसे तो अपने करियर की शुरूआत बतौर एक्टर साल 1972 में आई फिल्म कसक से की थी, लेकिन यह फिल्म कभी रिलीज नहीं हुई। उसके बाद एक्टर को फिल्म दाग में मौका मिला,जिसमें उन्होंने एक वकील की भूमिका निभाई।

गोविंदा के साथ भी खूब जमी जोड़ी

कादर खान ने अपने फिल्मी करियर में तकरीबन 300 फिल्में की, जिनमें हिंदी और उर्दू मूवीज शामिल हैं। इनमें से कई हैं,जिनमें उनकी और गोविंदा की जोड़ी फैंस को देखने को मिली है। दोनों ने साथ में फिल्म दूल्हे राजा, कूली नं.1 और हीरो नं वन,राजा बाबू में काम किया। अधिकतर फिल्मों में कॉमेडी किंग कादर खान अभिनय और कॉमिक टाइमिंग दोनों में ही गोविंदा से चार कदम आगे रहे।अभिनय के साथ-साथ कादर खान बहुत अच्छे लेखक भी रहे हैं। उन्होंने तकरीबन 250 से अधिक फिल्में लिखी हैं,जिनमें साल 1972 की जवानी-दीवानी से लेकर,बेनाम,रोटी,महाचोर जैसी फिल्में शामिल हैं।

विवादों के बीच फूंक-फूंककर कदम रख रहे समय रैना

समय रैना ने अपने हालिया एपिसोड के दौरान एक कंटेस्टेंट को उस वक्त बीच में ही रोक दिया, जब वह अहमदाबाद प्लेन क्रैश पर मजाकिया टिप्पणी करने वाला था। जैसे ही समय को आभास हुआ कि कंटेस्टेंट क्या कहने वाला है, उन्होंने तुरंत उसे टॉपिक बदलने को कह दिया। समय रैना का शो इंडियाज गॉट लेटेंट अक्सर किसी न किसी वजह से चर्चा में बना रहता है। शो कई बार विवादों में भी घिर चुका है, जिसके चलते अब समय रैना फूंक-फूंककर कदम रख रहे हैं। इंडियाज गॉट लेटेटेंट 2 का एपिसोड 6 हाल ही में नेटफ्लिक्स पर आया, जिसमें समय रैना के साथ वरुण धवन,मेधा शंकर,निशांत तंवर और शेरोन वर्मा बतौर पैनलिस्ट शामिल थे। हाल ही में आए नए एपिसोड में, एक कंटेस्टेंट को समय रैना ने उस वक्त रोक दिया जब वह अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया प्लेन क्रैश के बारे में जोक करने वाला था। जैसे ही समय रैना को एहसास हुआ कि कंटेस्टेंट शायद अहमदाबाद प्लेन क्रैश पर मजाक करने वाला है, उन्होंने उसे बीच में ही रोक दिया और कहा कि वह कुछ ऐसा कहे जिसे एपिसोड में रखा जा सके।

समय रैना ने कंटेस्टेंट को मजाक करने से रोका

दरअसल,शो के दौरान एक कंटेस्टेंट ने फ्लाइट्स को लेकर अपने डर के बारे में बताया। जिस पर समय ने पूछा-तुम्हें फ्लाइट्स से बहुत डर लगता है। ऐसा क्यों? क्या फ्लाइट्स बहुत महंगी हैं,इसलिए? इस सवाल पर हंसते हुए विजय ने जवाब दिया, नहीं, दरअसल मैं अहमदाबाद से हूं। एक साल पहले, मैं ऐसे ही छत पर बैठा था और चिल कर रहा था। तभी मेरे दोस्त का फोन आया और उसने मुझसे कहा-बाई तरफ देखो।

समय रैना ने बदला टॉपिक

कंटेस्टेंट की बात सुनकर समय तुरंत समझ गए कि बात 12 जून, 2025 को अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया प्लेन क्रैश की हो रही है। ऐसे में उन्होंने विजय को बीच में ही रोक दिया और कहा,क्या तुम इसका कोई दूसरा जवाब दे सकते हो जिसे हम अपने एपिसोड में रख सकें? इस पर विजय ने भी अपना जवाब बद दिया और कहा-हां,फ्लाइट्स बहुत मंहगी होती हैं। इसके बाद समय रैना ने अहमदाबाद में शो करने में आ रही दिक्कतों के बारे में बात की और कहा,अहमदाबाद में तो मेरे अपने शो नहीं हो पा रहे हैं। अहमदाबाद के अधिकारियों, अगर आप ये शो देख रहे हैं तो प्लीज मुझे गुजरात में शो करने दें। मुझे वहां परफॉर्म करना बहुत पसंद है। फिर उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, अहमदाबाद के अधिकारियों, अगर आप यह देख रहे हैं, तो मुझे अहमदाबाद में शो करने दें,और आगे कहा, मुझे गुजरात में परफॉर्म करना बहुत पसंद है।

खेल समाचार

हरमनप्रीत कौर ने महिला टी 20 एशिया कप में रचा इतिहास

150 टी20 आई मैचों में कप्तानी करने वाली बनीं दुनिया की पहली खिलाड़ी

नई दिल्ली,05 सितम्बर 2026। महिला टी20 एशिया कप 2026 में 5 सितंबर को भारत और पाकिस्तान के बीच ग्रुप-ए का बड़ा मुकाबला खेला जा रहा है। इस मैच के लिए मैदान पर उतरते ही भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर ने एक ऐतिहासिक मुकाम अपने नाम कर लिया। वह महिला और पुरुष दोनों क्रिकेट में 150 टी20 इंटरनेशनल मैचों में कप्तानी करने वाली दुनिया की पहली खिलाड़ी बन गईं। इससे पहले अभी तक ये उपलब्धि कोई और खिलाड़ी हासिल नहीं कर पाया है।

टॉस के वक्त हरमनप्रीत कौर ने क्या कहा?

पाकिस्तान के खिलाफ इस मैच में टीम इंडिया की कप्तान हरमनप्रीत कौर टॉस हार गईं। पाकिस्तान की कप्तान सना फातिमा ने इस मैच में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया है। टॉस के वक्त हरमनप्रीत कौर ने 150 टी20 आई मैच में कप्तानी करने को लेकर कहा कि यह एक बड़ी उपलब्धि है। लेकिन मैदान पर खेल का लुत्फ उठाना ही सबसे ज्यादा अहम है। उन्होंने ये भी कहा कि वे विपक्षी टीम को कम से कम स्कोर पर रोकना चाहती हैं ताकि बाद में बल्लेबाजी करते वक्त कोई दबाव न रहे। साथ ही, उन्होंने यह भी साफ किया कि इस मैच के लिए भारतीय टीम की प्लेइंग-11 में कोई बदलाव नहीं किया गया है।

हरमनप्रीत की कप्तानी में 87 मैच जीत चुकी है टीम इंडिया

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की कप्तान हरमनप्रीत कौर ने साल 2012 में पहली बार टी20 इंटरनेशनल में टीम इंडिया की कप्तानी संभाली थी और तब से वह लगातार इस जिम्मेदारी को बखूबी निभा रही हैं। पाकिस्तान के खिलाफ महिला टी20 एशिया कप 2026 के मैच में टॉस के लिए मैदान पर उतरते ही उन्होंने इतिहास रच दिया है। वह महिला और पुरुष दोनों क्रिकेट में 150 टी20 मैचों में कप्तानी करने वाली दुनिया की पहली खिलाड़ी बन गई हैं। उनकी कप्तानी में भारत ने अब तक खेले 149 टी20 मैचों में से 87 में जीत दर्ज की है,जबकि 57 मैचों में हार मिली है और 5 मैच बिना किसी नतीजे के रद्द रहे हैं।

महिला टी 20 आई में सबसे ज्यादा मैचों में कप्तानी करने वाले खिलाड़ी

- 150 - हरमनप्रीत कौर (भारत)
- 121 - चमारी अथापथु (श्रीलंका)
- 100 - मेग लैनिंग (ऑस्ट्रेलियाई)
- 96 - हीदर नाइट (इंग्लैंड)
- 96 - डायने बिमेनीमाना (रवांडा)

नाम परिवर्तन सूचना

मैं बृजलाल आ0 स्व0 भूपाल, उम्र लगभग 48 वर्ष, जाति- रजवार, निवासी ग्राम - सरमा, पोस्ट- बसदेई, थाना व तहसील - सूरजपुर, जिला- सूरजपुर (छ0ग0) कि मैं उपरोक्त पते का मूल निवासी हूँ मेरा आधार कार्ड क्रमांक 32225533 4418 है। मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम हिन्दी अक्षरों में ब्रजलाल तथा अंग्रेजी अक्षरों में BRAJLALअंकित हो गया है जो कि गलत है मेरा सही नाम बृजलाल BRIJLAL है जो मेरे मतदाता परिचय पत्र क्रमांक TKT0588921 में अंकित है जो कि सत्य एवं सही है।

मेरे आधार कार्ड में गलत नाम ब्रजलाल BRAJLALके स्थान पर मेरा सही नाम बृजलाल BRIJLAL है जो मतदाता परिचय पत्र क्रमांक TKT0588921 के अनुसार सुधार कर मेरे आधार कार्ड में अंकित किया जावे। जिस हेतु मैं मेरा स्वयं का शपथ पत्र निष्पादित कर प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शपथकर्ता
बृजलाल

छत्तीसगढ़ शासन,जल संसाधन विभाग
कार्यालय कार्यपालन अभियंता
जल संसाधन संभाग सूरजपुर (छ.ग.)

ई-प्रोक्योरमेंट निविदा आमंत्रण सूचना

eProcurement Portal:https://eproc.cgstate.gov.in

(निविदा निरस्तीकरण सूचना)

इस कार्यालय के निविदा सूचना क्र. 01 / वलेलि / 2026-27 / दिनांक 04.06.2026 सिस्टम निविदा क्र 192352 (प्रथम आमंत्रण) द्वारा विज्ञापन क्र. जी. 262701258 के माध्यम से विकासखंड प्रतापपुर में महान नदी पर गोंदा एनीकट के शेष कार्य का निर्माण कार्य हेतु ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की गई थी। उक्त निविदा में एकल निविदा की स्थिति निर्मित हुई है।

अतः निविदा प्रकोष्ठ कार्यालय प्रमुख अभियंता जल संसाधन विभाग सेक्टर 19 शिवनाथ भवन अटल नगर नवा रायपुर के पत्र पृ. क्र. 4264213/निविदा प्रकोष्ठ / 2026 / 5125 (टी.सी.) नवा रायपुर दिनांक 07.07.2026 के परिपालन में उक्त प्रथम आमंत्रित ऑनलाईन निविदा को एतद् द्वारा निरस्त किया जाता है।

(श्रीमती तरन्नमु खानम्)
कार्यपालन अभियंता जल संसाधन संभाग
सूरजपुर (छ.ग.)
कृते/- मुख्य अभियंता हसदेव गंगा
कछार जल संसाधन
विभान,अंबिकापुर (छ0ग0)

जी0नं0 -262703103/5

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER, (E&M) DIVISION PUBLIC HEALTH ENGG.DEPTT. AMBIKAPUR (C.G.)

No./1012/2026-27/TS/E.E./E&M/Dn./P.H.E.D./Ambikapur Date 01.09.2026

Notice Inviting Tender NIT No. 02/2026-27

Sealed tenders are invited on behalf of Governor of Chhattisgarh on Form "C" for Supply work carried out as mentioned below from the manufacturer or their authorized dealers having e&perience to do such type of work

S.No.	Brief Description of Materials	Qty
01	Supply of stainless Steel Pipe Suitable for hydrofracture unit having specification of 3.0 Mtr (10 Feet) long xw mm dia and Minimum of 3 mm thickness, made out of SS 304 grade Seamless pipe with one end threaded and w® nos other end socketed, is to be provided for hydrofracture work in 125/150 mm dia deep tubewell. SS pipe should be operate at 140 bar high pressure hydraulic fracturing work.	

Note:- 01. Cost of Tender From -|750-00
02. Estimated Cost (In Rs.):-273000.00
03. Earnest Money (In Rs.) :- 2800.00
04. Bid Submission Date :- 01/09/2026 to 15/09/2026
05 Terms of tender and details of material can be seen in the office during office hours.
06. Conditional tender will not be accepted.

E&ecutive Engineer(E/M) Dn.
Public Health Engineering
Department Ambikapur (C.G.)

G No.26270307/1

न्यायालय नजूल अधिकारी अम्बिकापुर,जिला-सरगुजा,

रा0प्र0क्र0/..../अ-20(3)/2025-26

ईश्तहार

एतद् द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदकगण सुधा अग्रवाल पति सुधीर अग्रवाल, आदित्य अग्रवाल आ0 सुधीर अग्रवाल, आकाश अग्रवाल आ सुधीर अग्रवाल, निवासी जेल रोड़ सूरज एजेन्सीज गेंहू बाड़ी दर्रीपारा, अम्बिकापुर, तहसील अम्बिकापुर, जिला- सरगुजा छ0ग0 के द्वारा शीट नम्बर-11 मोहल्ला-लखनपुर रोड़, नगर अम्बिकापुर स्थित नजूल प्लाट नम्बर 4531/25, 4531/20, 4531/19, 4531/22 रकबा $0.01^{1/2}$, $0.03^{1/2}$ एकड़, 480 वर्गफीट, 0.02 एकड़ भूमि को बैक में बंधक रखने की अनापत्ति प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्र मय मेन्टनेस खसरा की प्रति सहित पेश किया गया है।

उक्त भू-खण्ड के संबंध में यदि किसी व्यक्ति अथवा संस्था को कोई दावा अथवा आपत्ति हो तो अपना लिखित दावा-आपत्ति स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से दिनांक 08.09.2026 तक इस न्यायालय प्रस्तुत कर सकते है। नियत समय-सीमा के बाद प्राप्त दावा-आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

आज दिनांक :-25/08/2026 को मेरे हस्ताक्षर एंव न्यायालीन पदमुद्रा जारी ।

सील

नजूल अधिकारी
,अंबिकापुर

झीरम घाटी हमले में NIA का बड़ा फैसला,10 आरोपी दोषी करार

13 साल बाद आया फैसला,29 लोगों की गई थी जान,101 गवाहों के हुए बयान...

रायपुर,05 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित झीरम घाटी में नक्सली हमले मामले में कांग्रेस नेताओं की हत्या के मामले में एनआईए कोर्ट ने सभी 10 आरोपियों को गुनहगार माना है। दोषी पाए गए आरोपियों में ज्योती उर्फ प्रमिला कोड़ियम (महिला आरोपी),बंजामी उर्फ सन्ना,अयाता मरकाम,मुक्का मंडावी, मड़कामी,देवा कवासी,कोसा चैतू उर्फ मुन्ना, कोसा कवासी,महादेव नाग,सुमित्रा शामिल हैं। कुल 11 के खिलाफ मामला दर्ज था,जिसमें से एक की मृत्यु हो चुकी है। आरोपियों को सजा सुनाने के लिए 16 सितंबर की तारीख तय की गई है। अभियोजन पक्ष ने कोर्ट में 101 गवाहों के बयान और दस्तावेज पेश किए थे। बता दें कि,10 अगस्त को मामले में अंतिम बहस हुई थी। इसके बाद कोर्ट ने फैसला सुरक्षित रख लिया था। अभियोजन पक्ष ने सबूतों के आधार पर आरोप साबित होने की दलील दी, जबकि बचाव पक्ष ने आरोपों को चुनौती दी है। दरअसल, 2013 के आखिर में छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव होने थे। रमन सिंह मुख्यमंत्री थे। 10 साल से विपक्ष में बैठी कांग्रेस जीत के लिए जोर लगा रही थी। पार्टी पूरे राज्य में परिवर्तन यात्रा शुरू करने वाली थी। 25 मई को सुकमा में परिवर्तन रैली की गई। रैली के बाद कांग्रेस नेताओं का काफिला सुकमा से जगदलपुर जा रहा था। इसमें करीब 25 गाड़ियां थीं।

झीरम हमला राजनीतिक षड्यंत्र और सुपारी किलिंग थी : बैज

इस फैसले पर पीसीसी चीफ दीपक बैज ने कहा कि बस्तर जानता है कि कांग्रेस नेताओं और जवानों की हत्या राजनीतिक षड्यंत्र और सुपारी किलिंग थी। सत्ता हासिल करने के लिए हत्याएं कराई गई थीं। जिन 10 लोगों को आरोपी बनाया गया,वे बड़े नक्सली नहीं थे। हमले की प्लानिंग करने वाले बड़े नक्सली लीडरों पर कार्रवाई नहीं हुई। वहीं महेंद्र कर्मा की बेटी तूलिका कर्मा ने कहा कि अभी भाजपा की सरकार है। घटना के समय भी भाजपा की सरकार थी। एनआईए भी उन्हीं के इशारों पर चला। घटना के वक्त जो लोग मौजूद थे उन्हें ही पूछताछ के लिए बुलाया ही नहीं गया। न्याय के नाम पर खानापूर्ति कर दी गई। नंदकुमार पटेल के बेटे और विधायक उमेश पटेल ने कहा कि 10 आरोपियों को दोषी करार दिया गया है। कोर्ट के फैसले का सम्मान करते हैं। लेकिन षड्यंत्रों की जांच को लेकर मांग की गई थी। इसे लेकर आगे सुप्रीम कोर्ट जाएंगे।

इन गाड़ियों में 200 नेता-कार्यकर्ता थे। सबसे आगे कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नंदकुमार पटेल, उनके बेटे दिनेश पटेल और कवासी लखमा थे। साथ ही उनके पीछे महेंद्र कर्मा और मलकीत सिंह गैदू की गाड़ी थी। उनके पीछे बस्तर के कांग्रेस प्रभारी उदय मुदलियार चल रहे थे। यानी छत्तीसगढ़ कांग्रेस की पूरी टॉप लीडरशिप इस काफिले में थी। दोपहर करीब 3:40 बजे काफिला झीरम घाटी में पहुंचा। यहीं नक्सलियों ने पेड़ गिराकर रास्ता बंद कर दिया। गाड़ियां रुकते ही 200 से ज्यादा नक्सलियों ने फायरिंग शुरू कर दी। हमले में नंदकुमार पटेल और उनके बेटे दिनेश की मौके पर ही मौत हो गई। करीब डेढ़ घंटे तक फायरिंग होती रही।

महेंद्र कर्मा को नक्सलियों ने मारी थी 100 गोलियां : नक्सली पहाड़ों से उतरकर नीचे आए और एक-एक गाड़ी चेक की। एक गाड़ी में उन्हें सलवा जुडूम आंदोलन शुरू करने वाले महेंद्र कर्मा मिल गए। आंदोलन की वजह से नक्सली महेंद्र कर्मा को दुश्मन समझते थे। उन्होंने बेरहमी से महेंद्र कर्मा की हत्या कर दी। उन्हें करीब 100 गोलियां मारी गईं।

चश्मदीदों के मुताबिक, नक्सलियों ने कुछ नेताओं को नाम लेकर पहचाना और उन्हें गोली मारी। हमला पूरी योजना के साथ किया गया। नक्सलियों ने जगह का चुनाव, बम लगाने और भागने तक की पूरी तैयारी कर रखी थी। खुफिया एजेंसियों को हमले की कोई भनक नहीं थी।

एनआईए ने लीपापोती का काम किया : भूपेश

पूर्व सीएम भूपेश बघेल ने कहा कि कोर्ट के फैसले का सम्मान करते हैं। लेकिन एनआईए ने जिस प्रकार से जांच की,उसमें कोई बड़े नक्सली नेता नहीं थे। उनको बचाया गया, जबकि एफआईआर में उनके नाम थे। दूसरी बात, इसमें षड्यंत्रों की जांच नहीं की गई। तीसरी बात,इतनी जघन्य घटना घटी,किसी अधिकारी की जिम्मेदारी तय नहीं की गई। एनआईए ने लीपापोती का काम किया। इसलिए हमने एसआईटी का गठन किया। एनआईए ने उसे लोअर कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक चुनौती दी,जिसमें हमें हर जगह सफलता मिली। दुर्भाग्य की बात रही कि हमारी सरकार चली गई।

साजिश करने वाले खुलेआम घूम रहे : प्रत्यक्षदर्शी

झीरम हमले के प्रत्यक्षदर्शी और आरडीए के पूर्व उपाध्यक्ष शिव सिंह ठाकुर ने कहा कि झीरम के पीड़ितों के साथ न्याय नहीं हुआ है। हमले के पीछे कौन थे? उनका सच बाहर आना चाहिए। जिन्होंने साजिश की वो खुले आम घूम रहे हैं। बता दें कि शिव सिंह ठाकुर को हमले के दौरान पीठ पर गोली लगी थी। कांग्रेस महामंत्री ने कहा कि हमारी रैली को सुरक्षा नहीं दी गई। सुकमा में सभा को सुरक्षा नहीं दी गई। शुरू से इस पर संशय रहा है। हमे न्याय नहीं मिला, आगे कानून के एक्सपर्ट से बात करके कोर्ट जाएंगे।

रायपुर में गजब खेल! बैंक में जमा चेक हुआ गायब, फिर फर्जी दस्तावेज से निकले 4.40 लाख

रायपुर,05 अगस्त 2026। रायपुर में बैंकिंग दस्तावेजों से छेड़छाड़ कर चेक से पैसे निकालने का मामला सामने आया है। तात्यापारा निवासी आनंद कुसरे ने कोतवाली थाने में शिकायत देकर आरोप लगाया है कि, उनके नाम जारी 4.40 लाख रुपए का अकाउंट पेयी चेक बैंक में जमा करने के बाद गायब हो गया। इसके बाद चेक में कथित कुटरचना कर और फर्जी आधार कार्ड का इस्तेमाल करते हुए किसी अज्ञात व्यक्ति ने भारतीय स्टेट बैंक की संतोषी नगर शाखा से पूरी रकम कैश निकाल ली। शिकायत के मुताबिक आनंद कुसरे ने अपनी संपत्ति के विक्रय का सौदा सोनम वर्मा के साथ किया था। रजिस्ट्री से पहले सोनम ने 14 जुलाई 2026 की तारीख वाला चेक नंबर 669171, 4 लाख 40 हजार रुपए का अकाउंट पेयी चेक आनंद के नाम जारी किया था। आनंद ने यह चेक 15 जुलाई को अपने बैंक ऑफ इंडिया, तात्यापारा शाखा के खाते में संग्रहण के लिए जमा किया। 16 जुलाई को आनंद ने बैंक से चेक की स्थिति पूछी, लेकिन रकम खाते में नहीं आई थी। अगले दिन बैंक कर्मचारियों ने उन्हें बताया कि चेक गुम हो गया है और फिलहाल सिर्फ जमा पर्ची उपलब्ध है। 20 जुलाई को बैंक पहुंचने पर उन्हें जानकारी मिली कि चेक की पूरी राशि पहले ही एसबीआई की संतोषी नगर शाखा से नकद निकाली जा चुकी है।

एनटीपीसी कोरबा में बड़ा तकनीकी हादसा...

2600 मेगावाट का प्लांट ठप,एक साथ ट्रिप हुईं 7 यूनिट,सात राज्यों में गहरा सकता है बिजली संकट

कोरबा,05 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ के कोरबा स्थित एनटीपीसी पावर प्लांट में बड़ा तकनीकी हादसा सामने आया। पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड की तकनीकी टीम द्वारा सर्किट ब्रेकर की नियमित टेस्टिंग के दौरान अचानक इलेक्ट्रिकल फॉल्ट हो गया। इसके बाद संयंत्र की सभी 7 यूनिट एक साथ ट्रिप हो गईं। 2600 मेगावाट क्षमता वाले इस बड़े पावर प्लांट की सभी इकाइयों के अचानक बंद होने से बिजली उत्पादन पूरी तरह प्रभावित हुआ। घटना के बाद एनटीपीसी के अधिकारी और तकनीकी विशेषज्ञ तत्काल सक्रिय हो गए और फॉल्ट की जांच के साथ यूनिटों को दोबारा शुरू करने का काम शुरू किया गया। मिली जानकारी के अनुसार, शुक्रवार शाम PGCIL की तकनीकी टीम स्विच यार्ड में बे के सर्किट ब्रेकर की रूटीन टेस्टिंग कर रही थी। इसी दौरान अचानक गंभीर इलेक्ट्रिकल फॉल्ट हुआ। फॉल्ट का पता चलते ही सुरक्षा प्रणाली सक्रिय हो गई। सर्किट ब्रेकर ऑटोमैटिक प्रोटेक्शन मोड में चले गए और सुरक्षा रिले से ट्रिप कमांड मिलने के बाद सिस्टम का संपर्क डिस्कनेक्ट हो गया। इसके चलते संयंत्र की एक के बाद एक सभी सातों इकाइयां बंद हो गईं। एनटीपीसी कोरबा संयंत्र में कुल सात इकाइयां संचालित हैं। इनमें 500-500 मेगावाट की चार यूनिट और 200-200 मेगावाट की तीन यूनिट शामिल हैं। प्लांट की कुल उत्पादन क्षमता 2600 मेगावाट है। सभी यूनिट के एक साथ ट्रिप होने से कुछ समय के लिए संयंत्र का बिजली उत्पादन शून्य हो गया। फॉल्ट की वजह पता लगाने के साथ-साथ यूनिटों को सुरक्षित तरीके से दोबारा सिंक्रनाइज करने की प्रक्रिया शुरू की गई।

राज्य सेवा परीक्षा-2025 पर छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग ने तोड़ी चुप्पी,पुनर्मूल्यांकन की मांग खारिज

रायपुर,05 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग ने राज्य सेवा परीक्षा-2025 के प्रश्नपत्रों के पुनर्मूल्यांकन की मांग पर बड़ी सफाई दी है। सोशल मीडिया पर चल रही चर्चाओं को आयोग ने भ्रामक बताया है। आयोग ने कहा कि परीक्षा प्रक्रिया विज्ञापन में जारी विज्ञापन के अनुसार ही चल रही है। दरअसल हर प्रश्नपत्र में न्यूनतम 33% अंक लाना अनिवार्य है। कई अभ्यर्थी यह अंक नहीं ला पाए, इसलिए परिणाम प्रभावित हुआ और 795 की जगह केवल 608 अभ्यर्थी ही इंटरव्यू के लिए चयनित हुए। आयोग ने विज्ञापन की कंडिका 11(1) का हवाला देते हुए कहा कि आयोजित परीक्षाओं में पुनर्मूल्यांकन तथा पुनर्गणना का कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए किसी प्रश्न-पत्र के संबंध में पुनर्मूल्यांकन अथवा पुनर्गणना की प्रक्रिया संभव नहीं है। आयोग ने कहा कि सभी लिखित परीक्षाओं का मूल्यांकन कार्य अत्यंत गोपनीयता एवं निष्पक्षता के साथ विषय-विशेषज्ञों के माध्यम से कराया जाता है। राज्य सेवा मुख्य परीक्षा में प्रत्येक उत्तर पुस्तिका को उत्तर पुस्तिका क्रमांक से अलग करते हुए विषय-विशेषज्ञों से मूल्यांकन कराया जाता है। पूरी प्रक्रिया सुरक्षित और निर्धारित नियमों एवं निर्देशों के तहत संचालित होती है। चयन परिणाम के बाद प्रारंभिक-मुख्य के अंक, मेरिट सूची और कट-ऑफ वेबसाइट पर आएगी।

शिक्षक बनेंगे रायपुर समेत प्रदेशभर के स्कूली बच्चें! दादा-दादी को देंगे अक्षर ज्ञान,बदले में मिलेंगे बोनस अंक!

रायपुर,05 अगस्त 2026। रायपुर में साक्षरता को जन-जन तक पहुंचाने के लिए बच्चों को एक खास जिम्मेदारी दी जा रही है। स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अब अपने घर के बुजुर्गों और आसपास के निरक्षर लोगों को पढ़ना-लिखना सिखाने में मदद करेंगे। इस पहल का उद्देश्य शिक्षा को स्कूल की कक्षाओं से निकालकर सीधे परिवार और समाज तक पहुंचाना है। अभियान के तहत विद्यार्थियों को अपने दादा-दादी सहित परिवार के ऐसे सदस्यों को पढ़ाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है, जो अभी तक पढ़ना-लिखना नहीं सीख पाए हैं। बच्चे रोजाना करीब 15 मिनट का समय देकर उन्हें अक्षर पहचानने, पढ़ने और लिखने की बुनियादी जानकारी देंगे। यह पहल बच्चों और बुजुर्गों के बीच सीखने का एक नया रिश्ता भी तैयार करेगी। जहां बच्चे शिक्षक की भूमिका निभाएंगे और बुजुर्ग नई उम्र में शिक्षा की शुरुआत करेंगे।

10 लोगों को साक्षर बनाने पर मिल सकता है बड़ा प्रोत्साहन : साक्षरता अभियान में बेहतर योगदान देने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने की भी व्यवस्था की गई है। जानकारी के मुताबिक, जो विद्यार्थी 10 निरक्षर लोगों को साक्षर बनाने में योगदान देंगे, उन्हें बोर्ड परीक्षा में 10 बोनस अंक का लाभ मिल सकता है। इस व्यवस्था का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को अंक देना नहीं, बल्कि उन्हें सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ना भी है। बच्चे जितने अधिक लोगों तक शिक्षा पहुंचाएंगे, साक्षरता अभियान उतना ही व्यापक बन सकेगा।

1 से 15 सितंबर तक चल रहा साक्षरता पखवाड़ा : प्रदेश में 1 सितंबर से 15 सितंबर 2026 तक साक्षरता पखवाड़ा मनाया जा रहा है। इस दौरान स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से लोगों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक किया जा रहा है। अभियान में ऐसे लोगों की पहचान करने पर जोर दिया जा रहा है, जो पढ़ने और लिखने से अभी तक नहीं जुड़े हैं। उन्हें बुनियादी शिक्षा देकर मुख्यधारा से जोड़ने की कोशिश की जा रही है।

बच्चे बनेंगे घर के छोटे शिक्षक : इस अभियान की सबसे दिलचस्प बात यह है कि स्कूली बच्चे अब अपने घरों में शिक्षक की भूमिका निभाएंगे। वे अपने दादा-दादी या अन्य बुजुर्गों को किताब पढ़ने, अक्षर लिखने और सामान्य शब्दों को समझने में मदद करेंगे। इससे बच्चों में जिम्मेदारी की भावना विकसित होगी। जबकि बुजुर्गों को भी शिक्षा हासिल करने के लिए एक सहज और पारिवारिक माहौल मिलेगा।

छत्तीसगढ़ में फिर लौटा कोरोना

रायपुर-राजनांदगांव में मिले संक्रमित...स्वास्थ्य विभाग अलर्ट

रायपुर,05 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ में एक बार फिर कोरोना संक्रमण के मामले सामने आने से स्वास्थ्य विभाग सतर्क हो गया है। प्रदेश के रायपुर और राजनांदगांव जिले में एक-एक कोरोना संक्रमित मरीज की पहचान हुई है। स्वाइन फ्लू के बढ़ते मामलों के बीच कोविड संक्रमण की वापसी ने स्वास्थ्य विभाग की चिंता बढ़ा दी है। जानकारी के मुताबिक,रायपुर में मिले संक्रमित मरीज का इलाज फिलहाल होम आइसोलेशन में चल रहा है, जबकि राजनांदगांव में सामने आए मरीज को अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती कराया गया है। दोनों मरीजों की स्वास्थ्य स्थिति पर स्वास्थ्य विभाग लगातार निगरानी रख रहा है। कोरोना संक्रमण की पुष्टि के बाद स्वास्थ्य विभाग ने दोनों मामलों में आवश्यक निगरानी और कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग शुरू कर दी है। संक्रमित मरीजों के संपर्क में आए लोगों की पहचान की जा रही है। वहीं, मरीजों के परिजनों के सैंपल भी जांच के लिए भेजे गए हैं। रिपोर्ट आने के बाद जरूरत के अनुसार आगे की कार्रवाई की जाएगी। स्वास्थ्य विभाग की टीमें दोनों जिलों में स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं। अधिकारियों की ओर से संक्रमण को लेकर जरूरी सावधानी बरतने और लक्षण दिखाई देने पर जांच कराने की अपील की गई है।

निष्कासित पूर्व महामंत्री पर एक और एफआईआर दर्ज

बलौदाबाजार,05 अगस्त 2026। छत्तीसगढ़ के बलौदाबाजार में फर्जी ट्रांसफर आदेश मामले में जेल में बंद भाजपा से निष्कासित पूर्व महामंत्री कृष्णा अवस्थी और उनके बेटे प्रणव अवस्थी की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दोनों पर अब जिला अस्पताल में वार्ड बॉय की नौकरी दिलाने के नाम पर छह लोगों से कुल 6 लाख रुपए लेने का आरोप लगा है। शिकायत मिलने के बाद सिटी कोतवाली पुलिस ने मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायतकर्ताओं ने कथित लेनदेन

से जुड़े वीडियो और अन्य दस्तावेज भी पुलिस को सौंपे हैं। पुलिस को दी गई शिकायत ग्राम ओड़ान के पूर्व सरपंच जीवन लाल कमल ने की है। शिकायत के मुताबिक, गांव के ही भाजपा कार्यकर्ता नाथूराम वर्मा के माध्यम से उनकी मुलाकात कृष्णा अवस्थी से हुई थी। आरोप है कि कृष्णा अवस्थी ने जिला अस्पताल में वार्ड बॉय के छह पदों पर युवकों की नौकरी लगवाने का भरोसा दिलाया था। इसके बदले प्रत्येक उम्मीदवार से एक-एक लाख रुपए लेने की बात कही गई। शिकायत में आरोप लगाया गया है कि पहली बार 14 सितंबर 2025 को कृष्णा अवस्थी ने कथित तौर पर 3 लाख रुपए लिए। इसके बाद 14 फरवरी 2026 को बलौदाबाजार स्थित भाजपा कार्यालय में बुलाकर 3 लाख रुपए और लिए गए। इस तरह छह उम्मीदवारों से कुल 6 लाख रुपए दिए जाने का दावा किया गया है। शिकायतकर्ताओं के अनुसार, कृष्णा अवस्थी के पैसे लेते हुए वीडियो भी सामने आया है, जिसे पुलिस को सौंपा गया है। शिकायत के अनुसार, पैसे लेने के बाद कृष्णा अवस्थी ने नौकरी के इच्छुक युवकों को अपने बेटे प्रणव अवस्थी के पास भेजा। आरोप है कि प्रणव कलेक्ट्रेट परिसर स्थित कैंटीन में युवकों से मिला।

स्कूल में मटका फोड़ कार्यक्रम के दौरान छात्र को लगा करंट,मौत

मुंगेली,05 अगस्त 2026। जिले के बरेला नगर पंचायत स्थित माइंड्स आई इंटरनेशनल स्कूल में मटका फोड़ कार्यक्रम के दौरान बड़ा हादसा हो गया। सातवीं कक्षा का छात्र वैभव जायसवाल स्कूल परिसर से गुजर रहे हाईटेंशन विद्युत तार की चपेट में आकर गंभीर रूप से झुलस गया। हादसे में छात्र के चेहरे पर गंभीर चोटें आई हैं। प्राथमिक उपचार के बाद उसे बेहतर इलाज के लिए बिलासपुर रेफर किया गया है, जहां निजी अस्पताल में उसका उपचार जारी है। छात्र की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना 3 सितंबर को दोपहर करीब 12 बजे की बताई जा रही है। स्कूल परिसर में मटका फोड़ कार्यक्रम की तैयारी चल रही थी और विद्यार्थी भी कार्यक्रम के लिए मौजूद थे। इसी दौरान वैभव हाईटेंशन विद्युत तार की चपेट में आ गया। करंट लगते ही छात्र गंभीर रूप से झुलस गया। अचानक हुए हादसे के बाद स्कूल परिसर में अफरा-तफरी मच गई। घायल छात्र को तत्काल उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया। घटना के बाद छात्र के परिजनों ने स्कूल प्रबंधन की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल उठाए हैं। परिजनों का आरोप है कि स्कूल परिसर में हाईटेंशन विद्युत तार जैसी संवेदनशील और खतरनाक स्थिति होने के बावजूद कार्यक्रम आयोजित करते समय विद्यार्थियों की सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं किए गए थे।

प्रदेश के 63 उत्कृष्ट शिक्षक राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित,चार शिक्षकों को मिला राज्य शिक्षक सम्मान स्मृति पुरस्कार

शिक्षक नई पीढ़ी के निर्माता,विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण में शिक्षा की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण : सीएम साय

एआई के युग में शिक्षक बनें विद्यार्थियों के मार्गदर्शक,तकनीक के विवेकपूर्ण उपयोग की दें सीख : राज्यपाल डेका

रायपुर,05 सितंबर 2026। राज्यपाल रमेन डेका और मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शिक्षक दिवस के अवसर पर आज लोकभवन के छत्तीसगढ़ मण्डपम् में आयोजित राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मान समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं को सम्मानित कर उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। समारोह में वर्ष 2025-26 के लिए प्रदेश के 63 उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्यपाल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। चार उत्कृष्ट शिक्षकों को राज्य शिक्षक सम्मान स्मृति पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री गजेन्द्र यादव ने वर्ष 2026-27 के राज्य शिक्षक सम्मान के लिए चयनित 64 शिक्षकों के नामों की घोषणा भी की। समारोह के मुख्य अतिथि राज्यपाल रमेन डेका ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि तेजी से बदलती दुनिया में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका भी व्यापक हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के इस दौर में शिक्षकों

और विद्यार्थियों का नई तकनीकों से परिचित होना आवश्यक है,लेकिन उससे भी अधिक जरूरी तकनीक का विवेकपूर्ण,जिम्मेदार और मानवीय मूल्यों के अनुरूप उपयोग है। उन्होंने कहा कि एआई हमारा सहायक बने, हमारा नियंत्रक नहीं। शिक्षक विद्यार्थियों को तकनीक का उपयोग ज्ञान अर्जित करने, नवाचार करने और अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए प्रेरित करें। राज्यपाल डेका ने कहा कि आज गूगल और डिजिटल तकनीक के माध्यम से हमारे पास सूचनाओं का विशाल संसार उपलब्ध है। इसके बावजूद हमें यह ध्यान रखना होगा कि तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता स्वतंत्र चिंतन और बौद्धिक विकास को प्रभावित न करे। दुनिया के अनेक देशों में विद्यार्थियों द्वारा स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के उपयोग को लेकर गंभीर विचार-विमर्श हो रहा है। तकनीक हमें जानकारी उपलब्ध करा सकती है,लेकिन संस्कार, संवेदना, अनुशासन,प्रेरणा और जीवन की सही दिशा गुरु से ही मिलती है। इसलिए बदलते समय में शिक्षक की भूमिका पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने देश की शिक्षा व्यवस्था को अधिक व्यावहारिक,कौशल आधारित, बहुभाषी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार तैयार किया है। आने वाले समय में शिक्षा के स्वरूप में व्यापक बदलाव देखने को मिलेंगे। ऐसे में शिक्षकों को निरंतर अपने ज्ञान और कौशल को अद्यतन करना होगा। साथ ही विद्यार्थियों की रुचि और प्रतिभा को पहचानकर उन्हें सही विषय और करियर चुनने में मार्गदर्शन देना होगा। विद्यार्थियों की काउंसलिंग भी शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका का हिस्सा है। राज्यपाल ने कहा कि शिक्षण केवल एक नौकरी नहीं, बल्कि एक महान और गरिमामय दायित्व है। शिक्षक अपने ज्ञान के साथ-साथ अपने आचरण से भी विद्यार्थियों को शिक्षित करते हैं। बच्चे अपने शिक्षकों को आदर्श के रूप में देखते हैं, इसलिए शिक्षकों को अपने दायित्वों का पूरी निष्ठा, संवेदनशीलता और समर्पण के साथ निर्वहन करना चाहिए। प्रत्येक विद्यार्थी कैसे आगे बढ़े, उसकी प्रतिभा कैसे निखरे और उसका भविष्य कैसे बेहतर बने, यह शिक्षक की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। अपने विद्यार्थी जीवन की स्मृतियां साझा करते हुए राज्यपाल डेका ने कहा कि शिक्षक दिवस उन्हें प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक की अपनी यात्रा की याद दिलाता है। पहले शिक्षक और विद्यार्थी के बीच आदर, आत्मीयता और विश्वास का अत्यंत गहरा संबंध होता था। सीमित संसाधनों के बावजूद शिक्षक पूरी सेवा भावना और समर्पण के साथ विद्यार्थियों का भविष्य संवारते थे। यही समर्पण और आत्मीयता शिक्षक-विद्यार्थी संबंध की वास्तविक शक्ति है। उन्होंने कहा कि शिक्षक और विद्यार्थी का संबंध केवल कक्षा तक सीमित नहीं होता। शिक्षक विद्यार्थी के व्यक्तित्व,सोच और भविष्य निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक अपने विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता और विशेष प्रतिभा को पहचानें तथा उन्हें जीवन में सही दिशा चुनने के लिए प्रेरित करें।

राज्यपाल डेका ने शासकीय सेवा में स्थानांतरण को सामान्य प्रशासनिक प्रक्रिया बताते हुए कहा कि जहां भी दायित्व मिले,उसे सहजता से स्वीकार कर पूरी जिम्मेदारी और समर्पण के साथ कार्य करना चाहिए। उन्होंने सम्मानित सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को बधाई देते हुए विश्वास व्यक्त किया कि प्रदेश के शिक्षक अपने ज्ञान,अनुभव और समर्पण से छत्तीसगढ़ की नई पीढ़ी को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाएंगे। समारोह की अध्यक्षता करते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने शिक्षक दिवस पर सभी गुरुजनों को शुभकामनाएं दीं और राज्य स्तरीय सम्मान प्राप्त करने वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं को बधाई दी।

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह* (पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050,डॉक रजिस्टर्ड क्र.:-13/सरगुजा/डीएन/2026-2028-मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)